CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

6.2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी कथा साहित्य के विकास

डॉ० विवेकी राय

प्रकाशक

भोजपुरी अकादमी

पटना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशक
भोजपुरी अकादमी
पटना

© सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन
वि० सं० २०३९, सन् १९८२, ई०
दाम - ७.०० रोपेया

मुद्रक
राजकमल प्रेस
मोसल्लहपुर हाट
पटना ६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहिल कथ

'भोजपुरी कथा साहित्य के विकास' नाँव के ई पुस्तक कहानी-जगत के नामी कालाकार डॉ० विवेकी राय के भासन हऽ,जे भोजपुरी अकादमी के तिसरका सलाना उत्सव (2 मई 1982) के बेरा; विद्वानन के मंडली के बीच, पढ़ल गइल रहे। एह उत्सो के सभापति रहन, दिल्ली विश्वविद्यालय के भासा-बइग्यानिक डॉ० भोलानाथ तिवारी। उत्सो के भासनमाला कार्यक्रम के अन्दर तीन विद्वानन के भासन भइल रहे—कलकत्ता विश्वविद्यालय के डॉ० दयानन्द श्रीवास्तव जी 'भोजपुरी भासा के बनावट आ इतिहास' विसे पर भासन देले रहन। एकरे साथे पटना-विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डॉ० विश्वनाथ प्रसाद वर्मा 'भोजपुरी के साँस्कृतिक इतिहास' पर आपन भासन पढ़ने रहन। तिसरका भासन इहे रहे, जेकरा के अकादमी किताब के रूप में प्रकासित कइ रहल बाइ।

हिन्दी आ भोजपुरी के दुनियाँ में कहानी आ उपन्यास कला के मरम समझे-बूझेवाला डॉ० विवेकी राय जी कहानी-कला के पंडित मानल गइल बानीं, एह से ई पुस्तक मान आ परिमान—दूनो नजर से आदर आ सनमान के भाजन बनी, अइसन हमरा पूरा भरोसा बा। एह में अबहीं तक ले भोजपुरी कहानी के छेत्र में जेकरा-जेकरा जरिए जवन-जवन काम भइल बा, ओह सभन के डॉ० राय समेटत-लपेटत अपना विचारक ढंग से नजर डालत आ अपना मत के मीठ बनावत आ समुझावत इतिहास बतावत गइल बानीं। आलोचक के वारीक नजर ऊपर उठत-बढ़त भोजपुरी कहानी-कला पर आ करमो-करम ओकरा विकास पर सर्चलाइट फेंकत आ राह सुझावत आगे बढ़त बिया। एह से ई पुस्तक खुदे एगो भोजपुरी कथा-विकास के उपन्यास अइसन रोचक बन गइल बा। पाठक लोग के कथा विसे आ कथ के नजरि से एह में उपन्यास से तनिको कम रस नां मिली, काहे कि डॉ० राय बिसय के साथे अपना बिचार-कथ के बड़ा कसीदादार, निरमल आ रसदार बना देले बाड़न।

कथन के बिसय पर डॉ० राय के विचार आ नजर जतना गाँव-गँवई के ओर हमदरदी देखावत बा, ओतना भोजपुरी भासा पर नइखे दरसावत। पुस्तक के भासा में भोजपुरी माँटी में जनमल-पनपल बानी के बोल आ सुर जादेतर हिन्दी के प्राध्यापक के रूप में आइल बा। जवना से डॉ० राय के भोजपुरी भासा पर अतना दया जरूर झलकत बा, जतना नेता लोग के गँवई के दसा पर।

मगर ई पुस्तक भोजपुरी कहानी के आलोचना आ बिकास के इतिहास बतावे में निहिचित रूप से एगो तरजुई के डंडी साबित होई, जवना पर आगे के आलोचक लोग तउलल जइहें।

हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय'
निदेशक

१२/७/८२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दू शब्द

कवनो ना जरूरत भइलो पर छोटी-मुटी किताब के भूमिकावाला दू शब्द आखिर हमारा लिखहीं के परि गइल। काहे कि पहिल त ई भाषण का रूप मे भोजपुरी-प्रेमी लोगन का सोझा थाइल रहे आ अब ई पुस्तक के रूप ले रहल बा। भोजपुरी अकादमी पटना का तिसरका वार्षिकोत्सव समारोह में 2 मई सन् 1982 के एह भाषण के उपयोग भइल रहे। बहुत जल्दी में तइयार भइला का वजह से एह में कवनो कमी नइखे, बाकी नेही लोग एकर जइसन स्वागत कइलन, ओकें देखत हमरा मेहनतिं सफल हो गइल। भाषण का शिल्प में तइयार कइला का वजह से अब हमार एह बात खातिर क्षमा माँगे के बा कि कतहीं-कतहीं गंभीर इतिहास आ समीक्षा लाइनि छूटि गइल लउकी। उमेदि बा कि पाठक लोग हमरा मूल भावे पर धेयान दिहन। अइसनो बहुत भइल बा कि केतने लेखक लोगन के नाँव आ काम के चरचा छूटि गइल बा। डॉ० स्वर्ण किरण, श्री रजनीकान्त राकेश······ वगैरह के भोजपुरी कथा-साहित्य में मजिगर योगदान बा आ ऊ चर्चा में नइखे आइल। एक बाति अउर। हमार दृष्टि भोजपुरी-कथा-साहित्य का इतिहास पर ओतना ना रहलि, जेतना ओकरा प्रवृत्तियन का विकास पर रहे। अब एह पुस्तक का बाद तेजी से एह ओर ध्यान जाये के चाहीं कि भोजपुरी कथा-साहित्य के विधिवत इतिहासे लिखाउ। कवनो भाषा का साहित्य का बढ़ंती का साथे-साथ ओकरा समीक्षात्मक साहित्य के उकास-विकास जरूरी होला। भोजपुरी में जवना गति से साहित्य लिखा रहल बा, ओह तेजी से ओमे समीक्षात्मक सृजन नइखे हो रहल। एकरा वजह मे ओमें बहुत हलकापन लउकत बा। अब ई एगो ऐतिहासिक मोका बा कि समीक्षात्मक कोण से एह भाषा के साहित्यकार लोग ओ के समृद्ध करो कि गुरुता आओ। प्रसन्नता के बाति बा कि भोजपुरी अकादमी एह दिशा में सार्थक प्रयत्न कइ रहलि बा। हमरा अइसन व्यस्त अदिमी से ललकारि के अइसन लमहर भाषण लिखवा लिहलस। साच बात ई बा कि शास्त्री श्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी, श्री हवलदार त्रिपाठी सहृदय', श्री नगेन्द्रजी, श्री व्रजकिशोरजी आ भाई आंजनेयजी के ई स्नेह बा कि ई एगो छोटमोट काम हो गइए। एह वजह से एकर कुल्हि श्रेय एही सभ के बा। हम बहुत अभारी बानीं कि हमके एह तरह के मोका दिहल गइल। आखीर में भोजपुरी साहित्य का प्रेमी लोगन से ई निहोरा बा कि गलतियन खातिर माफी दीहल जाई। साथ-साथ सुझावो देबे में कवनो कोताही ना होखे के चाहीं। बस अउर अधिका का लिखीं ?

(डॉ०) विवेकी राय
बड़ीबाग, गाजीपुर (उत्तर प्रदेश)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी कथा साहित्य के विकास

लेखक
डॉ० विवेकी राय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी

कथा-साहित्य

के

विकास

•

आधुनिक साहित्य का सगरे विधन में कथा-कहानी सभसे बढ़ि के लोकप्रिय साबित हो गइलि बा। एकर इतिहास मनुष्य जाति का इतिहास का संगे-संगे शुरू होला। एही से कहानिन में आदिम संस्कार के वासना नीके तरे घुलल—मिलल रहेले। अब एतना फरक जरूर परि गइल बा कि जहाँ पहिले लोग कथा-कहानी के कहत-सुनत रहे उहाँ अब नवकी सभ्यता में लिखला-पढ़ला, के चलन हो गइल बा। एह बीच हजारन साल का यात्रा में कइसे-कइसे कहानी बदललि बा, ई बहुत मजेदार बाति बा। वेद, उपनिषद, पुरान, रामायन, महाभारत, बौद्ध आउर जैन साहित्य में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी मिलेले। ओह के आख्यान, उपाख्यान, रूपक, नीतिकथा, बोधकथा, चरित, जातक, आ रासक वगैरह का नाँव से जानल जाला आ एकर लमहरि परम्परा बा। एह लिखंत पढ़ंत कहानी का परम्परा का समानान्तर ऊ मौखिक परम्परा वा जवना के महतारी का दूध का संगे लेके अदिमी एह दुनिया में जनम लेला। ऊ भूत-प्रेत, दानवादूत, परी, उड़नखटोला, जादूटोना; पेड़-पौधा, सियार पाँड़े, पशु-पंछी, हँस-हँसिनि, मनिआरा साँप, बन-बीझ, मामा-नानी आ राजा-रानी के अजगुत भरल लोककथा होली स जवना में निचाट जन-जीवन भीतरे-भीतर नदी का धारि नियर बहत रहेला। ओह धारि में कतहीं कवनो राजा विकरमाजीत आ कतहीं राजा भोज अइसन लोग घाटि बन्हले बाड़न। कादम्बरी, बृहत्कथा-मंजरी, कथा—सरित्सागर, दशकुमार चरित, भोज प्रबन्ध, पंचतंत्र, हितोपदेश, सिंहासन बत्तीसी आ वैताल पचीसी से लेके किस्सा तोता मैना, सीत बसन्त, हातिमताई, चहार दरवेश, गुलावकावली, लैलामजनू आ आल्हा-- लोरकी जइसना घाटि-घाटि के पानी पीके कहानी नाँव के विधा पुष्ट भइलि वा। ईश्वर, धर्म, संस्कृति, नीति, उपदेश, बोध भा खाँटी मनोरंजन तब कथा—साहित्य के उद्देश्य रहे। कथा शुरू होखे 'एगो राजा रहलन' जइसन वाक्य से आ घूमिफिरि के जब कथा खतम होखे त ओही में से कवनो तरह के शिक्षा भा कवनो तरह के आशीर्वाद फटि परे आ कहल जाव, 'जइसे उनकर दिन फिरल······।' इहे परम्परा रहे। बाकी उन्नीसवीं शताब्दी का देवढ़ी पर चोंहपत-चोंहपत ले बोधकथा, नीतिकथा, कथा, चरित आ लोककथन के पुरान रूप-रंग आ रस-गंध अइसन झरि गइल कि ऊ एकदम से नया, टटका, कलात्मक, चुस्त हो गइल। इहे ना, ऊ जीवन का लड़ाइयन के दस्तावेज के रूप लेवे लागल। आ उन्नीसवीं शताब्दी का खतम होत-होत त सगरे दुनिया के, विशेष रूप से अपना देश के आ हिन्दी के कथा—साहित्य एकदम पुरान चोला बदलि दीहलसि।

कथा—साहिय का पुरान आ नया चोला में जमीन आसमान के फरक परि गइल। पुरान चोला में कवित्वमयता, सर्वात्मवादी भाव, मन वहलाव, अति मानवीयता, अतिभावुकता, सुधार आ उपदेशवृत्ति आ सीधा-सपाट कहनाम रहे। अब नया चोला में जीवन के खोज आ संघर्ष ढुकि के कथा—साहित्य के अइसन चुस्त, चौकन्ना आ चौकस बना दिहलसि कि कहाँ छूटि गइल पुरान कथा-कथुली के ऊ ढील-ढाल, ठक्कर पेंच, सिखावन बुझावन के गठरी बन्हले बोझ जइसन ढाँचा? नया कथा-साहित्य आसमान का ओरि ताकल छोड़िके जमीन का ओरि निहारे लागल। राजा-रानी भा झूठ के शेर-सियार के झटकारि के जीअत-जागत समाज का छाती के धड़कन के सजारे लागल। खाली मनोरंजन ना, अब ऊ कवनो मूल्य आ आदर्श खातिर जूझे लागल। बरनन से आगे बढ़ि के भीतर कासंवेदना के चित्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खड़ा करे लागल। सबसे बेशी सामाजिक भाव का प्रवेश से कथा—साहित्य बदलल। बहुत बाद में त चलि के राजनीति, मनोविज्ञान, दर्शन आ नाना प्रकार के विषयन के प्रभाव से ऊ प्रभावित भइल। अब कथा—साहित्य में कहानी आ उपन्यास दूनो के समाव हो जात बा। पहिले उपन्यास ना रहे। हालाकि बाणभट्ट के 'कादम्बरी' का ढाँचा में उपन्यास नियर कुछ गझिन बिनावट परलि बा। बाकिर संस्कृत साहित्य में त ओके कथा का संगे निबन्धो कहि दीहल गइल। संस्कृत का व्युत्पति का हिसाब से विचार कइल जाई त उपन्यास के माने होई कवनो वस्तु के सामने ठीक से रखि दीहल! बाकिर उपन्यास के प्रयोग जवन कथा—कहानी के रूप में चलल ऊ हिन्दी में संस्कृत से ना आइल। ई बंगला भाषा से आइल। अंग्रेजी का ढंग के नाबेल बंगला में उपन्यास नाँव से चले लागल आ धीरे-धीरे हिन्दी में आइल। खोजे वाला लोग एगो 'मनोहर उपन्यास' नाँव के किताबि खोजले बाड़न जवन सन् १७८१ ई० में हिन्दी में सम्पादित भइल। एह तरह से कहल जा सकेला कि हिन्दी में उपन्यास शब्द के प्रयोग भा एकर उमिरि २०० वरिस भइलि बाकिर ठीक-ठेकाना के मौलिक उपन्यास सन् १८८२ में 'परीक्षा गुरु' नाँव से लाला श्रीनिवास दास लिखलन। एही तरह से हिन्दी में पहिलकी कहानी सन् १८७० ई० में 'देवरानी जेठानी की कहानी' नाँव से गौरीदत्त जी लिखलन, अइसन खोज करेवाला लोग खोज कइके बइठवले बाड़न। कहे के मतलब ई कि हिन्दी में नया कथा—साहित्य के इतिहास कुल्हि मिला के लगभग सइ बरिस के बा। अब एह नया में आधुनिक नाँव से ई कथा—साहित्य, कहानी आ उपन्यास रूप में कई गो करवट बदलले बा।

खड़ी बोली हिन्दी आ भोजपुरी हिन्दी का कथा-साहित्य में बहुत सम्बन्ध बा। साँच त ई बा कि दूनो हिन्दी एके में नथाइल बा। जवना के हम बेवहार में हिन्दी भाषा कहत बानी ऊ आपन स्वतंत्र अस्तित्व नइखे राखत। भोजपुरी सहित बीस गो बोलियन के संघ-समूह हिन्दी कहाला। एह तरह से हिन्दी का विकास के माने भइल कुल्हि बोलियन के विकास। ब्रजभाषा के जवन विकास होई ऊहो हिन्दिये के विकास कहाई आ भोजपुरी का माटी से जवन-जवन जइसन अँखुआ फूटी ऊहो हिन्दिये के उठान कहाई। भोजपुरी का कथा-साहित्य के विकास के कहानी घूमिफिरि के हिन्दी के विकास कहानी हो जाई। दूनो के बांटि-काटि के भा आमने-सामने प्रतिस्पर्द्धी का रूप में विचार कइल भाषा का दृष्टि से गुनाह हो जाई। दुर्भाग्य से ई गुनाह राजनीतिक दबाव से आ नाना प्रकार का स्वार्थ का चक्कर में कबहीं-कबहीं हो जात बा आ सहअस्तित्व पर आँचि आवे लागति बा। भाषाई सहअस्तित्व ना रही त जिनिगी के सहअस्तित्व खटाई में परि जाई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाषा खाली बात-बेवहार के बिचौली ना होले। ऊ आदमी का जीवन के मूल जरि होले, बहुत गहिराई में गइलि जरि। भोजपुरी आ हिन्दी के विचार के मानी होई एगो विशाल देश-जाति का ओह जीवन पर विचार जवन आदिकाल का गहिराई से एकरूप उठल बा, एकरूप में पलुहल बा, फरल-फूलल बा आ बहुत दुर-दूर ले विस्तार लेले बा। एकर साहित्य नाना प्रकार का रसगंध से भरल विविधता का भीतर एकरस, एकरूप बा। ऊ रूप बा हिन्दी के। ओही हिन्दी के कथा-साहित्य से भोजपुरी-कथा साहित्य के पहिचान फूटलि बा। भोजपुरी का कथा-साहित्य के आरंभिक विकास पर स्वतन्त्र रूप से बिचार ना हो सकल एगो मजबूरी बा। अब सुविधा के बाति ई बा कि जइसे भाषा शास्त्र का दृष्टि से मैथिली भोजपुरी सहित सगरी बोलियन के चुपचाप हिन्दी मानि लीहल जाला ओइसहीं हिन्दी के सगरे आरंभिक से लेके आखिरी उठान तक वाला कथा-साहित्य का मध्य विकास के भोजपुरी कथा-साहित्य के विकास मानि लीहल जाव ! जब कतहीं कवनो बाँट-बखरा नइखे; कवो डाँड़ नइखे परल आ ओह घरी अलगाव के कवनो अझुरा नइखे त कुल्हि राज अपने बा ! अब अइसे नकशा साफ हो गइल कि भोजपुरी का कथा-साहित्य के नींव बहुत पोढ़ बा आ पोढ़ बा कि अपना संघपति का कई-कई मंजिल उठल भवन का ऊपरे-ऊपरे आपन अलग कला कुटीर तानि के झंडा फहरा देले बा ! ऊपर के नया पसार आपन-आपन आ नीचे वाला साझ। भोजपुरिया घाटा में कतहीं काहे रही ?

सन् १९४७ में आपन देश विदेशी दासता का जकड़न से अँइजा-अफना के अपना के मुक्त करा लिहलसि। चारू ओरि नया उछाह छिटाये लागल। देश के इतिहास-भूगोल बदलल त ओकरा आसमानो जमीनि में बदलाव आइल। ओकरा संगीत, साहित्य आ कला में उछाल आइल। स्वतन्त्रता के सबसे वेशी असर हिन्दी भाषा आ ओकरा साहित्य पर परल। ऊ असर एकदम लोकतांत्रिक असर का रूप में फूटल आ एक बारगी साहित्य के धारि पलटि गइलि। पलटनि-उलटनि सबसे अधिका कथा-साहित्य में उजागर भइल। एकदम कथाकार लोग गाँव आ अँचलन का ओर लवटि के लुझि परलन ! अइसन जनाइल कि स्वतन्त्रता के सगरे हर्षोल्लास आ नवोन्मेष मिलि के आंचलिक कथा-साहित्य का रूप में प्रकाशित होखे लागल। तमाम-तमाम उपेक्षित अंचल कथाकारन के आन्तरिक सम्वेदना आ रागात्मक लगाव से गमगमाये लगलन, बिहार का पूर्णिया अंचल से लेके मध्य-प्रदेश का बस्तर के आदिवासी जनजाति वाला अंचल तक आ ब्रह्मपुत्र नदी घाटी से लेके वरसोवा (बम्बई) का समुन्द्रतट तक। हिन्दी-साहित्य में ई आंचलिकता के प्रवृत्ति आंचलिक भाषा के खुलि के आदर-अपनाव देति उमड़ि आइलि। उपेक्षित अंचलन का जीवन का संगे उपेक्षित भाषा का शब्दनो के दिन लवटल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देश का संगे साहित्य बदलल आ अंचलन में ढुकल त बोलियनो के दिन लवटल। सभसे अधिका असर भोजपुरी पर परल। ई स्वतन्त्रता का बादवाला लोकतांत्रिक प्रभाव अतना गहिराह रहे कि कथा-साहित्य में भोजपुरी आपन अलगा आ स्वतन्त्र पहिचान बनावे खातिर छटपटा उठलि। बहुत देरी ना भइल, ठीक दोसरके सालि माने १९४८ में ओकर पहिलका कहानी संग्रह तरना-छरिया के ठाढ़ हो गइलि। लोग देखल, एकरा हाथ में 'जेहल के सनदि' बा। एकरा हृदय का भीतर 'परमपद' के खवाहिश बा। आ इहवें से भोजपुरी का साहित्य के कथा-यात्रा के श्रीगणेश होत बा। चूँकि एकरा भीतर पवित्र लोकतांत्रिक चेतना के भरपूर प्रभाव बा एह कारण से लक्ष्य का बारे में एकरा भीतर कवनो दुविधा नइखे। दुविधा पहिले एकही रहे आ ऊ अब सइ पइसा में एको पइसा नइखे रहि गइलि। बहुत दिन ले लोग एह दुविधा में रहे कि भोजपुरी गँवारन के अविकसित भाषा हवे आ एकरा में साहित्य बने के संभावना नइखे। बाकिर अब त सिद्ध हो गइल कि भोजपुरी, खड़ी बोली से अधिक जीवन्त, वैज्ञानिक, क्षमतावान, व्याकरण नियंत्रित आ भविष्णु भाषा बा। अतने ना, धन्यवाद डॉ० रामविलास शर्मा के कि ईहो साफ हो गइल कि भोजपुरी सीधे वैदिक भाषा का परम्परा से जुड़लि बा।

एह विवेचन से ई साफ हो जात बा कि एक ओर स्वतंत्रा का बाद हिन्दी कथा-साहित्य के बुद्धिवादी दार्शनिकता, अहंमूलक मनोवैज्ञानिकता आ गैरसाहित्यिक राजनीतिक दबावन का शुष्कता से बचावे खातिर आंचलिकता का प्रवृत्ति के अइसन उकास भइल कि लोक जीवन, धरती के जीवन आ लोकभाषा के टटका रस-गंध से ओकर शृंगार होखे लागल आ दूसरा ओर सीधे भोजपुरी जइसन 'सोगहग' लोकभाषा अपना कथा-साहित्य के लेके अलगा ठाढ़ हो गइलि। ऊ जल्दिये हिन्दी कथा-साहित्य का तीसरका-चउथका उत्थान से अपना के सीधे जोरि लीहलसि आ दसे बरिस में भोजपुरी कथा-साहित्य में एगो मजिगर चमत्कार लउकल। अइसन जनाइल कि ऊ हिन्दी कहानी का विकास का कुल्हिये मंजिल के एके संगे पार करे बदे सरपट्ट समानान्तर चाल बढ़ा रहलि बा आ ओकर लक्ष्य बा कि चटपट आधुनिक शिल्प-विकास का मेल में आ जाईं। एही कारण से शुरू-शुरू का भोजपुरी कहानियन में कुछ कहानी लोक कथा आ बोध कथा का बीतल युग वाली अनगढ़ जमीन पर ठाढ़ लउकत बाड़ी स, त कुछ कहानी प्रेमचन्द पूर्व का जासूसी आ सामाजिक नीतिकथा का शैली में आगे बढ़त जनात बाड़ी स। एही तरह से अधिकतर कहानी प्रेमचन्द युग के भोगत रचाइल लागत बाड़ी स। ओह कहानियन में आदर्शवाद, आदर्शोन्मुख यथार्थवाद, रोमैन्टिक स्पर्श, ऐतिहासिक तत्त्व आ हास्य-व्यंग्य के अनुरंजनकारी झलक बा त एही का संगे-संगे कुछ कहानी अइसनो लउकति बाड़ी स कि हिन्दी कथा-साहित्य के प्रेमचन्दोत्तर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिल्पतत्त्व उजागर हो जात बा, जइसे यथार्थवाद, आंचलिकता, रेखाचित्रात्मकता मनोविश्लेषण परकता। कहे के मतलब ई कि भोजपुरी कहानी ऊ कुल्हिये अपना में चटपट समेटि लेवे खातिर अकनाइलि रहे जवन हिन्दी कथा-साहित्य में रहे। खास तौर पर कहानियन में अइसन स्थिति मिललि। काहे से कि एह में विशाल जीवन के छोट-मोट बिम्ब लेके नयी सृष्टि खड़ा कइ दीहल आसान रहे। भोजपुरी में उपन्यास त कुछु बाद में चलि के रचाइल आ पहिला उपन्यास रामनाथ पांडे के 'बिंदिया' सन् १९५६ में छपल। सन् १९४८ आ १९५६ का बीचे भोजपुरी कहानी साहित्य पत्रपत्रिकन में आपन रास्ता बनावत रहे। भोजपुरी कथा-साहित्य का विकास में सबसे बड़ बाधा प्रकाशन के रहे। कथाकार लोगन का अपनहीं संग्रह छपवावे के परी त कइसे जल्दी-जल्दी ई सेवा सरी? बाकिर बावजूद एह बाधा का कहानी-साहित्य बढ़त गइल जब कि ऊ बाधा अबहियों ले बनलि बा!

भोजपुरी के पहिला उपन्यास 'बिंदिया' सन् १९५६ में छपल। कुल एक सौ दस पृष्ठ का एह लघु मौलिक उपन्यास के भोजपुरी संसद बाराणसी प्रकाशित कइलसि। ऊपर कवर पर आकर्षक आ रंगीन किसान पुत्री का फोटो वाला एह उपन्यास के दाम ओह घरी डेढ़ रुपया रहे। आचार्य शिवपूजन सहाय, राहुल सांकृत्यायन आ प्रिंसिपल मनोरंजन का पसन्दगी के छाप लिहले ई उपन्यास भोजपुरी भाषा में प्रेमचन्दी आदर्शवाद के झंडा बुलन्द करत बहुत आदर पवलसि। सुगढ़ भाषा—शैली आ साफ सुथरा बुनावट में ई ना जना कि कवनो भाषा के ई पहिली कृति हवे। एकर कारण ई रहे कि ओकरा पाछा खड़ी बोली हिन्दी के लमहरि आ पूरा-पूरा विकसित परम्परा रहे। ई जरूर साफ बा कि हिन्दी कथा ओह वक्त तक प्रेमचन्द का आदर्श-वादिता से बहुत आगा निकलि गइलि रहे। फणीश्वर नाथ रेणु के युगान्तर-कारी उपन्यास 'मैला आंचल' दू बरिस पहिले छपि चुकल रहे; नागार्जुन के 'बाबा बटेसरनाथ' (सन्५२) आ बलचनमा, (५४) छपि चुकल रहलन स, जवना में जनवादी निखार सामने आ गइल रहे। ओह वक्त तक हिन्दी उपन्यास के परम्परागत ढाँचा एकदम टूटि गइल रहे आ ओकरा बनावट में बिखराव भरल आधुनिकता आ आंचलिकता के रंग आ गइल रहे। अज्ञेय, यशपाल आ जैनेन्द्र के आधुनिक कथा-दृष्टि के चारू ओर चर्चा रहे। कमलेश्वर, धर्मवीर भारती आ राजेन्द्र यादव के रचना हिन्दी--संसार का सामने आ गइलि रहली स। ठीक 'बिंदिया' का प्रकाशन वाला सन् ५६ में उदयशंकर भट्ट के 'सागर लहरें और मनुष्य', देवेन्द्र सत्यार्थी के 'ब्रह्मपुत्र', भैरव प्रसाद गुप्त के 'जंजीरें और नया आदमी' आ प्रभाकर माचवे के 'ढाँचा' नाँव के उपन्यास छपलन स। एह कुल्हि उपन्यास आ उपन्यासकारन के देखत 'बिंदिया' के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदर्शवादी कथ्य आ शिल्प के बहुत-बहुत पीछे यानी 'सेवा सदन' का प्रकाशन वर्ष सन् १९१८ का आमने-सामने रखि के मूल्यांकन करे के परत बा। बाकी भोजपुरी उपन्यास-साहित्य आ हिन्दी उपन्यास साहित्य का बीचे यदि सिर्फ ३८ वर्ष के फरक बा त ऊ कुछुओ नइखे। ओह घरी खुद हिन्दी कथा साहित्य अंग्रेजी कथा-साहित्य से एक सौ बरिस पीछे रहे। अंग्रेजी का मेरिया एजवर्थ (१७६७-१८४९) में जवन आंचलिकता रहे ऊ फणीश्वर नाथ रेणु (१९२१) में ठीक एक शताब्दी का फाँक का साथे फूटलि। बाकिर इहो ना कहल जा सकत रहे कि सन् ५६ में हिन्दी में आदर्शवाद एकदम लुप्त हो गइल रहे। 'ब्रह्मपुत्र' में घूमिफिरि के आदर्शवाद के प्रतिष्ठा होइये गइल बा आ आजुओ हिन्दी में प्रेमचन्द के परम्परा जीअति बा तब ई कहल यथार्थ होई कि भोजपुरी उपन्यास हिन्दी उपन्यास परम्परा के निभावत बहुत सफाई आ मजबूती से ठाढ़ हो गइल।

भोजपुरी के पहिला उपन्यास 'बिंदिया' के कहानी दमदार बा। कोदई किसान का गँवईं बिटिया में साहस बा। जवना साहस से ऊ बूढ़ बाप के खेती सम्हारति बा ओही साहस से अपना जवानी का चलते बदनामी से लड़ति अपना प्रेमी के पति का रूप में हासिल कइ लेति बा। खलनायक का रूप में गाँव का एगो धनी के बेटा झमन के चित्र खींचल गइल बा। अपना धन, बल, बुद्धि आ तिकड़म से बिंदिया से झपटि के बिआह कइल चाहत बा आ चारू ओरि से अइसन सुजनी जुटा लेत बा। किताबि पढ़ेवाला लोगन के धुकधुकी चले लागति बा। तबले नकशा पलटि जात बा। जेकरा के लेके बदनामी खड़ा कइल गइलि अपना ओही प्रेमी मंगरू के बुधिया काहे ना डिठार में आगे बढ़ि के पति बना ले? बहुत सावधानी से कथाकार उपन्यास का अन्त में एह नारी विद्रोह का आदर्शवादी कहानी के सम्हरले बा। बिंदिया के खटपर बाप कोदई का भीतर एह बिआह के खुशी वाला चित्र पेश कइ के आदर्शवाद पर मोहरि मारि दीहलि गइलि बा। एह तरह से भोजपुरी का पहिला उपन्यास में प्रेम आ बिआह का संदर्भ में जवन गँवईं आदर्श उभरल बा ऊ बहुत लुजलुज आ कोरा नइखे। ओहके प्रस्तुत करे में लेखक एगो ठेठ गाँव के कसलि-जमलि कहानी बइठवले बा। ई केतना उत्साहबर्धक बाति बा कि भोजपुरी उपन्यास का परम्परा में उठल पहिली रचना वस्तु आ शिल्पका दृष्टि से कमजोर नइखे। ई भविष्य के परम उज्वल भइला के संकेत बा। 'बिंदिया' का बाद वाला एह भाषा का प्रकाशित उपन्यासन के देखत एह अनुमान के सही समझे में अब कवनो बाधा नइखे लउकति। श्रीगणेश चौबे 'भोजपुरी के प्रकाशित ग्रंथ' में सन् १९७६ तक का अवधि में १० उपन्यासन के चर्चा कइले बाड़न। सन् १९७२ में छपल 'भोजपुरी साहित्य का इतिहास'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में डॉ० कृष्ण देव उपाध्याय छह उपन्यासन के चर्चा कइले बाड़न। सन् ६० का बाद भोजपुरी उपन्यासन में काफी तेजी आइलि बा। सन् ७६ का बाद के उपन्यासन सहित एह वक्त सौभाग्य से कुल्हि मिला के लगभग ढ़ाई दर्जन बढ़िया उपन्यास भोजपुरी साहित्य का बाजारि में प्रतिष्ठा पावत लउकत बाड़न स। रामनाथ पांडेय, बच्चन पाठक 'सलिल', जगदीश ओझा 'सुन्दर', विजेन्द्र अनिल, राम प्रसाद राय, राम नगीना सिंह 'विकल', अरुण मोहन भारवि, बालेश्वर राम, राधा मोहन राधेश, रमेशचन्द्र झा, अंगद मिश्र, नरेन्द्र शास्त्री, प्राध्यापक अचल, पांडेय कपिल, विक्रमा प्रसाद, पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह, कामता प्रसाद ओझा 'दिव्य' आ कवि किरण जी आदि भोजपुरी के उपन्यासकार लोग रचना में जुटल रहल ह।

भोजपुरी कथा—साहित्य का विकास का भीतर पिछलका दू दशक में जेतना उपन्यास रचाइल बाड़न स उन्हन पर एक नजर फेरीं त ई साफ पता चलि जाई कि एतना कम समय का भीतर आदर्श से प्रस्थान कइ के यथार्थ का ओरि बढ़ि जाये के प्रवृति भोजपुरी में मद्धिम नइखे। गहराई से विचार कइल जाव त एक तरह के आधुनिक सामाजिक यथार्थ 'बिंदियो' में लउकि जाई। मूल रूप से एह रचना में बिआह विद्रोह उभरल बा। एगो गाँव के मामूली किसान-कन्या बाप-दादा का सनातन परम्परा के, कि बाप जवना खूँटा बान्हि देई विधि-विधान मानिके गाइ नियर लइकी ओही ठाँव बन्हा जाई, चुनौती देले बिआ आ साहस कइके खाली नकारिये नइखे देले, बलुक अपना प्रेमी से बिआह कइके समाज में दहचन्द नियर ठाढ़ हो गइलि बा। कृति का भीतर वाला ई सामाजिक यथार्थ भोजपुरी का अउरियो उपन्यासन का भीतर उभरल बा बाकी प्रेमचन्द नियर आदर्शोन्मुखता बराबर सभका पाछे लागलि बा। शुद्ध यथार्थ के रूप नइखे निखरि पावत आ ना त भोजपुरी—उपन्यास रोजी-रोटी का समस्या से सीधे-सीधे जूझत लउकत बा। एगो दूगो के छोड़िके सगरे उपन्यासन पर आदर्शवादी शिल्प छवले बा। यथार्थ दबि गइल बा। एह तरह अब तलक का उपन्यासन के देखत एकरा शिल्प-विकास में हम नीचे लिखल प्रवृत्तिन के प्रधानता देखत बानी—

१. आदर्शवाद
२. आदर्शोन्मुख यथार्थवाद
३. यथार्थवाद
४. आंचलिकता
५. स्वैर विधा (फन्तासी)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

६. पौराणिकता
७. रेखाचित्रात्मकता
८. समस्यात्मकता
९. स्वच्छन्दविद्रोह

आदर्शवाद नियंत्रित सामाजिक यथार्थ के चर्चा विदिया का संदर्भ में भइलि बा। रामनाथ पांडेय के अगिलो नया उपन्यास 'जिनिगी के राह' (प्रकाशनाधीन) के राह नइखे बदललि आ ऊ ओही पुरनका राहे लागलि बा। आदर्शवाद छूटल नइखे। अचरज के बाति त ई बा कि एह कृति में गाँधीवाद आइल बा मार्क्सवाद का कपार पर चढ़ि के। यानी कम्यूनिस्ट पार्टी का एगो कार्यकर्त्ता का प्रभाव से मिलमालिक आ प्रेमिका के हृदय परिवर्तन हो गइल बा। एगो लखपती मिल मालिक के लइकी मीरा के प्रेम हो गइल बा कम्यूनिस्ट कार्यकर्ता प्रमोद से। परिस्थिति अइसन बदलति बा कि लखपती के बेटी मीरा के बिआह ओकरा मर्जी का खिलाफ एगो लखपती का बेटा दुर्गादास से हो जात बा। मीरा का देहि पर पति के अधिकार बा त ओकरा मन पर प्रेमी के। ऊ प्रमोद का मजदूर आन्दोलन में मददो करति बा। एक समय अन्दोलन तेज होके खूनी हो जात बा त अपना प्रेमी का ओरि से ऊ गोलियो खा जाति बा। ई देखि के दुर्गादास के हृदय परिवर्तन हो जात बा। ऊ मिल मजदूरन के आ मीरा के ओकरा प्रेमी खातिर सौंपि देत बा। अपना सेठ पति के ई मानवता देखि के मीरो के मन बदलि जात बा। अइसन देवता पति के कइसे छोड़ो? ओने प्रमोद आपन मनसा सिद्धि देखि के कहीं सरकि जात बा। एह तरह से उपन्यास में दूगो विरोधी वादन के आदर्शवादी घालमेल बहुत खूबसूरती से त भइल बा बाकी यथार्थ के कतहीं ठोस जमीन नइखे मिलति। हृदय परिवर्तन के नुस्खा बहुत पुरान आ घिसल-पिटल फालतू सिद्ध हो गइल बा। अपना आखिरी उपन्यास में गाँधीवादी कथाकार प्रेमचन्दो ओके छोड़ि दीहलन तब कतना पानी का गंगा में बहि गइला का बादो काहे भोजपुरी कथाकार लोग ओह मुअला लकीरि के पीटत रहो? अइसन जनात बा कि खड़ी बोली हिन्दी के जनवादी कथाधारा का हल्ला में भोजपुरी के कुछ कथाकार परि गइलन आ अपना कृति के ओइसन रंग देवे लगलन। एने ओकर आपन आदर्शवादी शिल्प अतना तगड़ा परल कि अपना रंग में समेटि लिहलसि। कुल्हि मिलि के स्वाद मजेदार हो जात बा।

सचहूँ, भोजपुरी उपन्यासन पर शुद्ध आदर्शवादी रंग खूब चटक बा। थोर-बहुत अन्तर के बाति छोड़ि दीहल जाव त ई साफ जनाई कि कुल्हि के कुल्हि उपन्यास एही रंग में रँगाइल बाड़न स। ओहमें उमरलि आंचलिकतो घूमिफिरि के आदर्शवादी रंग पकड़ि लेति बा। एह भोजपुरी आदर्शवाद में भावुकता कूटि-कूटि के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भरलि बा। सुन्दर जी के उपन्यास 'रहनिदार बेटी' का नाँवे से आदर्शवाद के ढोल बाजत बा। मुनिया बेटी नान्ह जाति के यानी रजभर के लइकी हवे त का भइल ? अपना गुन से, शील-संकोच से, आ रहनि से सभकर मन मोहि लेति बा। अपना महतारी-बाप के अइसन सेवा करति बा कि घनघोर आदर्श खड़ा हो जात बा, एकदम से सीधा-सादा आदर्श ! दरअसल, आदर्शों में तनी पेचदार मामिला भइला पर पाठक के कुछ हासिल होला आ कथावस्तु दमदार लागेले। राधा मोहन राधेश का कृति 'सेनुर के लाज' में सपाट भोलापन आ भावुकता वाला आदर्शवाद पति-पत्नी के बीचे अँटकल बा। सामाजिक जीवन में खाली भावुकते नइखे। ओहमें एगो कठिन संघर्ष वाली स्थिति बा, खून-पसीना एक करे वाला आ तबो भूख से मरे वाला दुर्भाग्य बा। एकरा साथे नाना प्रकार के राजनीतिक-आर्थिक जटिलता बा। कथाकार लोगन के तनिक जीवन का गहराई में जाके यथार्थ का संगे जूझे के हिमाकत बान्हे के चाहीं। खाली आदर्शवाद आ आंचलिकता का छोरन का बीचे टँगाइल भोजपुरी आलोचना के विषय हो जाई। 'सेमर के फूल' (बच्चन पाठक 'सलिल'), 'एगो सुबह: एगो साँझि' (विजेन्द्र अनिल) 'डँहकत पुरवइया' (अरुण मोहन भारवि) आ 'गाँव के माटी' (बालेश्वर राम यादव) में आदर्शवाद नाना रंग में झाँकत बा। आंचलिक उपन्यासन में एकर स्थिति अउरी पोढ़ बा। भोजपुरी अंचल का माटी में ऊ ना जाने कवन विशेषता बा कि एकरा साहित्य में आदर्श, आस्था, मूल्यनिष्ठा आ मानवता के फसल जोरदार रूप में ऊगति चलि जाति बा। यथार्थ के संघर्ष आ टकराहट पर कथाकार लोग ना जाने काहे नइखे जमत। ई अचरजे बा कि एक ओरि सन् ४२ का आन्दोलन में भोजपुरिया लोगन के सबसे महत्त्वपूर्ण बलिदानी भूमिका रहे आ ओह से पहिले राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में ई क्षेत्र सब दिन अगुआई कइलसि आ दूसरी ओर आजादी मिलला का बाद भोजपुरी क्षेत्र के भाषा आपन अलग पहिचान बनावे में जुटलि आ ओह में कथा-साहित्य के धुँआधार रचना होखे लागलि त राष्ट्रीय आन्दोलन के या लड़ाई-भिड़ाई के कवनो कतहीं सुनगुन नइखे मिलत ! का हो गइल ऊ कुल्हि सूरमा जाति के संस्कार ? सचहूँ; भोजपुरी कथा-साहित्य में राष्ट्रीय जुझारू स्वर के कमी खटके वाली बाति बा।

भोजपुरी में पहिला आंचलिक उपन्यास 'थरुहट के बउआ और बहुरिया' सन् १९६२ में प्रकाशित भइल। एकर लेखक रामप्रसाद राय कृति में नेपाल का तराई में बसे वाली अविकसित थारू जाति के उठवले बाड़न आ ओकरा सामाजिक सांस्कृतिक जीवन के प्रस्तुत करे के प्रयत्न कइले बाड़न। एही साल हिन्दी में शैलेश मटियानी के कुमायूँ अंचल का जीवन पर कई कई गो आंचलिक उपन्यास छपलन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स। वलभद्र ठाकुर आ रामदरश मिश्र के आंचलिक उपन्यास बाजारि में अइलन स। हिन्दी आंचलिक उपन्यासन में बुन्देलखण्ड, बस्तर, राजस्थान, संथालपरगना आ असम का जन-जातिन पर त उपन्यास लिखाइल बाड़न स बाकी थारू जाति एकदम नया बा। आदिवासिन का जीवन के आधार बना के उपन्यास लिखे के परम्परा हिन्दी में बहुत पुरान बा। सन् १९०९ ई० में रामचीत सिंह आदिवासी क्षेत्र का कोल कुमारियन का जीवन पर 'बनविहंगिनी' नाम के उपन्यास लिखलन। बाकी ओह घरी एह तरह का रचनन खातिर आंचलिक शब्द चलन में ना रहे। ई त सन् १९५४ में 'मैलाआंचल' का सगे-संगे हिन्दी साहित्य में आइल आ छा गइल।

राम प्रसाद राय का कृति का बाद त भोजपुरी में आँचलिक उपन्यासन के लाइन लागि गइलि। ब्रह्मपुर (बरहपुर) के तीर्थस्थान आ मेला का पृष्ठभूमि पर डॉ० बच्चन पाठक सलिल के उपन्यास 'सेमर के फूल' (६५), एगो प्रसिद्ध लोक कथा पर आधारित रमेश चन्द्र झा के कृति 'सूरमा सगुन विचारे ना' (सन् १९७२), छपरा अंचल का महेन्दर मिसर वाला लोकगाथा पर आधारित पांडेय कपिल के कृति 'फुलसुंघी' (सन् ७७) आ सारन का शीतलपुर गाँव पर आधारित पांडेय जगन्नाथ सिंह के उपन्यास 'घर टोला गाँव' (१९७९) वगैरह रचनन में आंचलिक रंग बहुत चटक बा। ई केतना बढ़िया बा कि हिन्दी भाषा नियर भोजपुरियो में आंचलिक उपन्यास आ ग्राम कथात्मक वाला उपन्यास के भेद बहुत साफ-साफ रूप में उभरल बा। ई साफ-साफ जना जाई कि जइसे 'फुलसुंघी' भोजपुरी के सर्वश्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास बा 'भोर मुसुकाइल' सबसे चुस्त ग्राम कथानक के उभारत उपन्यास बा। आंचलिकता का इर्दगिर्द हिन्दी आ भोजपुरी में एगो अउरी समानता लउकति बा। लोककथा आ लोकगीतन का रस में बसलि कथाभूमि दूनों में भरपूर रूप से निखरि के उभरलि बा। 'सूरमा सगुन विचारे ना' (७२) अइसने उपन्यास बा। बेतिया के राजा दिलीप सिंह का समय आ अमलदारी के एह में बान्हल गइल बा। इनही का राज में एगो रक्खन मियाँ रहलन जिनकर पवाँरा मशहूर हवे। एह पवाँरा में बाबू चैना सिंह के वीरता के बखान बा। एही पवाँरा वाला सूरमा के एह उपन्यास में नया ढंग से उछालल गइल बा। एगो समय, एगो स्थान और एगो विशेष व्यक्ति के तिनकोन में ई रचना जूझारूपन भरि देति बा। आ आंचलिक स्वाद से पढ़वैयन के तृप्त कइ देति बा। एहि उपन्यास के पढ़ि के हिन्दी के उपन्यासकार शैलेश मटियानी (१९३१) याद आ जात बाड़न। उनकर प्रसिद्ध उपन्यास 'मुखसरोवर के हंस' (१९६२) कुमायूँ प्रदेश का प्रसिद्ध लोकगाथा 'अजित बकौल' का ऊपर आधारित बा। एहमें चम्पावत राज का बकौल वंशी वीरन के गाथा बा। बकौल लोगन के उत्तराधिकारी मल्ल वीर लोग युद्ध में खूब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाँव कमइले। एह तरह से कुमायूँ का अंतिम रूपगर्विता रानी रूपाली के कहानी के उपन्यास में ढारि के मटियानी जी नया स्वाद पैदा कइ देले बाड़न। ठीक अइसहीं पांडेय कपिल के उपन्यास 'फुलसुंघी' (७७) अंचल विशेष का रस-गंध में रसल-बसल सिरजन में उतरि आइल। एगो देशकाल, ओह देशकाल का इतिहास में चमकेवाला कवनो दमखम वाला भलमानुस, आ एह भलमानुस का चारू ओरि गूँजे वाली कवनो रोमांच से भरि देबे वाली गीति जइसन कहानी जब कवनो कृति में बटुरि के समेटा जाले त ओकर साहित्यिक स्वाद अलगे से धाहे लागेला।

भोजपुरी कथा-साहित्य का विकास में इतिहास, कल्पना आ लोक गाथा का मिलावट से बनलि 'फुलसुंघी' एगो मानक उपलब्धि का मील-पत्थर नियर सामने आवति बा। बड़हर असर वाला ई लघु उपन्यास आंचलिकता का संगे-संगे मध्यकालिन आदर्शवादी जीवन मूल्यन के जबरदस्त वकालत करत बा। एकर कसल रोमैन्टिक रूप पढ़वैयन के मोहि लेत बा। छपरा अंचल में ढेला, महेन्दर मिसिर, हलिवन्त सहाय आ रिवेल साहेब के नाँव अबहियों ले इतिहास-पुरुषन नियर गूँजेला। जनता का मनमें ई लोग लोकनायक बनि के जमल बाड़न। उपन्यास लेखक एहीं लोगन का कहानी के उपन्यास में सरिया के बइठवले बाड़न। ई एक-एक गो नांव एक-एक गो चरित्र नियर कृति में प्रतिष्ठा पवले बाड़न। कथाकृति में चरित्र बने खातिर कवनो पात्र में सेवा, त्याग, प्रेम, सौन्दर्य आ ऊँचाई के जेतना गुन होला ऊ कुल्हिये एह नाँवन में झलकत बा। एह साच नाँवन के कहानी जोरे खातिर कुछ कल्पित पात्र लेखक का जरूर खड़ा करेके परल बा बाकी पूरी कहानी का प्रामाणिकता आ कसाव में कतहीं फरक नइखे परल। एह उपन्यास के कहानी उहँवा से शुरू होति बा जब बाबू हलिवन्त सहाय ढेलाबाई के बुलकना डोम द्वारा अपहरण करा लेत बाड़न। बाई बेचारी के इहे दोष रहे कि ऊ बाबू साहेब के हाथ न धरे देले रहलि। अब ढेलाबाई लाल कोठी वाला सोने का पिंजड़ा में फुलसुंघी बनि के परि गइली। एने उपन्यास में अइसन घटना फूटति बा कि बाबू साहेब का ओर आँखि उठाके ना देखे वाली ऊ फुलसुंघी महेन्दर मिसिर पर रीझि के चुपे-चुपे आपन नथुनी सौंपि देति बा। अब बनि जात बा ई प्रेम के मजिगर झमेला! आ एह झमेला में प्रेम, विरह आ मिलन के अइसन मनमोहक चित्र उभरत बा कि भीतर से तृप्त कइ देत बा। विशेषता ई बा कि एह प्रेम कहानी का इर्दगिर्द कुछ अउरी घटना आ चरित्र के जवन उभार लेत बा ऊ तनिको बिलग ना होके मुख्य कथा के भरि देत बा। अइसन नइखे कि ई सीधे-सीधे हलिवन्त सहाय आ महेन्दर मिसिर बनाम ढेला बाई के मुहब्बत वाली केसहिस्ट्री बनि गइलि बा। केस हिस्ट्री से बेशी ई एगो समय के हिस्ट्री अधिका हो गइल बा। अइसना समय में केहू आदर्श प्रेमी बनि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चमकत वा त केहू आदर्श सेवाव्रती वनि के। एगो कहानी का चारू ओरि अनेक आकर्षक कहनी फूटति बाड़ी स। पलटुआ—जिरिया के बिआह, रिवेल साहेब के त्याग, मुकदमाबाजी, लालकोठी आ सफेद कोठी के संघर्ष, विद्याधारी आ केसर बाई के प्रतिस्पर्द्धा, महेन्दर मिसिर के अन्तर्द्वन्द्व, शास्त्रीय-गीत आ लोक संगीत के टक्कर, आ क्लैसिकल व्यक्तित्व वाला लोगन के जमाव, कुल्हि मिलि के उपन्यास के सचहूँ एगो क्लैसिकल उपन्यास बना देत बा।

सगरे संसार का साहित्य में पति-पत्नी आ प्रेमी के संघर्ष सनातन जइसन वा। प्रेमी वाला ई 'तिसरका' बहुत गजव के होला। एकरा पीड़ा आ कसक का बनावट में उभरल साहित्य हमेशा से वेजोड़ होत आइल बा। एह तिसरका विन्दु के पहिले वाला कविता का साहित्य में खल का रूप में उपस्थित कइल गइल बा। काहे कि पुराना साहित्य में मर्यादावाला मूल्य प्रधान बा। नया साहित्य में, विशेष रूप से कथा-साहित्य में अब परम्परा आ मर्यादा तूरे वाला ई भल स्वच्छन्द विन्दु होके उभरल बा। आदर्श का खिलाफ विद्रोह का रूप में आ वैयक्तिक जीवन का यथार्थ का रूप में अब एकरा प्रतिष्ठा मिलि रहलि बा। एह प्रकार के यथार्थ के पूर्ण प्रतिष्ठा साहित्य का प्रौढ़ता के प्रमाण हो गइलि बा। त, अब ई कहल जा सकेला कि 'फुल सुंघी' का रचना से भोजपुरी कथा साहित्य के प्रामाणिक प्रौढ़ता प्राप्त भइलि वा। भोजपुरी के पहिला उपन्यास सन् १९५६ में छपल आ ओकरा २१ वर्ष वाद छपल ई कृति सचहूँ एह भाषा का कथा-साहित्य के पूरा-पूरा गभरू जवान बना देति वा। महेन्दर मिसिर का प्रेम के पूरा भितरघाव का संगे पेश करे वाली एह कहानी के बाहरी शिल्प-सज्जो ओही का मोताविक बहुत ठाटवाट वाला बा। प्रेम वाली भितरकी रिस—टीस एह रचना में ओइसहीं छिपलि वा जइसे गुलेरी जी का कहानी 'उसने कहा था' में। निश्चित रूप से क्लैसिकल कोमल छुअन पैदा करे में ई कृति बेजोड़ बा। चाहे प्रेम होखो, चाहे वीरता, चाहे त्याग होखो, चाहे भोग, सबकुछ संतुलित रूप से चित्रन में भरत चलत बा। रिवेल साहेब में अलौकिक त्याग वा आ ई त्याग गाँधीवाद से प्रभावित वा। एक ओरि ओह त्यागी महापुरुष के जीवन वा आ दूसरा ओरि उपन्यास के नाच, गाना, लय, ताल आ मोजरा वाला छमछम वातावरण, दूनों का विरोधी रूप से अइसन कथा-रस छलकत वा कि हृदय लहरा जात बा। आंचलिकता का पूरा-पूरा प्रतिष्ठा खातिर बीच-बीच में गीत आ संगीत के बहुत खूबसूरत योजना कइल गइल बा। एह गीत में सौन्दर्य बा, पूरा एगो अनुकूल रसगर वातावरण के उरेहे के क्षमता बा आ साधारण वर्णनात्मक कृति से ऊपर उठा देबे वाला सुर वा। ई सुर कुल्हि मिला के अइसन प्रतीकात्मक हो जात बा कि सगरी कहानी के मर्म ओही में उझिल जात बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गीत का कड़ी का भीतर उपन्यास के कहानी आ कहानी का भीतर गीत के कड़ी, एह दोहरी गूँज के स्वाद अद्‌भुत बा। गीत से उपन्यास के आरंभ होत बा, आ गीते से अन्त होत बा आ पूरा उपन्यास गीते का कोमलता नियर मन पर बइठि जात बा।

'फुलसुंघी' का संदर्भ में भोजपुरी में उतरलि आंचलिकता का प्रवृत्ति का विषय में कुछ अउर विचार आवश्यक लगत बा। जइसे आंचलिकता आ ग्राम कथानक में फरक बा ओइसहीं आंचलिकता आ आधुनिकता में छत्तीस जइसन सम्बन्ध बा। एकरा साथे-साथ इहो बा कि आंचलिक उपन्यास चरित्र प्रधान ना होखे ला। काहे से कि ओह में बिखराव बहुत होला। आदि, अन्त आ बीच का तनाव का संगति का अभाव में काटि-छाँटि के सोद्देश्य कथानक कइसे बनी? कइसे चरित्र निखरी? तब 'फुलसुंघी' के जे एक ओरि हम चरित्र प्रधान कहत बानी आ दूसरी ओरि ओकरा के आंचलिको कहत बानी त एकर कइसे जोड़ बइठल बा? असल में एह चरित्र प्रधान उपन्यास में एगो अंचल आ आंचलिकता के कुछ शर्त्त अइसन सघन बुनावट में उतरि गइल बा कि मजबूर होके एकरा के आंचलिक कहे के परत बा। सांस्कृतिक स्पर्श, तरल रागबोध, लोकगीत के अनुगूँज आ कुछु तलवर्ती जीवन के परम्परन के अइसन सुजनी जुटलि बा कि चरित्र का ऊपर अंचल छापि लेले बा। हिन्दी में देवेन्द्र सत्यार्थी के कृति 'ब्रह्मपुत्रो' के इहे हालि बा। एक ओर त ओकर ढांचा महाकाव्य के हो गइल बा आ दूसरी ओर ओह में कामरूप प्रदेश के ब्रह्मपुत्र अइसन सांस्कृतिक नदीघाटी के सभ्यता रीति-नीति, खान-पान, गीत, मुहावरा आ पूरा-पूरा जमीन से जुड़ल जीवन के आदिम रस गंध उतरि आइल बा आ अइसन एगो प्रादेशिक रूपाभा छितरा गइलि बा कि ओह के आंचलिकता का कतार से हटावल कठिन हो गइल बा। हिन्दी में नदी घाटी जीवन, अविकसित जंगली आदिवासी क्षेत्र, प्रादेशिक रूपाभा, पार्वतीय जन-जीवन, भौगोलिक ग्राम इकाई आ समुद्रतटीय जीवन छवि वगैरह का गहमागहमी भरल टटका सांस्कृतिक-सामाजिक चित्रन का बीच से आंचलिकता आपन डहरि बनवले बा। भोजपुरी में अबहीं ले नदी, पहाड़ आ समुद्र का जीवन के आंचलिक उपन्यास में नइखे बान्हल गइल। भोजपुर, नेपाल आ छपरा का अंचल के कथाकार लोग आपन पृष्ठभूमि बनवले बा। 'फुलसुंघी' छपरे अंचल के गमक छोड़ति बा। बाकी ऊ क्लैसिकल आ चरित्र प्रधान होके आंचलिकता का कसौटी पर सइपाई खरा नइखे उतरति। अब एह जगह पर भोजपुरी में एगो नया चमत्कार लउकत बा। परम्परा त ई ह कि बाप के कसर बेटा पूरा करेला बाकिर एह जादुई चिपकनशील भाषा में उलटे हो गइल बा। आंचलिकता के कसर जवन बेटा में रहि गइल ओह के बाप पूरा कइ देत बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ बहुत शान से। हमार मतलब ई बा कि पाण्डेय कपिल का ओह मशहूर कृति में पूर्ण आंचलिकता के जवन टोटा रहि गइल बा ओह के पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह अपना उपन्यास 'घर टोला गाँव' में पूरा कइले बाड़न। एह उपन्यास के सघन आंचलिकता के प्रयोग कहल जा सकेला भा ई भौगोलिक-ऐतिहासिक ग्राम इकाई का अंकन वाला प्रवृति से जुड़ल रेखांकित होई।

'घर टोला गाँव' में पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह विहार का सारन जिला वाला अपना गाँव शीतलपुर के पृष्ठभूमि बनवले वाड़न आ तमाम-तमाम पुरजन-परिजन लोगन के चित्रण कइले बाड़न। एह गाँव के पहिले-पहिले शीतल सिंह बसवलन। ऊ मुगल-दरबार से जागीर पवले रहलन और बड़ी दूर कहीं चिरैया कोट से शंखपुष्पी नदी का रास्ता से अइलन। जब गाँव बसि गइल त ऊ एक से एकईस भइल। पूरब-पछिम पट्टी का रूप में फइलल। संयुक्त परिवार का अनुशासन वाला ऊ सनातन सांस्कृतिक गाँव उपन्यास में पूरा मिठास आ प्यार का संगे स्मरण कइल गइल बा। ओकर इतिहास एगो समय के आंचलिक इतिहास हो जात बा आ एगो नया स्वाद के सिरजन होत चलत बा। ई साफ हो जात बा कि इतिहास कवनो राजा-रानी आ राजधानिये के ना होला। ऊ गाँवो-घर के होला, ओकरा सुख-दुख आ सांस्कृतिक उतार चढ़ाव के होला। भारत देश का आत्मा का रूप में उभरल लाख-लाख गाँव अपना रंग बिरंगा मोहक परिवेश में सचहूँ गजब के रसगर उपन्यास-भूमि हो जात बाड़न स। अइसहीं एगो पाँचि बरिस का कालखण्ड का भीतर शीतलपुर गाँव के इहाँ ओकरा जीवन का गहमा गहमी का संगे उभारल गइल बा। कइसे गाँव बसल, कइसे विकसित भइल, कइसे धीरे-धीरे ओकरा सिधाई-सरलता वाला रूप में जटिलता आइलि, कुल्हि बाति-वृत्तान्त सिनेमा का रील नियर सरकत जात बा आ उपन्यास बनत जात बा। सवाल ई बा कि का ई कृति अपना एह रूप में उपन्यास बनि गइलि बा? एह उपन्यास के नायक के बा? पूरा उपायास के घटना का एक सूत्र में बन्हाइलि बा? तमाम टोला, पट्टी, गोतिया, घर-हवेली आ बाबा-चाचा लोगन का वृत्तान्त का भीतर कवनो दूरवाला लक्ष्य झलकत बा जवना का ओरि कहनी बढ़लि जात बा? साच पूछीं त एहीं कुल्हि सवालन के जवाब एह कृति के आंचलिक बनावत बा। एह उपन्यास में शीतलपुर गाँवें अचेतन नायक हो गइल बा। ई ओइसहीं भइल बा जइसे हिन्दी का कुछ आंचलिक उपन्यासन में भइल बा। राही मासूम रजा का उपन्यास 'आधा गाँव' में लेखक के गाँव गंगौली नायक बा। नागार्जुन का कृति 'बाबा बटेसरनाथ' में बटवृक्ष नायक बा आ शिवप्रसाद मिश्र 'रूद्र' का कृति में गंगा मइया नायकत्व सँभलले बाड़ी। एह प्रकार से सम्पूर्ण सांस्कृतिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दृष्टि से एगो सम्पूर्ण गाँव के कहानी; सायर मइया, सलार मियाँ, चौबे-चौबाइन आ वड़ बूढ़न के सरदारी आदि के कहानी उपन्यास का आंचलिकता वाला अगड़म-बगड़म धर्म का मेल में आ गइलि वा। पुराना गाँव आ नया गाँव के अन्तरो बहुत साफ-साफ झलकत चलत वा आ 'घर टोला गाँव' एगो अचल के दमदार दस्तावेज हो जात वा।

आंचलिक उपन्यासन के विकास-चर्चा का बाद अब भोजपुरी के आधुनिक यथार्थवादी उपन्यासन के चर्चा जरूरी वा। एह भाषा में एह रूप वाला उपन्यास का कतार में पहिला स्थान होई विक्रमा प्रसाद के कृति 'भोर मुसुकाइल' के। कथाकार एह में आधुनिक रहाइसि के उल्हमेल्ह जिन्दगी आ ओकरा विसंगतियन के बहुत सही ढंग से प्रस्तुत कइले वा। का गाँव, का शहर, सभका के आजु के अर्थव्यवस्था झकझोरि रहलि बा। गाँव पर ओकर असर अधिका वा। आर्थिक आघात से गाँव संवेदन शून्य भइल जात वाड़न स। गाँव में गरीबी का संगे-संगे नया-नया धनियो लोगन के बाढ़ि आ गइलि वा। अइसना लोगन वदे गाँव के नैतिकता मजाक हो गइलि बा। शहरी चकाचौंध आ मौज-मस्ती के भाव गाँव में ढुकी के हुरदंग मचवले बा। गाँव के एह बदलि गइल आ तेजी से बदलि रहल रूप के विक्रमा प्रसाद अपना उपन्यास में मजीतेरे उरेहले बाड़न। उनकर मुख्य पात्र सिबरन बाड़े जे गाँव का माटी के प्रतीक वाड़े। वहुत सीधा-साधा मनई जिनका देहि का पोर-पोर में गाँव के पीरा भरलि बा। जब गाँव का सिवान में लात लावत बाड़न त रोवाँ-रोवाँ अगरा जात वा। बाकी कवनो गरीब के अगराहट कइसे देरी ले टिकल रही? वेकारी, बेरोजगारी, अकाल-दुकाल, मँहगाई आ पैसा के मारि कठिन साबित होति बा। जवना सोना नियर अपना बगइचा में सिवरन के प्रान बसत वा ओहके ऊ सूरुज सिंह भूपति के हियाँ रेहन धरे के मजबूर हो जात बाड़न। मन ताव खाके का करी? करेजा में दम कहाँ वा? सीधा-सादा गँवई-मनई शहरी चक्करबाजी में टूटि जात बा। गाँव में ढूकल धूर्त शहर गँवई मनई के लीलि घालत वा। दीपा सिंह के लाइन में जवन नया समाज गाँव में छवले जात बा ऊ छल-प्रपंच, भ्रष्टाचार, चोरी, डकैती, बलात्कार, हत्या, घूसखोरी, अनाचार के खूब टिटकार के वढ़ावा देत बा। गरीबन के गरदन रेतात बा। गाँव चारि ओरि से समस्यन से घिरि जात बा। का निदान वा एह समस्यन क? असल में समस्या बस समस्या वा। कथाकार के इहवें खतम हो जात बा। निदान उपन्यास पढ़ेवाला लोगन का भीतर से उमड़ो। कवनो सामाजिक क्रांति होखो आ सम्पूर्ण वदलाव आओ। एह स्तर पर कथाकार के प्रयास चले के चाहीं। आधुनिक स्थितियन के चित्र पेश करत में विक्रमा प्रसाद थोड़ा सा वहकि गइल बाड़न आ समस्यन के समाधान पेश करे लागल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाड़न। ई प्रेमचन्दी प्रयास आजु काल्हि फालतू जइसन हो गइल बा। बावजूद एह चूक का भोजपुरी उपन्यास में ई पहिला उपन्यास बा जे यथार्थ का स्तर पर स्थिति से जूझे का दिशा में ऊ अगुआई कइले बा आ एकदम से बदलि गइल सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यन के चित्रण कइले बा। भोजपुरी का अगिला उपन्यासन पर निश्चित रूप से एकर असर पड़ी।

'भोर मुसुकाइल' का संगे-संगे आदर्शोन्मुख यथार्थवादी उपन्यास प्राध्यापक 'अचल' लिखित 'सुन्नर काका' के अब चर्चा होखो। भोजपुरीं कथा—साहित्य का विकास में एह कृति के बहुत महत्त्व बा। काहे से जे एह में एगो रेखाचित्रात्मकता का नयी प्रवृत्ति के उपन्यास में समेटल गइल बा। उपन्यास के मुखपात्र सुन्नर काका सगरे उपन्यास का घटनन का केन्द्र में होके चमकत जात बाड़न। चारू ओरि के परिवेश रचना जइसे सुन्नर काका के उठावे खातिर खपलि बा। एक-एक गो अलग-अलग शीर्षक के ललित निबन्ध जइसे रचि के ओकरा भीतर मुख्य कथा से जोड़त सुन्नर काका के भूमिका आगे बढ़ति बा आ सम्मिलित कथा का संगे-संगे स्वतंत्र कथा के स्वाद देति वा। कुल्हि मिला के असली कहानी जवन केन्द्र में बा, ओह में एगो बहुत भारी राष्ट्रीय समस्या बा। ई बा गरीबी हटावे के समस्या। अपना एगो धाकड़ गँवईं पात्र का संगे कथाकार समस्या से जूझि रहल वा। उपन्यास होली का दिन से शुरू होत बा आ दिया—दियरी का तिहवार का दिने खतम होत वा। ओह दिने भिनसहरा का बेरा में बिरजन पुर गाँव के मेहरारू लोग सूप-दउरी बजा-बजा के दलिद्दर खेदत लउकत बाड़ी। ऊ लोग जइसे मंत्र पढ़त वा कि, 'ईस्सर पइससु दलिद्दर निकससु, महादुआरे परमेसर बइठसु!' एह उपन्यास का अन्त में पहुँचि के पाठक सोचे लागत बा कि कथाकार बिरजनपुर गाँव में सुन्नर काका के ईस्सर नियर ढुकवले बा, जेकरा करनी से तमाम—तमाम तरह के बिघ्न-बाधा दूर होके गाँव में सुख-शांति आ गइल बा। ई उपन्यास के अन्त-वाला आदर्शवाद के छोड़ि दीहल जाव त अचल' जी आज का गाँवन का घनघोर यथार्थ के पिछला पन्ना में खूब जमि के उरेहले बाड़न। एह उरेह में एगो विशेषता वा, कि ओह में उपन्यास का आधुनिक ढाँचा के तनिको परवाह नइखे कइल गइल। वहुत स्वच्छन्द भाव से आचार्य शिवपूजन सहाय का 'देहाती दुनिया' (१९२६) नियर सोझ-सपाट कहनी कहात चलि गइलि बिआ। अनुरंजन एह कृति के खास विशेषता बा। भोजपुरी जन-जीवन के खाँटी भाषा, मुहावरा, भंगिमा, लोक गाथा, दृष्टान्त आ अछूता रूप-रंग उतारे में कथाकार के सफलता मिललि बा। शैली में जवन जबरदस्त खिचाव बा, ऊ वस्तु का सपाट सिधाई पर ध्यान नइखे जाये देत। लागत बा, सुन्नर काका भाषा, शैली आ वस्तु हर दृष्टि से भोजपुरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कथा—साहित्य में एगो मौलिक आ उपयोगी कृति बनि के प्रस्तुत भइल बा आ ओकरा विकास के भरपूर बल प्रदान कइले बा।

भोजपुरी कथा-साहित्य का विकास में बलिया का नरेन्द्र शास्त्री के उपन्यास 'ऊसर के फूल' (७६) महत्त्वपूर्ण स्थान बनवले बा। काहे कि तमाम आदर्शवादी और आदर्शोंमुख यथार्थवादी कृतियन का बीचे इहे एगो ठोस यथार्थ-वादी कृति लउकत बा। महज अस्सी पृष्ठ के आकारवाला एह लघु उपन्यास में बलिया जिला के तीनि गो गाँव पृष्ठभूमि में बाड़न सँ, घुड़ियारी, खरौनी आ बाँसडीह। एह तीनों गाँवों से जुड़ल एगो मुख्यपात्र बाड़न शमशेर बाबू जिनका सोझा दू डहरि के हुचपच मचलि बा। एगो डहरि बा नैतिकता, सचाई, ईमान-दारी आ पसेना के कमाई वाली आ दुसरकी डहरि बा—अवैध काली कमाई वाली, पाप भरल लूटपाट आ बिना हर्रे-फिटिकरी लागल चोखा रंग देवे वाली। एगो डहरि के नतीजा बा कि जिनिगी भर भूखन मरीं आ दूसरी के फल बा जल्दी से धनी हो के चानी काटीं। एगो में गरीबी से लड़े के बा आ दुसरकी में अमीरी के नेवता देबे के बा। जब उपन्यास आगे बढ़त बा त एकर उत्तर अपने आप मिलि जात बा। किताब के पढ़वैया देखत बा कि शमशेर बाबू आजीवन कैद के सजाइ भोगे गइलन आ उनकरि मेहरि किरौना नियर लइका सटले भीखि माँगति बा। एह प्रकार से जीवन-यथार्थ के झंडा लहरा जात बा। उपन्यास में झलकत आदर्शन क खोखलापन जगजाहिर हो जात बा। उपन्यास लेखक कतहीं भाषण नइखे करत, क्रोध-छोभ नइखे उगिलत। चुपचाप ऊ आजुका जीवन के असलियत खोलि देत बा कि पूँजीवादी अर्थ-व्यवस्था में गाँव के सीधा-सरल मनई के मौत ले ठेकाना बा! शमशेर का जीवन के लेखक अतना मानवतावादी गरमा-गहमी से भरि के उतरले बा कि आदर्शवादी सटाव के भ्रम होखे लागत बा आ अन्त में झटका लागत बा कि पढ़वैया तिरमिरा के रहि जात बा। एह छोट उपन्यास में एगो बड़ प्रयोगो भइल बा, जवना के देखि के भोजपुरी कथा-साहित्य का शक्ति पर विश्वास जमे लागत बा। सिद्ध कथाकार अमृतलाल नागर जइसे अपना उपन्यास 'अमृत और बिष' में प्रयोग कइले बाड़न कि एगो पात्र अरविन्द शंकर का माध्यम से एह कृति के रचना प्रक्रिया चिन्तन में उभरति चलति बा, ओइसहीं नरेन्द्र शास्त्री का एह लघु उपन्यास में बाल-कथा का जइसन पात्र राजेन्द्र का भीतर परिवेश के ग्रहण करेके आ ओकरा चोट से विद्रोही हो जाये के जवन प्रक्रिया कहानी का संगे-सगे चलति बा, ऊ एह उपन्यास के बहुत मनोवैज्ञानिक आ आधुनिक बनावटि बा। आधुनिकता के एगो पहिचान 'अनपेक्षित पीड़ा भोग' होले आ उहो एह उपन्यास का नारी पात्रन में उभरलि बा। एह तरह से अब ई ना कहल जा सकेला कि भोजपुरी में यथार्थ के धरातल अबहीं ले सूने पड़ल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी उपन्यास का शेष प्रवृत्तियन का विचार में अरुणमोहन भारवि के उपन्यास 'परशुराम' ध्यानाकर्षक लगत बा। छप्पन पृष्ठ का एह उपन्यास में बारह गो अध्याय बा जवना में सहस्रबाहु, यमदग्नि, रेणुका आ परशुराम का इर्दगिर्द कहानी घूमति बा। महतारी वध वाली घटना बहुत विस्तार पवले बा। बाकी आजु काल्हि जवन पौराणिक पुनर्लेखन के प्रवृत्ति चलति बा आ पुरान कहानी में नया विचार के आधुनिक कलमि लगा के पेश कइल जात बा, ऊ एह कृति में अवहीं नइखे झलकत। कविवर किरण जी रावण का जीवन के आधार बना के चतुरसेन शास्त्री का कृति 'वयं रक्षामः' नियर एगो गंभीर उपन्यास लिखले बाड़न आ ऊ जल्दिये में छपे वाला बा। अब देखे के बा कि एह नवका क्षितिज में कतना नवका रंग-तरंग बा? भोजपुरी जइसन बीहड़ क्षमता वाली भाषा का कथा-साहित्य में हर तरह के नवका क्षितिज के स्वागत बा। एगो अइसने क्षितिज के उद्घाटन भइले अठारह बरिस हो गइल। अब ई एगो चुनौती बा कि रामनगीना सिंह विकल का स्वैर विधा (फन्तासी) में लिखल आ परलोक का जीवन पर आधारित 'जीअन साह' (१९६४) जइसन उपन्यास अवहीं दूसर ना लिखाइल। सन् १९६५ में अंगद मिश्र एगो उपन्यास लिखलन जवना के एगो पात्र हिन्दी बोलत बा आ एगो भोजपुरी। यानी ई 'भगजोगनी' नांव के उपन्यास सामिल भाषा वाला उपन्यास बा। अइसन सामिल भाषा प्रयोग त मध्य काल का नाटकन में मिलेला कि उच्च वर्ग के पात्र संस्कृत बोलत बा त निम्नवर्ग के प्राकृत। बाकी एह कृति का प्रयोग में अइसन लकीर नइखे खिंचाइलि। ई शुद्ध मनमौज में प्रयोग भइल बा। एह मनमौज के छोटे बीआ सालभर में कइसन बड़हर बटवृक्ष हो गइल बा, एकर उदाहरण हम रउआँ सभ का सोझा राखत बानी। हिन्दी के सिद्ध कथाकार डॉ० रामदरस मिश्र एगो भारी हिन्दी उपन्यास लिखले बाड़न जवना के नाँव बा 'अपने लोग' (१९७६)। एह उपन्यास का भीतर पंडित के लाल आ इमिरितिया चमाइनि के प्रेम-लीला-विस्तार से चित्रित भइल बा। आ ई कुल्हि चित्रण शुद्ध भोजपुरी भाषा में भइल बा। कइसे पंडित जी ताल में, भँइसि चरावे जात बाड़न त ओने से गोबर-लकड़ी बीने के बहाना बना के इमिरितिया आ जाति बा आ खूब जमि के रोमांस चलत बा! एह प्रयोग से कृति के मूल्य बढ़ि गइल बा। हम अपना उपन्यास में भोजपुरी शब्दन के प्रयोग खास-खास जगह पर कइले बानी आ इहे हालि शिवप्रसाद सिंह के बा। राही साहेब भोजपुरी उर्दू जगह-जगह छँटले बाड़न, बाकि रामदरश जी छिटपुट स्वाद के छोड़ि के इकट्ठे वाली नीतिवश अपना एह उपन्यास में भोजपुरी जीवन का बीचे भोजपुरी भाषा के रसगर गगरी अध्यायन में उझिल देले बाड़न।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिन्दी में उपन्यास आ उघु उपन्यास कइके भेद चलि रहल बा। भोजपुरी में अइसन भेद नइखे काहे से कि एगो 'भोर मुसुकाइल' के छोड़ि के आकार में सगरे उपन्यास अइसने बाड़न सँ कि ओके मोटा रूप में लघु उपन्यास कहि दीहल जाई। बाकी जब भोजपुरी में लघु उपन्यास घोषित कइके रूप प्रकाशन से योगेन्द्र प्रसाद सिन्हा के उपन्यास 'फुलमतिया' छपल त जनात बा कि भोजपुरी साहित्य अब आकार वाला मोटामोटी रूप के छोड़ि के उपन्यास आ लघु उपन्यास के मेंहि माने सूक्ष्म भेद करे लागल बा। ई शुभ लक्षण बा आ भोजपुरी साहित्य के प्रगति के चिह्न बा। ओकरा एह प्रगति में भोजपुरी के पत्र-पत्रिका खूब सहयोग कइ रहल बाड़ी स। एह मौका पर कलकत्ता से छपे वाली पत्रिका 'भोजपुरी माटी' के सेवा के चर्चा होखे के चाहीं। ई पत्रिका बा जवन नियम से धारावाहिक उपन्यासन के चला रहलि बा। सन् १९८१ में नरेन्द्र रस्तोगी 'मशरक' के उपन्यास 'कमली' एह पत्रिका में धारावाहिक छपल आ सन् १९८२ में 'बदमिया' (ले० वैदेही शरण) चलि रहल बा। ई दूनो सामाजिक उपन्यास बाड़न सँ। 'भोजपुरी अकादमी पत्रिको' मधुकर सिंह के उपन्यास 'रेवती' के सन् १९८० में छपले रहे। नरेन्द्र शास्त्री के समूचा उपन्यास 'ऊसर के फूल' वाराणसी से प्रकाशित 'भोजपुरी कहानियाँ' में विशेषांक का रूप में छपल रहे। एह तरह से भोजपुरी उपन्यास में चौतरफा भराव के चिह्न उभरि रहल बा; बाकी जवना के मजिगर छलांग कहल जाला, ऊ अबहीं कतहीं भविष्य का इन्तजारी में बा। जवना के आधुनिकता कहल जाला, जवना में विद्रोह के बाहर-भीतर वाला ताना-बाना होला ऊ अभी भोजपुरी में नइखे उभरि पावत। आंचलिकता के स्वागत करे वाला आ आदर्शमूलक सामाजिकता का सपना में डूबल भोजपुरी उपन्यास-साहित्य उम्मेदि कइल जा सकेला कि जल्दिये में बिंदिया, भगजोगनी, फुलमतिया, बेदमिया, कमली आ रेवती जइसन नारी नांवन का शीर्षक में झाँकति रोमानी कमजोरी से मुक्ति पा लीही। अबहीं ले उपन्यास साहित्य का आन्दोलन का खींचतान से मुक्त भोजपुरी उपन्यास-साहित्य आपन डहरि बना रहल बा। जेतना बनि गइलि बा ओह पर कलई चढ़ि रहल बा। गति गंभीर बा बाकि तेज नइखे। विजेन्द्र अनिल, विक्रमा प्रसाद, पाण्डेय कपिल, नरेन्द्रशास्त्री, अचल, अरुण मोहन भारवि आ रामनाथ पाण्डेय वगैरह एह भाषा का जानदार रचवइयन का अछत ओकरा कथा साहित्य में काहे गति मन्द रही?

उपन्यास का बाद अब भोजपुरी कहानी का साहित्य के एक नजर देखल जाव। एह ओरि बहुत हरिअर हरिअर लउकत बा। बहुत विश्वास का साथे कहल जा सकेला कि भोजपुरी के कथा साहित्य थोरही समय में अतना समृद्ध हो गइल बा कि ओकर बीच से गुजरत कवनो तरह के हीनता के भाव ना आई। जेहल के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सनदि' (४८) से लेके 'लोगवा का कही' (मार्च '८२ :,भोजपुरी माटी में प्रकाशित रामलखन विद्यार्थी के कहानी) तक जवन उत्तरोत्तर विकास होत चलि आइल बा ओकरा आधार पर समीक्षक अब एह स्थिति में अपना के पावत बा कि ओकरा सम्पूर्ण रूप पर कवनो निष्कर्ष निकालि सकि। भोजपुरी कहानी में ऊ कुल्हिए आ गइल बा जवन हिन्दी कहानी में बा आ बहुत मौलिक ढंग से ओकर कुल्हिए कथा-आन्दोलन के ई आत्मसात कइ लेले बा। पहिला मौलिक कहानियन के संग्रह 'जेहलि के सनदि' (४८) जवना के लेखक अवधबिहारी सुमन जी रहलन आ उनके अब स्वामी विमलानन्द सरस्वती कहल जात बा, दस गो मौलिक सामाजिक कहानियन के ले के मैदान में आइल आ ओकरा बाद जवन दनादन संग्रह आवे लगलन स त अबतक लगभग तीन दर्जन दमदार संग्रह आ गइलन स। एही तरह से सम्पादित भोजपुरी कहानियन के पहिला संग्रह 'भोजपुरी कहानी संग्रह' नाँव से सन् १९६२ में छपल, जवना के सम्पादक प्रो० चन्द्रभूषण सिन्हा रहलन, ऊ पनरह गो ओह वक्त का जानल-मानल भोजपुरी कथाकारन के रचना ले के सामने आइल। ओकरा बाद सन् १९८१ तक का अवधि में लगभग १ दर्जन संपादित संग्रह सामने आ गइल बाड़न सँ। अंतिम संग्रह 'सेसर कहानियाँ भोजपुरी के' (८१) त सचहूँ 'सेसर' हो गइल बा आ एकरा भीतर भोजपुरी के एकावन गो स्थापित कहानीकारन के श्रेष्ठ रचना प्रस्तुत कइल गइल बा। एकरा से पहिले सन् १९६७ में रामवली पांडेय का संपादकत्व में बहुत ठाट बाट से एगो संकलन भोजपुरी संसद से छपल 'भैरवी के साज' आ एकर प्रकाशन अइसन स्तरीय भइल कि समीक्षक लोगन का एक स्वर से स्वीकारे के परल, 'कवनो भाषा का उच्च कोटि का कहानी-संग्रह का मुकाबिले में एकरा के रखल जा सकेला। एह में १९ गो कहानी रहली सँ। एकरा १० बरिस बाद २८ गो श्रेष्ठ भोजपुरी कहानिन के संग्रह भोजपुरी संस्थान, पटना से सिपाही सिंह श्रीमन्त आ कृष्णानन्द कृष्ण का संपादकत्व में प्रकाशित भइल आ दस बरिस जेठ के धर्म जेठ नियर निबाहत उतरल।

मौलिक कहानी संग्रहन में सुमनजी का बाद रामवृक्ष राय विधुर के 'खैरा पीपर कबो ना डोले' (६४), गिरजा शंकर राय 'गिरिजेश' के 'बैरिन बाँसुरिया' (६८), कामता प्रसाद ओझा 'दिव्य' के 'चिटुकी भरि सेनुर' (६९), ईश्वर चन्द्र सिन्हा के 'गहरेवाजी', डॉ० विजय नारायन सिंह (विजय बलियाटिक) के 'जै जजमान' (७२), तैयब हुसेन पीड़ित के 'बिछउँतिया' (७४), वीरेन्द्र नारायण पान्डेय के 'दरबा' (७४), कृष्णानन्द कृष्ण के 'एहदेश में' (७५), कन्हैया सिंह सदय के 'मनसा' (७६), शुकदेव सिंह स्नेही के 'ढिबरी' (७६), प्राध्यापक अचल के 'माया मिलिल न राम' (७७), पी० चन्द्र विनोद के 'हम कुन्ती ना हईं' (७७), घनश्याम मिश्र के 'अमरावती' (७७), रामनाथ पान्डेय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के 'सतवन्ती' (७७), डॉ० मुक्तेश्वर तिवारी बेसुध (चतुरी चाचा) के 'भेंइसि के दूध' (७८), ब्रज किशोर दूबे के 'सकदम' (७९), ब्रज किशोर के 'धुँआ (७९), रूपश्री के 'खोंता से बिछुड़ल पंछी' (८०), अक्षयवर दीक्षित के 'सतहवा' (८१) आ विवेकीराय के 'ओझइती' (८२) वगैरह भोजपुरी का मौलिक कहानी संग्रह का रूप में सामने प्रस्तुत भइलन सँ। राधामोहन राधेश, राय सच्चिदानन्द, राधिका देवी, सत्यव्रत, अरविन्द कुमार, डा० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी आ डॉ० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' आदि लेखकन के संग्रहो भोजपुरी के समृद्ध करे में अगु-आई कइलन सँ। पुरुष कहनी लेखकन से बेशी उत्साह महिला कहानी लेखकन में मिलल, एह विकासशील भाषा के शुभ लक्षण बा। रूपश्री के दूसरका कहानी संग्रह के ऊपर चर्चा बा। बाकि उनकर पहिलका मौलिक संग्रह 'जिनिगी के पर-छाहीं' सन् १९७१ में छपि गइल रहे। भोजपुरी उपन्यास में जइसे बाप-बेटा के दू पीढ़ी जुटलि बा ओसहीं भोजपुरी कहानी का क्षेत्र में पति-पत्नी (ब्रज किशोर आ रूपश्री) के जोड़ी साधना में लागलि बा। भोजपुरी का श्रेष्ठ कथाकारन में एगो कथाकार अइसनो बाड़न जे बावन वरिस का परिपक्व उमिरि में पहिली कहानी लिखल आ ओकरा बाद लिखे लागल त 'गहरे बाजी' नियर मानक संग्रह तइयार हो गइल ! समर्पित आ सिद्ध पत्रकार ईश्वरचन्द्र सिन्हा का एह साधना का पाछा भोजपुरी के ठोस सेवा के मिशन रहे आ ऊ समय रहे कि भोजपुरी के भगीरथ डॉ० स्वामीनाथ सिंह वाराणसी में अखिल भारतीय भोजपुरी संसद के अलख जगवले रहलन। उनका छछन रहे कि भोजपुरी में सगरे विधन के समृद्धि एके संगे होखो। उनहीं का ललकार पर सन् १९६५ ई० में सिन्हा जी 'भैरवी क साज' शीर्षक कहानी लिखलन जवन भोजपुरी का गिनल-चुनल कुछ श्रेष्ठ कहनियन में से एगो हो गइलि। कहे के मतलब ई कि भोजपुरी कहानी साहित्य का विकास का पीछे आत्मदानिन के कठिन त्याग-तपस्या लागलि बा। वाराणसी का भोजपुरी संसद् के वर्णन ऊपर हो गइल बा। पटना में रूप प्रकाशन, लोग प्रकाशन, भोजपुरी संस्थान व्यक्तिगत रूप से खपि रहल बा। भोजपुरी अकादमी के कदम बढ़ि रहल बा। जमशेदपुर के भोजपुरी साहित्य परिषद्, बक्सर के भोजपुरी साहित्य मंडल, उजियार (बलिया) के अन्तरजनपदीय परिषद, सीवान के भोजपुरी साहित्य सदन आ कलकत्ता के पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद् आदि प्रकाशन संस्था भोजपुरी कथा--साहित्य का विकास में आपन आपन योगदान लेके आगे बढ़ि रहलि बाड़ी सँ आ सचहूँ एगो प्रभावशाली वातावरण बनि रहल बा।

भोजपुरी उपन्यास त जनमते झारि के नया चोला धारण कइ लिहलसि बाकी भोजपुरी कहानी का संगे-संगे परम्परागत लोक-कथा, बोध-कथा आ व्रत-कथा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वगैरह के पुराना भाव पोंछि नियर लागल रहे। यद्यपि भोजपुरी में लोककथा के कहानी से फरक कइ के समुझे के परम्परा वा आ लोककथा के अलगे साहित्य रचाइल वा। बाकि भोजपुरी कहानी में ऊ एने-ओने से घुसरि के आपन रंग जमावे लागल। अइसनो भइल बा कि लोकतत्त्व वाली पुराना ढांचा का वस्तुनो के लोग कहानी का नया ढाँचा में प्रस्तुत कइले बाड़न आ ओकर गिनती कहानी में होखे लागलि बा। गणेश चौबे जी अइसन चार-पाँच पुस्तकन के चर्चा कइले बाड़न। नन्दकिशोर झा के दू भाग में लिखलि 'चालाक चौखड़ी' आ उनही के लिखलि कई भाग में 'वुड़िबक बहार' के उपदेशात्मक कहानी-संग्रह कहल जा सकेला। एह तरह के साहित्य शुद्ध रचनात्मक कोटि में ना आई आ ओकर मूल्यांकन कहानी का संगे ना हो सकेला। अइसहीं रामबली पाण्डेय का सम्पादन में प्रकाशित -व्रत-कथा'- आ कामता प्रसाद ओझा 'दिव्य' के रचल 'भोजपुरी हितोपदेश' के समीक्षा कहानी का कसौटी पर ना चली। डॉ० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी 'सोना के ओधी' में अलबत्ते शुद्ध लोक कथन के कहानी रूप देवे के प्रयास कइले बाड़न। असल में भोजपुरी खातिर ई स्वाभाविक वा कि ऊ अपना लोक साहित्य के निगिचा से जानो-मानो; वाकि साहित्यिक विधा में ओकरा प्रयोग के बस एगो सीमे तक राखल जा सकेला। कथा—सहित्य में लोककथा के प्रयोग भर हो सकेला। खुद लोक कथा अपना रूप में आधुनिक कथा—साहित्य ना हो सकेले। अब त भोजपुरी में लोक साहित्य, विशेष रूप से लोककथन का ऊपर खूब जमिके आ विस्तृत रूप से विद्वतापूर्ण अनुसन्धानो हो गइल बा। डॉ० रसिक बिहारी ओझा निर्भीक के ई अनुसन्धान अपना ढंग के अकेला आ पहिला बा। ओह में परिनिष्ठित आधुनिक कथा—साहित्य आ लोक कथा साहित्य का बीचवाला डँड़ार खूब सफाई से फरियावल गइल बा। भोजपुरी के कथा साहित्य छिटफुट व्यामोह प्रदर्शन का बावजूद अपना के लोक कथा का पुरानापन से काटि के नयारंग में ढारि लेले बा। ओकर कहानी-साहित्य हिन्दी कहानी साहित्य का पंचतत्त्व वाला प्रभाव में पल्लवित भइल बा। अतना जरूर कहल जा सकेला कि सरल सीधा आ सपाट बयानी वाला शिल्प जवन लोक-कथन का भीतर से आके ओकरा खून में बसि गइल बा, जल्दी आपन छाप नइखे छोड़त, तबो नया से नया शिल्प, कथा आन्दोलन के प्रभाव, वाद, भंगिमा आ मोड़न के झटपट अपनावे में भोजपुरी कहानी के डेग हमेशा अगहुड़ रहत बा। मोटा रूप में सन् ५० से एकर इतिहास बा आ ठीक एही वक्त से हिन्दी में नयी कहानी के आन्दोलन के शुरुआत भइलि। हिन्दी में त एतना विशाल बा, कि पाँच साला चुनाव आ सत्ता परिवर्त्तन नियर बदलत कहानी-आन्दोलन आ ओकरा अलगा-अलगा नाम रूप के विधिवत् लेखा-जोखा कठिन हो गइल बा। बाकि भोजपुरी में ई नइखे। समय का संगे-संगे ओह आन्दोलन आ नारन के रूप एकरा कहानी—साहित्य पर इकट्ठे लउकत चलत बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन् १९५० का बादवाली हिन्दी कहानी में जवन कुछ बदलाव आइल, ऊ कुल्हि जीवन-मूल्यन का सन्दर्भ में समझल गइल। पुरान मूल्य बदलि गइल, ओकरा पर संकट आइल, ओह में विघटन भइल, ओह में संक्रमण के लच्छनि उभरलि आ कथाकार लोग नया मूल्यन का खोज में जुटि गइलन। अब प्रेमचन्द, जैनेन्द्र आ अज्ञेय जइसन लोगन वाला शाश्वत जीवन मूल्य ना रहि गइल। मार्क्सवाद, अस्तित्ववाद आ मनोविश्लेषण के प्रभाव लेके 'नयी कहानी' आगे बढ़लि। ओकरा पर भारतीय स्वाधीनता, लोकतंत्र, लोकतंत्र से पैदा मोहभंग, समाजवाद, औद्योगिक उलझाव, व्यक्तिवाद, विघटन, बेकारी वगैरह के दबाव परल। संयुक्त परिवार के कड़ी तड़तड़ा उठली सँ। क्षोभ, असन्तोष आ विद्रोह के लहरि उठलि। वैयक्तिक आ नैतिक मूल्यन में, मर्यादा में दरार परल, देश विभाजन आ साम्प्रदायिकता संत्रास आ मूल्य विघटन के बढ़ावा दिहलसि। कड़ुवाहट तीखापन, व्यंग्य आ नाना प्रकार के चुनौती उपटली सँ। 'नयी कहानी' जबरदस्त जीवनपद्धति बनि गइलि। परम्परा आ नैतिकता पर कस-कस के प्रहार होखे लागल। मध्यम वर्ग का उभार का संग-संगे नाना तरह के कुंठा, संत्रास, अनास्था अकेलापन, अजनबीपन आ कुल्हि मिला के आधुनिकता बोध के रंग उभरल। प्रेमचन्द युगीन, प्रेम, करुणा, हृदय-परिवर्तन, शील, चालि, चरित्र, नैतिकता, ईमानदारी, क्षमा आ न्याय वगैरह के दिवाला पिट गइल। ओह पुन्न वाली संघर्षशीलतो पाछा छुटि गइलि आ एह तरह से एकदम नया तेवर का संगे 'नयी कहानी' पूरा साहित्य का केन्द्र में आ के बइठि गइलि। सन साठ का बाद 'साठोतरी पीढ़ी' का कहानीकारन में अउरी तीखापन आ तुर्शी आइलि। खेमा, शिविर, गोष्ठी, भाषण; चर्चा, विवाद आ संवाद परिसंवाद के लहरि आइलि। एह पीढ़ी के कहानीकार लोग दावा कइल कि उनकर भाव, बोध, शिल्प आ दृष्टि में जन जीवन के असह्य पीड़ा बा आ ऊ एकदम नया बा। एह साठोतरी पीढ़ी में अकहानी आ 'सचेतन' कहानी के दूगो शाखा फूटति लउकली सँ। 'अकहानी' पेरिस में जनमलि, एन्टी स्टोरी के छाया ले के उतरलि। एह में नयी कहानी का अनुभव का प्रामाणिकता, भोगल यथार्थ के रस आ बौद्धिकता के विरोध भइल। एह में जीवन का विसंगति आ भद्दगी के विशेष रूप से उभारल गइल आ रूपवादी शिल्प के बहिष्कार भइल। 'सचेतन कहानी में अनास्था, अस्वीकार, कुंठा, संत्रास वगैरह के फैशनो कहि के विरोध कइल गइल आ लगभग ओह के आस्थावादी का रूप में प्रस्तुत कइल गइल। कहल गइल, ई अपना जमीनि से जुड़लि बा। एही घरी हिन्दी में भूखी पीढ़ी, नंगी पीढ़ी, क्रुद्धपीढ़ी, बीट पीढ़ी, श्मशानी पीढ़ी के नारा उछललन सँ। 'समकालीन कहानी' के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नारा लागल। सन् ७५ से 'समानान्तर कहानी' लेखकन के एगो गोल उपटल। प्रचार, बहस, नारा, घोषणा तेजी से फइलल। वाम कतारि आम आदमी के उछललसि। अच्छी कहानी, जनवादी कहानी आ सन् ८० आवत आवत ले हिन्दी में 'सक्रिय कहानी' के नारा मैदान में आ गइल। एह में जीवन का कुछ जुझारू मूल्यन पर जोर दिआइल आ एह तरह से खूब गहमा-गहमी में हिन्दी कहानी के पिछला तीस बरिस सरकि गइल। भोजपुरी के संवेदनशील कथाकार लोगन पर का एकर कवनो प्रभाव ना पड़ल ? पड़ल, मजिगर रूप में पड़ल, एकरा के निश्चित रूप से कहल जा सकेला।

सन् १९७१ ई० में ईश्वरचन्द्र सिनहा के कहानी संग्रह 'गहरेबाजी' छपल। एह संग्रह का 'कथा-यात्रा से गुजरत हमरा ई लागल रहे कि एह संग्रह का कहानी में प्राचीन आ आधुनिक सभ तरह के प्रभाव आ प्रवृत्ति वाला कहानी आ गइलि बाड़ी सँ। ओह में कहानी के आदि रूप, प्रेमचन्द पूर्व रूप, प्रेमचन्द युगीन रूप आ प्रेमचन्दोत्तर कहानी का रूप का संगे-संगे आधुनिको कहानी के रूप बा। हम विस्तार का साथे चर्चा कइले बानीं कि एह संग्रह के 'राधा गावत हौ,' में 'नयी कहानी' आ 'दसखत' शीर्षक कहानी में 'अकहानी' के मुद्रा उभरलि बा। 'राधा गावत हौ' के स्वादे कुछ अउर किसिम के बा। एह कहानी के भोक्ता यानी नैरेटर सीरीकिसुन बाड़े। आ पाँच वरिस बाद एगो बड़हन अफसर होके बनारस लौटल बाड़न, आ इहाँ क्लार्क होटल में टिके के जोगाड़ कइले रहलन। ओने मन में ललक उठलि कि दारानगर का सहुआइन का धरे चलीं। उहाँ विद्यार्थी जीवन बीतल रहे आ बहुत मिठास भरलि एगो याद बनलि रहे कि उहाँ एगो सुधर सलोनी राधा भउजी रहली। कई दिन आग-पाछ करत एक दिन लकदम वर्दीवाला शोफर का संगे होटल के इम्पाला गाड़ी दारानगर का ठेकाना पर चोंहपि गइलि। सहुआइन त ओइसहीं मिलली, बाकी भउजी के का भइल ? उनकरा उजड़ल सौभाग्य के भीतर घाव तव लोक-गीत का एगो कड़ी में तेज व्यंग्य वनि के पाठक के झकझोरे लागत बा। भोक्ता का मन का भीतर वाली राधा आ यथार्थ वाली राधा के टकराहट गजब के रोमांच पैदा करति बा। एगो पूरा परिवेश में लपिटाइलि जिन्दा सम्वेदना धनधोर मर्म वेदना बनि के पढ़वैया के तिलमिला देति बा आ एह तरह से 'नयी कहानी' के अनुभूति वाली अन्तरयात्रा पूरा हो जाति बा। इहे हालि 'दसखत' के बा। ओके भोजपुरी के पहिलकी 'अकहानी' कहल जा सकेला। दरअसल 'अकहानी' एगो खास तरह के मानसिकता के कथा-चित्र के नांव हवे। अइसन मानसिकता के सिनहाजी अपना कहानी में निगिचा से आमने-सामने हो के मजेतरे देखले बाड़न। एह कहानी के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नैरेटर रोज-रोज का घिसल-पिटल जिनिगी के, ओकरा कठिनाई के प्रामाणिक भोक्ता बा। सगरी जिनिगी विसंगतियन के अम्बार हो गइलि बा, जवना का धक्का से सब कुछ टूटि फूटि के ध्वस्त हो जात बाटे। तब कइसे कहाँ से सझुराई जिनिगी के धागा। मोसल्लम जीवन बेशुमार पीड़ा आ घुटन भरल भद्दगी के रूप हो गइल बा। जब कतहीं कवनो जोड़-तोड़ नइखे त अइसन लटकत उजड़त जिनिगी के चुनौती के कहानी त कवनो अकहानिए कपार पर उठाई। अइसन अकहानी जवना में प्लाट हेरा गइल, मूड हेरा गइल, लेखक खुद हेरा जाई, ओकरा हाथ से कलम छोरा जाई आ अइसन जनाई कि कवनो कहानी ना लिखा के लेखक खुद लिखा गइल। अइसन बा ई 'दसखत', मध्यवर्गीय जीवन का व्यर्थता-बोध का कड़वाहट भरल दस्तावेज पर दसखत।

भोजपुरी कहानी पर अकहानिये तक नाहीं' तमाम-तमाम तरहके नवका कथा आन्दोलन के प्रभाव खोजल जा सकेला। काहे से कि भोजपुरी के ग्रहण-शक्ति बहुत तगड़ा परेले। ऊ समसामयिक हवा में से अपना अनुकूल रस खींचि लेवे में कबो ना चूकेले। हिन्दी कहानी में आइल अंग्रेजी स्टोरी के रचना-विधान केतना दिन में पकहर होके आस्वाद का निरवार पर चोंहपल आ ओह रचना-विधान के ई भाषा खड़ा होते-होत में पचा लीहलसि। भोजपुरी कथा-साहित्य का विकास का चर्चा का सिलसिला में ओकरा रचना-विधानो पर चर्चा होखे के चाहीं। ई भाषा हिन्दी भाषा के एगो अंग हऽ। एह कारण से जब ओकरा रचना विधान का बारे में कुछ चर्चा करे के मोका मिलल बा त चट से हिन्दी कहानी का रचना विधान पर ध्यान चलि जात बा। ई स्वभाविको बा। काहें से कि एकरा विकास के ऊहे जरि बा। सवाल ई उठावल जा सकेला कि भोजपुरी कहानी के रचना विधान ठीक ऊहे बा, जवन हिन्दी में चलल आवत बा कि भोजपुरी कहीं कवनो आपन फरका डहरि बनवले बा? अब त एह भाषा में सृजनात्मक साहित्य के टोटा नइखे आ मजिगर दमदार कहानी ढेर-ढेर लिखाइलि बाड़ी सँ। तब समय आ गइल बा कि एह पर विचार होखे के चाहीं, तबे विकास के ग्राफ ठीक-ठीक बनी आ तबे ओह विकास का चलते एह भाषा का कहानिन के अपना निजी मौलिकता आ पहिचान के खोजे के उत्साह मिली। ओइसे त हिन्दी कहानी का शैली आ ओकरा रचना-विधान पर हम भरपूर रूप से पश्चिम के प्रभाव देखि रहल बानीं आ ऊ अपना भारतीय कथा परम्परा से अलगा फेंकाइलि बा, बाकी ई कवनो जरूरी नइखे कि भोजपुरी में ठीक ओकरे नकल होखे। कई माने में भोजपुरी कथा-साहित्य के विकास अपना स्वतंत्र गति से हो रहल बा। ई स्वतंत्रते ओकर जीवनी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शक्ति बा। एकरो विश्लेषण होखे के चाहीं। काहे से कि आजु स्वतंत्रता के नारा त बुलन्द वहुत होत वा, बाकी बेवहार में स्वतंत्र रहल वहुत कठिन वा। कवनो भाषा के निरपेक्ष आ एकान्त स्वतंत्रता के अर्थ होई मृत भाषा! भोजपुरी मृत भाषा ना हऽ। हिन्दी त अउरी जीवन्त भाषा हऽ। देशी के के चलावे ऊ विदेशियो प्रभाव के एह रूप में अपना लेले, जइसे ऊ अपने हऽ। हिन्दी कहानी साहित्य के विकास के कहानी इहे बतावति बा। शुरू शुरू में हिन्दी कहानी पर ओ हेनरी, चेखव, मोपासा आ समरसेट माम जइसन पच्छिमी दुनिया का जानल मानल कहानी लिखवइयन के छाप परल। कहानी के एगो नापल जोखल ढाँचा ओने से मिलल आ एह ढाँचा में भारतीय परिवेश के ढारि-ढारि आदर्शवादी कहानी तैयार होखे लगली सँ। कहानी क ई पच्छिमी ढाँचा आजु तलक ले हिन्दी कहानी में ओइसे अपनावल चलि जात रहल हऽ जइसे अपने हऽ। बाकी सन् १९५० का बाद एह ढाँचा पर झटका लागल आ ऊ टूटे शुरू हो गइल। अब हाल ई बा कि ऊ ओ हेनरी वाला ढाँचा हिन्दिये में ना, भोजपुरियो में टूटि गइल। एह ढाँचा में पंचतत्त्व के प्रधानता होखे। आरंभ, द्वन्द्व आ विकास, चरमविन्दु (कलाइमेक्स), उतार आ अन्त। ई पंच तत्त्व जइसे 'इन्दुमती' (किशोरीलाल गोस्वामी), 'उसने कहा था' (गुलेरी), 'आकाश दीप' (प्रसाद) आ 'ईदगाह' (प्रेमचन्द) में बाटे ओइसहीं एकर अस्तित्व भोजपुरी कहानी 'परमपद' (विमलानन्द सरस्वती), 'मछरी' (रामेश्वर सिंह काश्यप), 'अब ना, (अनिल कुमार आंजनेय) आ 'भैरवी क साज' (ईश्वर चन्द्रसिनहा) में साफ देखल जा सकेला। बाकी ईहो साफ बा कि एह पश्चिमी ढाँचा के भोजपुरी कहानी में ओतना ख्याल नइखे राखल गइल जेतना हिन्दी में बा।

ई अचरजे वा कि जवना ढंग के स्वच्छन्दता खड़ी बोली हिन्दी में सन् ५० का बाद वाली कहानी में आइल बा, ओह ढंग के सहज स्वच्छन्द रंग भोजपुरी कथा साहित्य पर जनमते लउके लागल बा। भोजपुरी के कुछ विद्वान कहानी लेखक रचना करत में ओकरा शास्त्रीय विधान आ ढाँचा का बारे में सजग रहेलन, बाकी सामान्य संवेदनाशील लेखक लोग वहुतर ओकर उपेक्षा करत चलेलन। भोजपुरी का कहानी का जनम वाली अवधि अइसनि बा कि ओही घरी हिन्दी के कहानी एड़ी चोटी ले बदलि गइलि। कहल गइल कि जइसे अदिमी अपना जिनिगी में उखड़ि गइल बा, ओसइहीं कहानियो उखड़ि गइलि बा, टूटि गइलि वा। ओही घरी पंचतत्त्वन में से केतने तत्त्व बिला गइले सँ। कवो व्यवस्थित सामाजिक जीवन रहे, जीवन के कवनो उद्देश्य रहे त कहानियनो में व्यवस्था रहे, कथानक रहे, उद्देश्य रहे आ चरित्र रहे। अब मौजूद टूटन का दौर में हिन्दी कहानी में से ई तीनों तत्त्व लुप्त हो गइले। अब जीवन में उदासी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुंठा, संत्रास आ व्यर्थता बोध वगैरह का चलती में कतहीं जीवन के नायक ना रहि गइले, कवनो आदर्श ना रहि गइल। एह स्थिति के प्रभाव कहानिन पर लउकल कि नायक ढहि गइल। आदर्श ढिमला गइल आ कथानक छितिरा गइल। कहानी अनगढ़ हो गइलि। पुरान जीवन मूल्य जइसे प्रेम, सेवा, त्याग आ मानवता आदि टूटि के लुप्त हो गइल। नया मूल्य उपटि गइलन सँ जइसे विद्रोह, अस्वीकार, मुक्त भोग, अव्यवस्था आ अप्रतिबद्धता आदि। बेहआई नंगई कले-कले मूल्य नियर उभरे लागलि। कहे के मतलब कि ई कुल्हि मिलि के कथा विकास क्रम में आधुनिकता का नाव से हिन्दी कहानी में सन् ५०-६० का बाद खूब धूमधड़ाका का संगे आइल। अब भोजपुरी कहानी में ओह लाइनि के खोज होखे के चाहीं कि कब कइसे आ केतना ई आधुनिकता ओकरा कहानी-साहित्य में ढुकलि बा।

ओइसे त भोजपुरी कहानी में आदर्शवाद अइसन गोड़ तूरी के बइठल बा कि सन् १९८२ तक का छपल कहानिन में ओकर रंग उपरा जात बा, बाकि असलियत ई बा कि यथार्थवाद अपना सँउसे फुल पलिवार का संगे तमाम संसार भर का साहित्य पर आपन सिक्का जमवले बा। भोजपुरी भाषा ओकरा असर से अपना के कइसे बचा सकेले ? लोक जीवन, लोक संस्कृति, लोक चेतना, गाँव आ कृषि से तनिक अधिक सटला का वजह से एह भाषा का कहानिन में आदर्शवाद के तनिक अधिक जमाव जरूर माने के परी। बाकि एही का संगे पिछड़ापन, गरीबी, बेकारी, असुविधा, रोग, पीड़ा, शोषण, अनादर, बेहाली आ अनेकमुखी दुर्भाग्य के काफिला बा, जवन भोजपुरी का मुल्क में स्थायी रूप से वास बनवले बा आ अइसन ठोस; कड़ेर यथार्थवादी जमीनि बनलि बा कि भोजपुरी कहानी लेखक लोग ओकर अनदेखी कइलो चाहसु त ना कइ. सकेलन। तब एह दोहमच का स्थिति में का कवनो नयी लच्छनि एकरा कहानी-रचना में विकसित भइलि बा ? प्रत्यक्ष रूप से त इहे लागत बा कि एह भाषा के बोले वालन के जिनिगी के सिधाई आ सरलता बहुत दूर ले भीतर से एकरा कहानी रचना के प्रभावित कइले बा आ बहुत जटिल बनावट वाली कहानिन के भोजपुरी में अभाव बा। ओह में दोहरा-तेहरा कथानक ना मिली। आदि-अन्त पर सरल इतिवृत्तात्मकता छपले बा। मध्यवर्ग तनावो में आधुनिक सभ्यता का संगे उपटलि मनोवैज्ञानिक संघर्ष आ द्वन्द्व वाली प्रवृत्ति कम लउकी।

का वजह बा कि हिन्दी कहानी का समान चौकस चुस्त नागरिक तेवर आ संश्लिष्ट बनावट भोजपुरी कहनिन का साहित्य में नइखे उतरति ? कारन सभ बा। कवनो भाषा का साहित्य-विधान पर ओकरा बोले वालन का परिवेश आ जीवन शैली के छाप होले। अंग्रेजी स्टोरी पर उभरल इंगलिश जीवन के कटल-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छँटल, टीपटाप आ चुस्त-दुरुस्त रंग छनि के अंग्रेजी राज में खड़ी बोली हिन्दी पर उतरल आ ओकरो कहानिन में चरमबिन्दु (क्लाइमेक्स) का एने-ओने चढ़ाव उतार होखे लागल। ग्रामीण तेवर से भरल पूरल भोजपुरिहा जीवन में कवनो आधुनिकता वाला गंभीर आ चौकस उतार—चढ़ाव होइबे ना करेला, तब ओकरा कहानिन में कइसे आई ? इहे वजह बा कि भोजपुरी कहानी का बुनावट में आदि-अन्त आ तनाव त होला, बाकी बीच वाला तीनि गो तत्त्व, जइसे विकास, चरमबिन्दु आ उतार बहुता ना होला। जानि बूझि के नाहीं, ओकरा ढाँचा में ई विशेषता सहजे में आ गइलि बा। बहुत सूझ-बूझ का संगे हिन्दी कहानी रचना-विधान के ध्यान में राखत केहू भोजपुरी के कहानी लेखक आगे बढ़ेला त ओकरा कहानी में जरूर ढाँचा के पाँचो पड़ाव आ स्तर उभरि जालन सँ, बाकि अइसना कहानिन के संख्या कम बा। भोजपुरी कहानी का मूल प्रकृति से ई पंचा शायद मेल नइखे खात। असल में ई पाँचो मोड़ बिन्दु तबे होई जब कहानी में जटिलता आई। अब तलेक प्राय: भोजपुरी कहानी जीवन का समानान्तर सीधे-सरल रहि गइलि बा जवना के सपाट वर्णनात्मकता कहल जाला, ऊ एह भाषा के कहानी साहित्य में बहुत सघन बा।

संश्लिष्ट बनावट वाली आ आरंभ, विकास, चरमबिन्दु, उतार आ अन्त सहित, आनी स्पष्ट रूप से पंचतत्त्व से भरलि-पूरलि कहानिन में हमके सभसे सफल आ प्रभावशाली कहानी रामेश्वर सिंह काश्यप के 'मछरी' जनाइलि बा। एह कहानी के आरंभ ओह जगह से मानल जाई जहाँ बाहर का मोहक प्राकृतिक परिवेश में चोंहपि के घर का दमघोंट वातावरण के कुन्ती इयादि करति बा, 'घर के इयाद आवते कुँती के जीव उदास हो गइल, जइसे खँखार पर गोड़ परि गइल !' आगे इयादि के सिलसिला फ्लैश बैक में, कहानी का तनाव—विकास का रूप में शुरू होत बा। इयादि आवत बा—बचपन, माई के मउअति, सवतेली माई के सासति, बिआह के सपना, चढ़लि जवानी, बिछिलाइल गोड़ आ ठीक ओही घरी बाबू आ नवकी माई के फुसफुस बतकही कि बिआह के कवन जल्दीबाजी बा। कवनो मछरी ना ह कि सरि जाई, आ एह तरह से बिआह रोकि के ढेर दिन ले लंउड़ी नियर खटावे के षड़यंत्र! ऊ कुल्हि सोचि-सोचि के, इयादि कइ-कइ के कुँती का रोवला तकले कहानी के विकास होत चलि गइल बा। एकरा बाद चट से चरम-बिन्दु आवत बा। ऊ सोचति बा कि ओह घरी कहि देवे के चाहत रहे, 'बेटी मछरी ह बाबू जी, पानी का बहरा कब ले जीही ? सरी ना त बिलाई ले भागी, 'कहानी के पूरा स्वाद आ तिरिपिती इहाँ मिलि जाति बा, बाकी प्रभाव के समष्टि रूप में अउरी गहिरा करे खातिर कहानी आगे बढ़लि बा। तेज उतार में ओकर रोआई, ओकरी माई के सवाल आ प्रेमी मिलनुआ के भगला का संगे-संगे तुरन्ते कुन्ती के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुअर्थी गंभीर जवाब वाला अन्त कि 'कुछ नारे माई, बिलार रहे एगो।......भाग; बिल बिल ....।' एह कहानी में ई अन्त बहुत सार्थक बा। काहे से कि क्लाइमेक्स वाला मछरी—बिलार के प्रतीक इहाँ बिअंग हो जात बा। बिलार के बिल-बिल कइके भगावे में ओकरा के अपनावे के व्यंजना हो जाति बा। विकास का आखिरी छोर से अन्त जुटि जात बा। एह तरह से हिन्दी अंग्रेजी का कहानी वाला परिनिष्ठित शास्त्रीय ढाँचा एह कहानी में बहुत कसल रूप में मिलत बा। ईश्वरचन्द्र सिन्हा का कहानी 'गहरे बाजी' में आ डॉ० अनिल कुमार आंजनेय का कहानी 'अब ना' में एही तरह के कसल कसावल शास्त्रीय ढाँचा लउकत बा। 'अब ना' में 'मछरी' नियर फ्लैशबैंक के प्रयोग बहुत सावधानी से कइल गइल बा जवना से कहानी बहुत संश्लिष्ट आ प्रभावशाली हो जाति बा।

अंग्रेजी-हिन्दी का एह ढाँचा में ई विशेषता होले कि कवो कवो क्लाइमेक्स (चरमविन्दु) से आगे ना बढ़ेले आ ठीक ओही पर जाके चट से खतम हो जाले। भोजपुरी का कहानीअनो में ढाँचा के अइसन खूबी कहीं-कहीं लउकत बा। हम थोरे में एकरा के सिद्ध करे खातिर पी० चन्द्र विनोद के कहानी 'हम कुन्ती ना हईं' के चर्चा करवि। हँ, एह कहानी में एगो बहुत तेज, झपट्टामार, सनाका आ कौतूहल भरल आरंभ बा।—'लोचना लेके गयल ठाकुर जब अपना लेखा मुँह बनवले चल आइल, तब कान्ती का माई के तराह भगवान लाग गइल।' एह आरंभ का बाद विकास के तनाव शुरू होत बा। कहानी लेखक फ्लैश बैंक का सहारे परिवार के गरीबी, कान्ती के बिआह, दहेज के ठकठेन, नैहर के दुर्घटना, धोखा से अपना मरद का बहाने पर पुरुष से जामल बेटा, आ लोचना भेजइला के सभ वर्णन कइला का बाद तनाव का असली जगह पर लौटत बा। परिवार आ गाँव के अपमान से बचावे खातिर समझदार लोग उपाय निकालत बाड़े कि लोचन गइला के नकार दीहल जाव आ जातक के काम तमाम कइके कान्ति के पवित्र कइ दीहल जाव! ठीक एकरे बाद एह कहानी के चरम बिन्दु आ जात बा, जहाँ कहानी खतम हो जाति बा। काम तमाम करे खातिर गोतिया लोग कान्ति आ ओकरा लइका के खोजते रहि गइलन। ऊ दूनो ना भेंटाइल। हाथ लागल एगो चिट्ठी जवना में खाली एतने टाँकल रहे 'हम कुन्ती ना हईं।' अब साफ बा कि इहाँ निखालिस चरम-विन्दु उभरल बा। एह के अन्त ना कहल जा सकेला। काहे कि अन्त में कवनो ना कवनो इतिवृत्त से भरल आदर्श, परिणाम, समाधान वगैरह जइसन सम्पूर्णता होले। उतार का बादे अन्त आवेला। चरमविन्दु हमेशा उतार का बिना आवेला। एह कहानी में उतार आ अन्त रहित चरमविन्दु के बहुत ठीक जगह पर उपस्थित कइल गइल बा। हिन्दी के प्रसिद्ध कहानी 'उसने कहा था' अइसहीं चरमविन्दु पर खतम भइलि बा। अइसन कहानी बहुत चुस्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ प्रभावशाली मानलि जाली सँ। पंच तत्त्व में से पहिलका तीनिये के लेके एह ढंग के रचना कुछ अधिक कलात्मक मानलि जाले आ बहुत सूक्ष्म सूझ-बूझ एकरा खातिर चाहेले। तीनिये पर अन्त भइलो पर ई अँग्रेजी का ओही पँचखड़िया ढाँचा का भीतर मानल जाले।

बाकि भोजपुरी कहानिन के आपन प्रकृति जवन एकरा कहानी-साहित्य में जोरदार रूप में उकसलि बा, ऊ अँग्रेजी—हिन्दी कहानी रचना-विधान वाला ओह पँचखड़िया ढाँचा के बेहतर नइखे मानत। ओह में एगो आपन तीन खड़िया ढाँचा जियादे लउकत बा। एकर रूप होला; आरंभ, विकास आ अन्त! विकास में द्वन्द्व चाहें संघर्ष के पूरा तनाव वाली स्थिति आ जाले। एह तरह के ढाँचावाली कहानी में सपाट सीधा आ वर्णनात्मक होखे के सुविधा ज्यादे होले। कवनो टेढ़ मोड़, घुमाव, पेच आ जटिलता ओह में होइबे करो, ई कवनों जरूरी ना होला। ई बात भोजपुरी कहानी का हक में परेले। काहे कि ओकर प्रकृति सिधाई—सरलता वाली बा। तबो, अपना सीधा बनावट सें एह ढंग के कहानी भरपूर असरदार होली सँ। भोजपुरी कहानी के निजी प्रकृति फ्लैश बैक के ऊँच पीढ़ा नइखे देति। एगो अउरी विशेषता एह कहानिन में विकसित भइलि लउकति बा। उन्हनी का आरम्भ में जादेतर इतिवृत्त लउकत बा। नाटक, नीति, चित्र, कूतूहल आ सूचना वगैरह जइसन आरंभ कम बा। चतुरी चाचा के प्रसिद्ध कहानी 'भँइसि के दूध' एगो नीति भरल इतिवृत्त से शुरू होति बा आ परिनाम पर जाके अन्त होति बा। एकरा बीचे कहानी के तनाव बा जवन क्रमशः सकस-सघन होत गइल बा। दूबर करेज काढ़ि के भँइसि ले अइलन कि उनकर टूअर आ पेटपोंछना लइका भीम दूध पी के तगड़ा हो जइहें। एकरा साथे-साथे पलिवारो के पालन होई। एने पलिवार अइसन निकलल कि कुल्हिए धोइ-पोंछि के चाटि धाले। अपना-अपना स्वारथ के अइसन चरखा नधाइल कि भँइसि दूबर का जीव के जवाल हो गइलि। दूध, दही आ घीव के चोरी बढ़ि-बढ़ि के होखे लागलि। एने महाजन अइसन भेंटाइल कि बइमानी से करजा के दोहरिया दीहलसि। दूबर के करिहाँइ टूटि गइलि आ भँइसि सूदिए में हाँकि के चलि गइलि महाजन का घरे।

चतुरी चाचा सामान्य कहानी का अलावे जवन व्यंग्य आ फन्तासी भरल कहानी लिखले बाड़न, ओहू में अइसने सीधा हिसाब बा। 'सपना के सम्पति' कहानी में आदि अन्त का बीचे सपना बा आ ईहे कहानी के तनाव बनि गइल बा। एकरा अन्त में समाधान बा। आरंभ में लोककथा जइसन बनावट बा। 'पेट के पाप' शीर्षक कहानी प्रकृति का चित्र से शुरू होति बा। एकरा अन्त में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चमत्कार बा। बीच का तनाव में गहिरा सस्पेंस बा। कहानी के कुल्हि तनाव एही बाति पर ठाढ़ बा कि सरेहि का बीचे पुलिया पर कवन मरद-मेहरारू के जोड़ी अनमुन्हारे खड़ा लउकति बा ? चतुरी चाचा के सबसे मजेदार फन्तासी कहानी 'ठूँठा पीपर' बाटे। एकरो रचना में फन्तासी वाला अर्थ छोड़ि दीहल जाव त बाकी कुल्हि सीधा-सीधा वर्णन बा। कहानी एगो तमाशा भरल सूचना से शुरू होति बा कि परती के ठूँठ पीपर हरिहर हो के खड़ा हो गइल। एह आरम्भ का बाद तनाव शुरू होत बा। जइसे ऊपर का एगो कहानी में पूरा सपना तनाव बनल बा, ओइसहीं एह रचना में एगो लोक-कथा तनाव के काम कइ रहलि बा। ओह ठूँठा पीपर के रहस्य लोककथा का मुँहे खुलत बा। बाद में समाधान सामने आवत बा। ई समाधान भरल अन्त एह रूपमें बा—'हम सोचलीं कि आजुओ के राज त ठूँठा पीपरे नियर बाटे—फरेफुलाये के त बा ना, बेंवत से काम निहल जाई त किछु हाँथे लागि जाई।'

ब्रजकिशोर जी के कहानी 'बालू के भीति' में बहुत साफ ढंग से आरंभ, तनाव आ अन्त के हिसाव उभरल बा। भारी अगराहट में मार्केटिंग कइला का बाद विमल आ रंजन के मालूम भइल कि उनकर कार गायब हो गइलि बा। ई कहानी के समस्यात्मक आरंभ भइल। तनाव में कार का खोजाई में कार का संगे लफंगना के गोल मिलत बा। जवन कार का संगे ओकरा मालकिन रंजना के पिस्तौल का नोक पर उड़ा ले जात बा। फेरू प्रशासन का देउढ़ी पर दौड़ धूप के तनाव शुरू होत बा आ अन्त में दूसरा दिने सबेरे कार रंजना के लाश लदले फाटक पर मिलति बा। रामवृक्ष राय 'विधुर' के कहानी 'चकरोड' आ रामनाथ पाण्डेय के कहानी 'अन्हरिया छपिटात रहे' आ वीरेन्द्र पाण्डेय का 'दरबा' में अइसने ढाँचा बा। 'दरवा' का आदि-अन्त में बहुत गहिरा तालमेल बा। ओकर मध्य वाला तनाव एगो भारी व्यंग्य बनि के उभरल बा। कहानिन का एह तरह ढाँचा के प्रभाव बहुत सीधा आ सटीक होला।

एह पाँच आ तीन स्तर वाला ढाँचा का बाद भोजपुरी कहानी के ओह ढाँचा का बारे में थोरकी विचार कई लीहल जाव, जवना में कवनो ढाँचा नइखे भा कुल्हि ढाँचा टूटि गइल बा। एह ढाँचावादी विद्रोह के प्रवृत्ति भोजपुरी कहानिन में विरल नइखे। अब सवाल ई बा कि जब आदि अन्त आ तनाव वगैरह के ढाँचा नइखे त एह कहानिन में का बा ? असलियत ई बा कि हिन्दी कहानी नियर एह सम-सामयिक दौर का नयकी भोजपुरी कहानिन में सिर्फ स्थिति आ परिवेश के चित्र रहि जाला जवना का भीतर उभरलि विसंगतियन से पाठकीय चेतना के सीधा टकराव होला। एह तरह से कहल जा सकेला कि अइसना स्थिति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रधान कहानिन में सिर्फ आदि से लेके अन्त तक तनावे-तनाव रहेला। तत्त्व का रूप में आदि आ अन्त के व्यवस्था ना होखेले। उहो तनाव के अंग बनि के खपि जाला। हमार कहानी 'छत के तलाश' अइसने कहानी ह। आधुनिक दौर का एह नयी कहानी से जवन ऊ कहानी सचेतन कहानी आ समकालीन कहानी वगैरह के शाखा फूटली स ओकरा बारे में पहिले कहा चुकल बा। तब एक नजर देखीं त, कइसन कहानिन के ढाँचातोड़ विकास भइल बा। पहिले पाँचि गो तत्त्व, आदि, विकास, चरम बिन्दु, उतार आ अन्त! ओकरा बाद चरमबिन्दु आ उतार आदि के सिर्फ तीनिये गो रहि गइल आ ओकरा बाद ओह तीनि में से दूगो आदि आ अन्त झरि गइल त खाली विकास बाँचल! यानी केतना चुस्त विकास भइल? देश का विकास नियर तमाम तत्व झरि गइल त बाँचि गइल निछाने 'विकास!' ई विकास जब कथा साहित्य में लवटल त एही के नांव भइल विद्रोह! नाना तरह के विद्रोह, विधा के विद्रोह, भीतर के बाहर के! नैतिकता का खिलाफ, व्यवस्था का खिलाफ, समाज का खिलाफ, शोषणमूलक संस्कृति का खिलाफ, आ परम्परा का खिलाफ! भोजपुरी कहानिन में ई विधा विद्रोह धीरे-धीरे उभरल बा। कहानी में आके ई विद्रोह सबसे पहिले अपना निजी ढाँचा से विद्रोह कइके टकराइल आ टूटि गइल। पहिले-पहिल पुरान बोध कथा, नीतिकथा पढ़े वालन के जइसे प्रेमचन्दी कहानिन के तेवर ना रुचल ओइसहीं प्रेमचन्दी कथा मानसिकता वाला लोगन के नयी कहानी के मुद्रा ढेर दिन ले अनजान नियर अनकुस लागे। बाकी अब त सभ ओही हवा में हिलत बा। 'राधा गावत हौ? आ 'दसखत' के चर्चा पहिले कइल जा चुकल बा। अब कुछ नया ढाँचातोड़ भोजपुरी कहानिन के देखल जाव।

अविनाशचन्द्र विद्यार्थी का कहानी 'मूँड़ी गड़ाइले रहीं' आ पी० चन्द्र विनोद का कहानी 'तरक्की' में समग्र विकास वाली ढाँचातोड़ नयी कहानी के स्वाद मिली। एह कहानिन में समय का संगे सघर्ष होत बा। चरित्रन के संघर्ष वाला कल्पना के युग बीति गइला का बाद कहानिन में ई एक तरह के 'डायरेक्ट एक्शन' वाला बहुत प्रभाव शाली रूप निखरल बा। एगो अन्तर विरोध भरल स्थिति सामने पेश कइ के कथाकार सामने हटि जाई आ अइसन 'प्वाइन्ट पर पढ़वैयन के ठाढ़ कइ दी कि ऊ खुद देखो, एह भद्दी स्थिति में ऊ कहवाँ बाटे? ओकरा सोझा आत्म साक्षात्कार नियर परिदृश्य उगि जाव? चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह का कहानी 'बड़प्पन' में कुछ अइसने शिल्प उभरि के सामने आइल बा। ओह शिल्प में नयी कहानी के भरपूर संवेदना बा। ई रेखाचित्रात्मक कहानी हिन्दी कहानी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का प्रसिद्ध 'लघुमानवोन्मेष' वाली प्रवृत्ति से भरलि बा। लेखक एगो गरीब टमटम वाला का भीतर धनी डाक्टर से अधिका मनुष्यता देखत बा। शुरू से आखिर तक कसल एगो स्थिति के ई चलचित्र बहुत साफ आ प्रभावशाली बा। अइसने 'लघुमानवोन्मेष' ब्रजकिशोर जी का कहानी 'खनतलाशी' में बा। बाकी एकर ढाँचा नयी कहानी के नइखे बनि पावल। मुसहरन का जीवन के यथार्थ बहुत तेज ढंग से एह कहानी में सामने उपस्थित कइल गइल बा। नयी हवा के आहट बा। उन्हन का प्रतिरोध वाली शक्ति के जगावल गइल बा। एह स्थिति प्रधान कहानी में यदि इचिकी भर फ्लैश बैक के प्रयोग भइल रहित आ आखिर वाला हिस्सा के पहिले पेश कइल गइल रहित त एकर ढाँचा टूटि गइल रहित आ ओकरा टूटला का साथे-साथे सर्वहारा के टूटन के रोमांचक चित्र चटक रूप में उभरि गइल रहित। असल में जहवाँ कतहीं नया कहानी लेखक छोटमनई के, शोषित, पीड़ित आ अदेख उपेक्षित जीव के देखेला, चट आपन भीतरी संवेदना रेखाचित्रन में उरेहे लागेला। रेखाचित्रात्मकता नयी कहानी के एगो प्रमुख विशेषता ह जवन सीधे ओही घरी, भोजपुरी कहानी में उतरि आइलि। हिन्दी के पहिली 'नयी कहानी' शिवप्रसाद सिंह के 'दादी माँ' रेखाचित्र ह। ऊ कहानी एह कथाकार का जवना पहिलका कहानी संग्रह 'आर-पार की माला' (1955) में छपलि बा ओह में ढेर सारी कहानी रेखाचित्रे का रूप में उरेहलि बाड़ी स। अइसहीं भोजपुरी का पहिला कहानी संग्रह 'जेहल क सनदि' में रेखाचित्रने के दुन्दुभी बाजति बा। मलिकार, मवनी बाबा, कतवारू दादा, आ सनकी आदि कहानी के शीर्षक बतावत बाड़न स ई कुल्हि रेखाचित्र हवन स। सन् 81 में छपल 'सेसर कहानी भोजपुरी के' उठाके देखीं त, सुखिया, सिकरिया, पगला तिवारी, कुंदनसिंह आ केसर बाई, चिखुरा, बैंजुआ, सरंगा आ हरीश जइसन शीर्षक रेखाचित्र के अतापता बिना पढ़ले बता देत बाड़न स। अइसने हालति उपन्यासो में पहिलें देखल जा चुकल बा। तब ई कहल सही होई कि हिन्दी नयी कहानी नियर भोजपुरी का नयी कहानियो के एगो प्रमुख प्रवृत्ति रेखाचित्रात्मकता बा। एह रेखाचित्रन के उत्साह अइसन तेज बा कि जइसे प्रेमचन्द दूगो बैल के कहानी लिखलन त नयी कहानी में मार्कण्डेय 'ढसरवइया' में एगो बैल के आ रेणु 'तवे एकला चलो' में एगो पाड़ा के वर्णन कइलन ओइसहीं प्राध्यापक अचल अपना कहानी सिकरिया में एगो कुत्ता के रेखाचित्र उभारि के रखि दीहलन। एह तरह से साफ बा कि भोजपुरी कहानी हिन्दी नयी कहानी का संगे आँखि खोलि के ओकरा प्रमुख प्रवृत्तिन के आत्मसात त करे लागलि बाकी कई क्षेत्र में काफी फरको लउकत बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एह कुल्हि के विस्तृत अध्ययन बहुत मनोरंजक होई। भोजपुरी कहानी लेखक अपना कहानिन के तेज आ दमदार करे खातिर कुछ नया प्रयोगो कइले बाड़न त बहुत कुछ परम्परा वाला पुरनको समेटले बाड़न। हिन्दी में चरित्र-चित्रण, द्वन्द्व, प्रत्यक्ष चित्रण, नाटकीय कथोपकथन, मनोवैज्ञानिक चित्रण, परिवेश चित्रण वगैरह के प्रयोग भइल बा। भोजपुरी में कृषि परिवेश, ग्राम परिवेश आ आंचलिक तत्त्व के अधिकारी भइला से ओकरा शीर्षक रचना, शिल्प, संवाद, तनाव, ढाँचा, चित्रण, वातावरण आ आस्वाद का पृष्ठभूमि में आधुनिक बोध से जुड़लि हिन्दी कहानिन से अन्तर बा। एह अन्तर के समाज-वैज्ञानिक आ मानवीय अध्ययन दूनो भाषा का कथा-साहित्य का माध्यम से होखो त बहुत-बहुत चौंकावेवाला निष्कर्ष निकलि सकेलन स।

एह रूप विकास का चर्चा का बाद अब भोजपुरी कहानिन का प्रगति विकास पर रचनात्मक दृष्टि से विचार होखो। अइसन जनात बा कि एह दिशा में तीनि उड़ान का बाद तितिल पकड़ाइल बा। कहे के अर्थ ई बा कि एह भाषा का कहानिन के तीनि गो संग्रह (भिन्न-भिन्न लेखकन का रचनन के) छपला का बाद मँजल-मँजाइल रूप में चउथका प्रतिनिधि संग्रह 'भोज-पुरी क साज' (सन् १९६७) प्रकाशित भइल। कुल्हि ओरि से देखले ई सचहूँ प्रतिनिधि आ मानक संकलन रहे आ एकर प्रकाशन भोजपुरी कथा-साहित्य का इतिहास में एगो घटना मानलि गइल। एकरा संगही संगे एकरा छपला से विकास के एगो चरण पूरा हो गइल। १२२ पृष्ठ का मोटा चिकना कागज पर, मजबूत जिल्द में, डबल डिमाई साइज, मोनो टाइप आ कलात्मक रंगीन आवरण पृष्ठ में, अपना समय का अठारह गो प्रति-निधि कहानी लेखकन का रचनन का संगे जब ई संग्रह बाजार में आइल त एह रूप के आत्म सन्तोष जागल कि अब भोजपुरियो का पास कुछ अइसन मूल्यवान साहित्य बा जवना के कवनों भाषा का कहानी-संग्रह का सोझा माथ उँचा क के रखल जा सकेला। काहे से कि बाहरी साज-सज्जा से अधिका दमदार एकरा भीतर के साहित्य रहे। बहुत ऐतिहासिक अवसर पर, एगो ध्यानाकर्षक उछाल नियर एकरा प्रकाशन के ओइसहीं सम्मान मिलल जइसे हिन्दी कथा-साहित्य में कबो विनोद शंकर व्यास का सम्पादन में प्रका-शित 'मधुकरी' नाँव के संग्रह के मिलल रहे। मनोरंजक, समस्या-प्रधान आ ग्रामीण पृष्ठभूमि का सामाजिक कहानिन के ई संग्रह जनमते एगो बीहड़ समस्या उघारि दीहलसि। 'आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी भूमिका में लिख लनि कि 'कुछ कहानी-लेखकों ने कदाचित यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि यह भाषा ठेठ गँवारू भाषा है।' साँच पूछल जाव त ई एगो दोष रहे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जवन महादोष बनिके भोजपुरी कथा-साहित्य का पाछा जनमते से परल बा आ बहुत धकिअवलो का बाद एने-ओने से 'भैरवी क साज' में ढुकल रहे। अच्छा भइल, टोका टोकी वक्त पर हो गइलि। सच में भोजपुरी ठेठ गँवारू भाषा ना ह। ओह में कवनो विकसित भाषा का मुकाबला में जीवन के संघर्ष आ संवेदना सफलता का साथ उतारलि जा सकेले। खुद भोजपुरी लेखकन के हीन भाव ओकरा के हीन बना देव, ई बाति कुछ अउर बा। सूझ बूझ वाला लेखक लोग स्तरीय साहित्य का अनुरूप ओकरा भीतर से गँवारूपन के झारि पोंछि के हटा रहल बाड़न बाकी अबहियों ले ऊ संस्कार जात नइखे। साहित्यिक माध्यम बने खातिर भोजपुरी में नागर तेवर का आवहीं के परी, ओइसन नागर तेवर जइसन एह कहानी संग्रह में काश्यपजी, चतुरी चाचा, उमाकान्त वर्मा, रामनाथ पाण्डेय, 'गिरिजेश' आ ईश्वर चन्द्र सिन्हा आदि का कहानिन में बा। भविष्य का कहानी-विकास खातिर 'भैरवी क साज' एही रूप के प्रकाश स्तंभ बनल।

'भैरवी क साज' का प्रकाशन का दस बरिस बाद भोजपुरी संस्थान पटना से 'प्रतिनिधि कहानी भोजपुरी के' प्रकाशित भइल जवना के सिपाही सिंह श्रीमन्त आ कृष्णानन्द कृष्ण सम्पादित कइलन। एह संग्रह का कुल्हि अठाइस गो संकलित कहानिन में नौ गो कहानी लेखक 'भैरवी क साज' के आ बाकी ओनइस गो नया बाड़न। ओह में बेढब बनारसी से समहुत भइल बा आ एह में आचार्य शिवपूजन सहाय से। माने के परी कि दस बरिस का विकास मे विकसित आ व्यापक दृष्टि एह संकलन का सम्पादक लोगन का पास बा आ एकरा के देखि के सहजे में भोजपुरी कहानी-साहित्य का विकास के पता चलि जात बा। दूनो प्रतिनिधि संकलन का सम्पादकन का दृष्टि में जवन अन्तर बा ऊहो साफ बा। 'भैरवी क साज' का प्रस्तावना में ओकर सम्पादक रामबली पांडेय लिखत बाड़न कि ई संग्रह नयी कहानी आ अकहानी के दावेदार नइखे बनत। उहाँ का ईहो साफ कइ देले बानी कि एह में आधुनिक भाव बोध वाला रचना के रचनाकार लोग नइखे। एह रूप में एकर जवन अभाव सामने आवत बा ओकरा के दूसरका पटना वाला संग्रह दूर करे के संकल्प लेत बा। ओकरा आमुख में संपादक लोगन का ओर से घोषणा कइल गइल बा कि ऊ लोग आधुनिक कहानिन का नया शैली-शिल्प का प्रति बहुत जागरूक बाड़े। भारतीय कहानी में जवन वस्तु आ शिल्प के नया-नया क्षितिज खुलल बा ओकर ऊ लोग स्वागत कइले बा। घोषणा में सचाई बा। विजेन्द्र अनिल, चौधरी कन्हैया प्रसादसिंह, रामेश्वर सिंह काश्यप, विधुर, पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, कृष्णानन्द कृष्ण, तैयब हुसेन पीड़ित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ कन्हैया सिंह सदय आदि जइसन मँजल-मँजल नया कहानीकारन के समेटेवाली प्रवृत्ति ऊपर का आधुनिक दृष्टि के प्रमाण बा। बाकी एक चीज अउर लउकत बा। उमाकान्त वर्मा के कहानी 'सुखिया' दूनो कहानी संग्रह में बा। ई कहानी शुद्ध आधुनिक भाव बोध आ नया जीवन संदर्भ के लेके चललि बा। एकरा में एक ओर जैनेन्द्र कुमार के प्रवृत्ति मूलक दार्शनिकता आ आत्म पीड़ा के भाव बा त दूसरा ओरि नयी कहानी के अन्तर-मुख आधुनिक मुद्रा बा। रूपवादी कथा—शिल्प में कथाकार वैयक्तिक जीवन का यथार्थ के उभारे में जुटल बा। त का पुरान आ परम्परित दृष्टि 'भैरवी क साज' का सम्पादकीय दृष्टिये भर मे बा? कृति ओकरा से आगे बढ़ि के का चुपे-चुपे आधुनिक प्रगति के समेटि ले ले बा? लागत त अइसने बा आ ई भोजपुरी का विकास खातिर शुभ लक्षण बा। जीवन्त आ गतिशील साहित्य ओही के कहल जाला जवना में निहित भविष्य वर्तमान लेखक आ आलोचक का हाथ से सरकि-सरकि जाला।

सन् १९८१ के भोजपुरी कहानी-साहित्य का दृष्टि से बहुत महत्त्व-पूर्ण वर्ष मानल जाई। काहे से कि दू प्रतिनिधि कहानी-संग्रहन का बाद एगो तिसरका तेजी से बदलत समय आ साहित्य का डेग से डेग मिलावत बहुत जागरूकता आ उत्साह का साथे मैदान में आइल। एकर नाँव धराइल 'सेसर कहानी भोजपुरी के।' एकरा भूमिका वाली 'बतकही' में एकर सम्पादक ब्रजकिशोर जी दावा कइलन कि 'एकावन' कथाकारन के जमवड़ा एके जगह पहिले-पहिल जुटल बा। एकरा संगे ऊ अपना सम्पादकीय दृष्टि के स्पष्ट करत कहलन कि एह संग्रह के 'सम्पुट जाप' नियर बनावल गइल बा। बहुत पवित्र भाव से तमाम-तमाम कहानीकारन के अँजलि बनाके भोजपुरी जगत के अर्पित कइल गइल बा। आगे ब्रजकिशोर जी बहुत विनम्रता से लिखत बाड़न कि 'बहुत नीमन-नीमन कथाकार घेरा से बहरा रह गइल बाड़न' बाकी हमके लागत बा कि एह जबरदस्त घेरा में भोजपुरी के जानल-मानल सभे कथाकार आ गइल बा। आचार्य शिव पूजन सहाय, पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, रामेश्वर सिंह काश्यप, उमाकान्त वर्मा, वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय, चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह, रामनाथ पान्डेय, अविनाश चन्द्र विद्यार्थी, जगन्नाथ, सिपाही सिंह श्रीमन्त, प्राध्यापक अचल, ईश्वरचन्द्र सिन्हा, विक्रमा प्रसाद, रसिक बिहारी ओझा निर्भीक, मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' (चतुरी चाचा), गिरिजा शंकर राय गिरिजेश, कामता प्रसाद ओझा 'दिव्य', रामवृक्ष राय 'विधुर,' विवेकी राय, पाण्डेय चन्द्र विनोद, अनिल कुमार 'आंजनेय', जितराम पाठक, सुधा वर्मा, विन्दु सिन्हा, हरि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किशोर पाण्डेय, अरूण मोहन भारवि, कन्हैया सिंह 'सदय', अशोक द्विवेदी, प्रियरंजन, रामेश्वर प्रसाद सिन्हा, ब्रजकिशोर, मधुकर सिंह, तैयव हुसेन पीड़ित, लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी, रूपश्री, विश्वनाथ श्रीकृष्ण, घनश्याम मिश्र, भगवती प्रसाद द्विवेदी, मिथिलेश्वर, पाण्डेय सुरेन्द्र, वच्चन पाठक सलिल, ऋषीश्वर, मुक्तेश्वर नाथ सिन्हा, ब्रजकिशोर दूबे, अरविन्द कुमार श्रीवास्तव, बसन्त कुमार, शिवप्रसाद सिंह, दुर्गा शंकर सिंह नाथ, गुलाव चन्द्र प्रसाद 'अभय', राज वल्लभ सिंह, और दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती जइसन नांवन में नया-पुरान सभ कथाकार के सचहूँ सम्पुट हो गइल बा। एह व्यापक सूची के देखत भोजपुरी कथा साहित्य का सम्पूर्ण प्रगति के अनुमान कइल जा सकेला। दूसरा ओर ओकरा प्रवृत्तियन आ उपलब्धियन के मूल्यांकन कइल जा सकेला। ई काम बहुत जरूरी बा। अब समय आ गइल बा कि भोजपुरी कहानी-साहित्य का विकास के लेखा-जोखा सामने आ जाये के चाहीं। इहाँ एह काम के पूरा मोका त नइखे बाकी एह सेसर कहानी-संग्रह का आधार पर कुछ संक्षेप में अरज करवि।

सबसे पहिले ई देखि के खुशी होति बा कि भोजपुरी कहानी निछाने प्रेमचन्दे का परम्परा के अपनवले नइखे, ऊ 'प्रसाद' का कहानिन के आदर्शवादी परम्परा के निभथावति बा आ अइसना अवसर पर ओकरा शिल्पो पर ओकर रूपवादी रोमैन्टिक असर झलकत बा। अइसन कहानिन में 'कुंदन सिंह आ केशर वाई (आचार्य शिवपूजन सहाय), 'भैरवी क साज (ईश्वरचन्द्र सिन्हा), 'वरमाला' (कामता प्रसाद ओझा 'दिव्य') 'ऊ कारीगर रहे' (दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह 'नाथ') के सामने कइल जा सकेला। एह तरह का कहानिन में सामाजिक आ वैयक्तिक आदर्श लगभग आध्यात्मिकता तक चोंहपि गइल बा आ मानवीयता आ नैतिकता के पक्षधरता चरमोत्कर्ष पर लउकति बा। सवाल पीढ़ियां के हो सकेला काहे कि नवकी पीढ़ी के लोग काल्पनिक आदर्शों का पाछा परेलन त यथार्थ का जमीने पर ठाढ़ रहे के कोशिश करेले। एही कोशिश के नाँव ह प्रेमचन्द के आदर्शोन्मुख यथार्थवादी शिल्प। भोजपुरी का कहानिन में पहिले जहाँ एकरे डंका पिटात रहल ह उहाँ अब समय का साथ धीरे-धीरे ई शुद्ध यथार्थ का चोट से ढहि गइल बा। पहिले जहाँ ई शत प्रतिशत आ वाद में तीन चौथाई कहानी संसार के घेरले रहल ह उहाँ एह नवका आधुनिकतम भोजपुरी कहानी संग्रह में प्रेमचन्द के शिल्प वाली कहानी के प्रतिशत घटि के लगभग चउदहे-पनरह रहि गइल बा। 'हरताल' (पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय), 'बड़प्पन' (चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह), 'राजपाट' (जगन्नाथ)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'भँइसि के दूध' (चतरी चाचा), 'खैरा पीपर कबहूँ ना डोले' (रामवृक्ष राय 'विधुर'), 'सिकरिया' (प्राध्यापक अचल) 'परमपद, (विमला नन्द सरस्वती) आ 'दुलहा के दहेज' (सिपाही सिंह श्रीमन्त) में प्रेमचन्द्र के परम्परा लउकति बा। एकर अर्थ ई होई कि एकरा कथा साहित्य के विकास में तेजी आ गइलि बा। लगभग तीनि चौथाई कहानी के नयी कहानी का भीतर राखल जा सकेला। एह नयी कहानी वाला वर्गों में दूगो पीढ़ी के प्रभाव झलकत बा। एकदम नयी पीढ़ी में बहुत आक्रोश, आ विद्रोह बा। 'मछरी' (रामेश्वर सिंह काश्यप), सुखिया (उमाकान्त वर्मा), 'दरबा' (बीरेन्द्र नारायण) 'तरक्की' (पाण्डेय चन्द्र विनोद), 'अब ना' (अनिल कुमार राय 'आँजनेय'), 'लीला : एक खण्ड' (जितराम पाठक), 'देवाल' (सुधा वर्मा), 'लाल निशान' (विन्दु सिन्हा), 'भोर ना भइल' (अरुण मोहन भारवि'), 'अलबम' (ऋषीश्वर), 'भूतहापीपर' (वसन्त कुमार) आ 'चिखुरा' (अशोक द्विवदी) आदि कहानिन के 'नयी कहानी' का भीतर रेखांकित कइल जाई। एह कहानिन में अन्तरमुख पीड़ा, वैयक्तिक आ सामाजिक यथार्थ के चोट, विरोधाभास आ विसंगतियन के खरोच भरल व्याख्या, छोट मनइन का हीनत्व के स्वागत, नैतिकता का प्रति विद्रोह, आ प्रतीकात्मकता वगैरह के प्रभाव साफ-साफ लउकत बा। रेखाचित्रात्मकता का प्रवृत्ति का बारे में पहिले कहिये चुकल बानी। बहुत जानदार बाड़ी स 'नयी कहानी' का भीतर उभारल गइल कुछ जीवन का चित्रन के रेखा। अब एगो प्रवृत्ति के उभार एह रेखाचित्रन का अध्ययन का संगे झलकि रहलि बा कि कवनो रेखाचित्र में शुद्ध अनुरंजन नइखे। ई कुल्हि 'पीड़ा' से भरल बाड़न स।

अइसन लागत बा कि भोजपुरी कहानी पीड़ा प्रधान हो गइलि बाड़ी स। पीड़ा में नारी मन का पीड़ा के लेखक लोग बहुत मनोयोग से उभरले बाड़न। एह सम्बन्ध में एगो बाति अउरी ध्यान देवे लायक बिआ। भोजपुरी में नारी का अन्तरमन के मनोवैज्ञानिक पीड़ा बहुत कम चित्रित भइलि बा। 'मछरी' आ 'लाल निशान' में ई पीड़ा बा बाकी सामाजिक जीवन का नारी-पीड़ा से लागत बा कि सगरे भोजपुरी कहानी साहित्य भरल बा। 'सुखिया,' 'दरबा', 'सतवन्ती', 'देवाल', 'बैजुआ', 'खोंता से बिछुड़ल,' आ 'तिरिया जनम जनि दीहा विधाता' वगैरह कहानिन में आँखि का लोर के सियाही बनावल अइसन स्थिति बा। हिन्दी कहानी लेखकन में नारी पीड़ा के उरेहे वाला जैनेन्द्र जी एगो खास तरह का आत्म-पीड़न के चित्र प्रस्तुत करेलन। भोजपुरी में कुछ ओइसने मुद्रा में 'सुखिया' आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'सतवन्ती' कहानी के रचना भइलि बा। बाकी भोजपुरी कहानी के आपन मौलिक जमीन बा, आपन परिवेश बा आ आपन बोध बा। कतहीं से अइसन ना लागी कि कवनो रचना हिन्दी का कवनो कहानी का अनुकरण पर रचाइलि बा। भोजपुरी में प्रसाद, प्रेमचन्द जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी, वृन्दावन लाल वर्मा आ यशपाल, अज्ञेय सभ बा, बाकी अपना हवा-पानी में उतरल। ओह लोगन का बौद्धिकता आ जटिलता के भोजपुरी कथा साहित्य लगभग तिरस्कृत कइले बा। काहे से कि ओकर प्रकृति सहजता आ सरलता के बा। जटिल बनावट वाली कहानी कम बाड़ी स। 'सुखिया', 'बैरिन बाजल रे बँसुरिया', 'अब ना' आ 'भैरवी क साज' जइसन कुछ जटिल कहानी के छोड़ि के बाकी के बनावट में सहजते प्रधान गुण बा। 'नयी कहानी' जब नुकीला अन्त, प्रभावान्विति, समष्टि प्रभाव भा चमत्कार-भरल अन्त वगैरह ढाँचावादी तराश का फेर में नाहीं परि के प्रामाणिकता आ भोगल यथार्थ का खोज में रहति बा त का अचरज कि ओकरा कहानी में स्थिति भा परिवेश के चित्र प्रधान हो जाई? भोजपुरी का नयी कहानिन में स्थिति चित्र बहुत मिलत बा। 'मूंड़ी गड़ाइले रही' (अविनाश चन्द्र विद्यार्थी) में बहुत प्रभावशाली-स्थिति चित्र बा। एकरा अलावे 'राजपाट', 'तरक्की' 'चिखुरा' 'सपना टूटि गइल', 'सत्र चलेला', 'कुँआर सपना', आ 'बन्द केवाड़ी' आदि कहानिन में प्रभावशाली परिवेश चित्र बाड़न स। बसन्त कुमार के कहानी 'भुतहा पीपर' में परिवेश के बुनावट बहुत गझिन रूप में भइलि बा।

परिवेश का बारे में एकाध गो बाति अउरी कहल जरूरी बा। ई आश्चर्य के बाति बा कि भोजपुरी उपन्यासन में त आंचलिकता के प्रवृत्ति आइलि बा आ कथाकार लोग आंचलिक परिवेश के उठवले बाड़न बाकी भोजपुरी कहानिन में त लागत बा कि लेखक लोग ओह के छुवते नइखन। जवना के शुद्ध आंचलिकता कहल जाला ऊ लगभग भोजपुरी कहानी में 'जेहल क सनदि' का बाद लुप्त बिआ, एगो ई सचाई बा? तब का कारन बा कि अइसन अचरज के बाति हो गइलि बा? अब एह बाति के उत्तर देवे का पहिले छन भरि हिन्दी का ओरि झाँकि के देखि लीहल जाव कि आँचलिकता का संदर्भ में ओइजा का हालि बा? अब एक अचरज का बाद ई दूसराका अचरज के बाति सुनीं कि उँहवों ईहे हालि बा! हिन्दी उपन्यासन में त आंचलिकता के जवन प्रवृत्ति सन् १९५४ से शुरू भइल ऊहे सन् १९८१ तक सोझे चललि आइल बा। हाल साल में दुर्गा प्रसाद शुक्ल के महाराष्ट्र आ कर्नाटक अंचल का पृष्ठभूमि पर रचल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'जोगती' उपन्यास चर्चित भइल बा। बाकी हिन्दी कहानिन में आंचलिकता के हालत खस्ता बा। कुछ एही धरी से ना, शुरूए से हिन्दी कहानिन में आंचलिकता बहुत विरल ढंग से उभरलि बा, धीरे-धीरे। जम्मू से प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'शीराजा' में जून-जुलाई सन् १९८० का अंक में हम एगो लेख लिखले बानी 'समकालीन कहानी : आंचालिक परिवेश' आ काफी छानबीन का बाद एह निष्कर्ष पर चोंहुपल बानी कि कथागत आंचलिक छवि के उतारे खातिर कहानी विधा पूरा उपयुक्त नइखे परति। एकर एगो इकाई नियर कसल रूप, लघु आकार आ एकोन्मुख शिल्प अइसन बा कि आंचलिक ताम झाम आ विस्तार नइखे अँटि पावत। ईहे कारन बा कि हिन्दी में उपन्यासन का मुकाबिला में कहानी प्राय: आंचलिकता-विरल बाड़ी स। त का भोजपुरी भयवद्दी आ भाईचारा निबाहि रहलि बा? उचिते बा। केइसहूँ खींचि-खाँचि के हमारि कहानी 'झिरिहिरी' आंचलिकता का भीतर आ जाई। बाकी ऊहो त असल में एगो उपन्यास-अंश ह! लोककथवनो के प्रयोग भोजपुरी कहानी में कम होत बा। लोक-गीतन का कड़िन के अलबत्त केहू-केहू झनझना देत बा। 'गिरिजेश', सिन्हा जी आ 'सलिल' जी के कहानी देखल जा सकेले। लागत बा कि धीरे-धीरे भोजपुरी कहानी रोमान, कल्पना, भावुकता आ निरसता के छोड़ि के पदार्थ का कठोर जमीन का ओरी धीरे-धीरे बढ़ि रहलि बा। यद्यपि ओकरा कथा-साहित्य के राजनीतिक चेतना के जटिलता अबहीं कम छू पवले बा आ ओकर प्रभाव लगभग नाहीं का बरोबर बा तबो यथार्थ के प्रतिष्ठा हो गइलि बा। ई भोजपुरी के 'वाद' रहित सीधा आ शुद्ध यथार्थ बहुत ध्यानाकर्षक बा।

साँच पूछीं त यथार्थवाद के उदय तबे माने के चाहीं जब ऊ आर्थिक सवालन का बीच से उठेला बाकी सामाजिक, राजनीतिक, वैयक्तिक आ मनोवैज्ञानिक यथार्थ के रूपो ऐने कथा-साहित्य में विश्लेषित हो रहल बाड़न स। कथा साहित्य में यथार्थ के प्रतिष्ठा समकालीन जीवन के जबर-दस्त माँग बा। भोजपुरी कहानी में लोक-कथा, बोध-कथा आ व्रत-कथा से लेके आदर्शवाद तक आ आदर्श वाद, आदर्शोन्मुख यथार्थ वाद से लेके यथार्थ वाद तक समग्र विकास एके संगे भइला का वजह से कवनो तरह के वर्गीकरण संभव नइखे कि कब-कहाँ से कवन आ कब-कहाँ से कवन, बाकी एगो चौंकावे वाला ठोस तथ्य के उद्घाटन कइल जा सकेला। साहित्य में सदा से आदर्श का बादे यथार्थ आवेला बाकी भोजपुरी कहानी साहित्य में पहिले यथार्थ के प्रतिष्ठा हो गइलि बा। ई त सर्वमान्य तथ्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बा कि भोजपुरी के पहिला कहानी संग्रह 'जेहल के सनदि' (१९४८) बा। एह आधार पर मोटा-मोटी रूप से कहि दीहल जाला कि भोजपुरी के पहिली कहानी 'जहल क सनदि' ह। बाकी ई कवनो जरूरी नइखे कि शीर्षक वाली कहानिये संग्रह में पहिली कहानी होखो। हम बहुत उत्सुकता से एकरा बारे में खोज करे चललीं त हाथे लागलि देंवका खाइलि पोथी 'जेहल के सनदि' आ ओहमें देखला से मालूम भइल कि ई शीर्षक वाली कहानी एह संग्रह का दस गो कहानिन में नौवाँ लम्मर पर बा। स्वामी से जी भेंट कइला पर उहाँ का बतवनीं कि हमार पहिली कहानी उहे ह जवन पहिला लम्मर पर बाटे आ जवना के शीर्षक बा 'मलिकार'। एह से ई सिद्ध हो जात बा कि भोजपुरी के पहिली कहानी एही कहानी के कहल जा सकेला। अब आईं असली बाति पर आ देखल जाव का बाटे एह 'मलिकार' शीर्षक कहानी में ?

देवकी आ सेवक दू भाई बाड़न, बड़का हथियानशीन जमींदार परिवार में। सेवक जी रईस, सरदार, सभ्य, सीधा आ सज्जन बाड़न। ओने देवकी जी अइसन धूर्त, घाघ, तिकड़मबाज आ दुष्ट बानीं कि भाई के रईसी-सरदारी में बझा के कुल्हि जमीनि, गहना, सोना, चानी, तरहथी के धन मलिकार बनि के अपना कब्जा में कइ के मरे की बेर उनके गुदरी देके टुटही पलानी में बगेद दीहलीं। कहानी पढ़ेवाला सोचत बा, कवनो ईश्वरीय न्याय होई आ सेवक दादा के दिन लौटी। बाकी दिन का लौटी, एक दिन ऊ जब सुखले मरि जात बाड़न त काम किरिया के बाद उनकर लइका रामअधार आ बंसरोपन मलिकार का पास जमीन के हिस्सा फरिआवे पहुँचत बाड़न। पाठक लोग का उम्मेदि होति बा, अब कवनो चमत्कार होई आ सत्य के विजय होई। बाकी कुल्हि टाँय-टाँय फिस ! टका नियर जवाब दे देत बा, कइसन हिस्सा ?

पंचायत बइठति बा। तमाम जवार के सरदार बटुरात बाड़न। कवनो हल ना। पंचपरमेश्वर फेल ! मामला अदालत में जात बा तबो पाठक के आशा रहति बा कि दुष्ट के दण्ड मिली। बाकी, बेकार ! दूनों भाई मुकदिमा से अइसन टूटत बाड़न कि डीह छूटि जात बा। दूर कवनो गाँव में चाकरी कइके दिन गुजारे लागत बाड़न। अब लागत बा, दुष्ट का भीतर कवनो देवता के आदर्श जागी, बाकी ऊ कहाँ जागत बा ? हालत ई भइल कि बड़का भाई खइला बिना मरि गइल। मरत-मरत का समय तक कुछ आशा रहति बा कि कतहीं से कवनो संयोग बइठी। बाकी सब खतम भइला का बाद अन्त में लेखक लिखत बा, रामअधार का आँखि का आगा अन्हार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हो गइल कि अब का.......।' कहानी खतम। एह अन्हार में पाठक के लउके लागत बा दूनो भाई के बेसहारा परिवार, बिना बिआहल लइकी, बेवा आ ऊपर से रावण राज! तमाम-तमाम तरह के सत्य के विजय, ईश्वरीय न्याय, पंचपरमेश्वर के ताकत, चमत्कार, संयोग, मानवता, आदर्श आ भाग्य के पल्टा वगैरह के भवन भरभरा के गिरि जात बा। कहानी पढ़ेवाला के हृदय हिल जात बा आ ऊ खुद अपना के ओह रामअधार का रूप में पाव लागत बा जेकरा आँख का आगा दुर्भेद्य अँधेरा बा। आशा आ विश्वास के कतहूँ तनिको प्रकाश रखा नइखे। हर तरह के भविष्य खत्म हो गइल बा। आगे लमहर कतार बा यातना के, पीड़ा के, अपमान के, टूटनके, मौत के। कतहीं कवनो मानवीय मूल्य ना रहि गइल, गाँव के सामाजिक आ पचायत के न्याय खत्म हो गइल। सत्य नष्ट हो गइल, सज्जनता उखिड़ गइलि, इज्जति बेपानी हो गइलि, आदमी हिंसक जानवर हो गइल, समाज जगल हो गइल, बेहयायी, नंगई आ क्रूर स्वार्थपरता नियर नया-नया जीवन मूल्य उभरि अइलन स, त अब ई कुल्हि स्थिति मिलि के यथार्थ के का पूर्ण प्रतिष्ठा ना हो गइलि? बहुत कठोर आ चोट करे वाला शुद्ध यथार्थ इहाँ बा। भोजपुरी का एह पहिली कहानी में ऊ प्रेमचन्द का 'कफन' शीर्षक कहानी का परम्परा वाला यथार्थ बा, एकदम तिलमिला देवे वाला। रामअधार का शब्द में केतना गहिरा व्यंग्य बा? पढ़े वाला सोचि सकेला, खूब मिलल राम जी के आधार? सचाई-ईमानदारी के फल? सन् १९४८ में लिखाइलि ई यथार्थवादी पहिली कहानी, अइसन जनात बा कि भावी भारत के जन्म कुंडली बनि गइलि बा। ऍही कहानी का आधार पर हम कहलीं हँ कि भोजपुरी में सबसे पहिले यथार्थ उतरि आइल बा।

'सेसर कहानी भोजपुरी के' में यथार्थ के दर्शन होत बा 'राजपाट' (जगन्नाथ) आ 'सतवन्ती' (रामनाथ पाण्डेय) कहानी में। दूनो मे शोषण मूलक अर्थ व्यवस्था के विभीषिका पाठक के दहला देति बा। 'तरक्की', 'बैजुआ', 'एगो आउर अभिमन्यु', 'सपना टूटि गयल' में विविध स्तर के यथार्थ झलकि रहल बाड़न स। 'बैजुआ' आ 'एगो आउर अभिमन्यु' में राजनीतिक यथार्थ बा त 'देवाल' में सामाजिक यथार्थ बा। यथार्थ के पूर्ण सिद्धि व्यंग्य में होले। भोजपुरी कहानीकारन में तीखा व्यंग्य रचना के कवनो ठोस परम्परा नइखे उभरलि बाकी चुटीला आ तीखा व्यंग्य में ऊ चूकतो नइखे। 'मछरी', 'दरबा', 'बड़प्पन' 'राजपाट', 'सब चलेला' आ 'परमपद' में मार्मिक व्यंग्य के व्यवस्था बा। बाकी व्यंग्य के पड़ोसी हास्य के अभाव त खटके वाला बा। का अइसन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बा कि भोजपुरिया हँसे ना जानेला ? अइसन त शायद नइखे बाकी ओकर कथा-साहित्य में अनुरंजन वृत्ति के अभाव बतावत बा कि शायद ऊ सचहूँ के कहानी का बहाने जिनिगी का लड़ाई में जुटल बा। पुरनकी पीढ़ी पीड़ा का कलम से समाज के कोंचि के सुधारे के कोशिश कइले बा त भोजपुरी कहानीकारन के नवकी कतार के विद्रोही बाना हलकी-हलकी चोट कइके ओके तोड़े शुरू कइ देले बा। भूपतियन का उत्पीडन का गोद मे सर्वहारा आक्रोश का संगे-संगे कइसे नक्सलवाद जनमत बा एकरा के 'बैजुआ' (प्रियरंजन) आ 'एगो आउर अभिमन्यु, (ब्रजकिशोर) मे चित्रांकित कइल गइल बा। 'टूटल आदमी' (लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी) में समकालीन भ्रष्टाचार के चित्र बा। 'ऊ एगो भीड़ आ व्यवस्था' (तैयब हुसेन पीड़ित) में आधुनिक युवा मानसिकता के चित्र बा। कुल मिला के आजु जवना मुद्रा के आधुनिकता कहल जात बा ऊ भोजपुरी का कहानी में बहुत तेज ढंग से नइखे उभरि पावत बाकी 'मछरी', 'सुखिया', 'दरबा,' 'बड़प्पन', 'राजपाट', तरक्की', 'देवाल', 'लाल निशान', आदि कहानिन में स्पष्ट रूप से आधुनिकता बोध के मुद्रा बा। खुला विद्रोह कम बा बाकी नैतिकता के प्रति जइसन विद्रोह 'सतवन्ती' में बा ऊ दुर्लभ बा। विद्रोह स्वर 'मछरी', 'पगला तिवारी' 'भोर ना भइल', 'बैजुआ', आ 'एगो आउर अभिमन्यु' शीर्षक कहानियनो में बा। ई विद्रोह वाली चेतना हीन, उपेक्षित, अदेख, अनगराहित, तुच्छ आ नाचीज जइसन जीवन से जुड़लि चलेले। भोजपुरी कहानी अइसना जीवन के आपन भरपूर समवेदना बाँटति लउकति बा। 'बड़प्पन' 'के टमटम वाला, 'राजपाट' के रेक्सावाला, 'लालनिशान' के अनगराहित बच्ची, 'चिखुरा' के अभागा बच्चा, 'सिलसिला' के हलखोरिन आ 'खोंता से बिछुड़ल' के दायी जइसन पात्र पढ़वालन के ध्यान खींचत बाड़न स भोजपुरी कहानी लेखक का भीतर के अपार सहानुभूति-समवेदना एह कहानिन में उभरलि बा।

विकास क्रम में जवन भोजपुरी कहानी साहित्य में विविधता आइलि बा, ओह पर दृष्टि गइल जरूरी बा। लमहरि कहानी का संग-संग भोजपुरी में लघुकथा जइसन रचनो भइलि बाड़ी स। एह लघु कथा में छोट आकार का भीतर जइसन चुस्ती चाहीं ओकर ध्यान राखत कुछ रचना बहुत सफल बाड़ी स। 'खैरा पीपर कबहूँना डोले, (रामवृक्ष राय 'विधुर') 'बन्द केवाड़ी' (रामेश्वर प्रसाद सिनहा), 'करेज के घाव' (विश्वनाथ श्रीकृष्ण), 'पसेवा के पइसा' (घनश्याम मिश्र), 'सारंगा' (पाण्डेय सुरेन्द्र), आ 'चरवाही के दाग' (अरविन्द कुमार) का रचनन में लघु कथा के रूप त बा बाकी ओकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रस कुछुए रचनन में बा। जब ले कवनो संवेदना के ना ढारल जाईतब ले मात्र कवनो घटना कहानी कइसे हो जाई? अब एक तरह के कहानी नयी कहानी का भीतर चल रहल बाड़ी स जवना में घटना ना होले, आ होइबो करेले त बहुत झीन आ विरल, जवना के चिन्तन आ विचार से 'लेखक भरि देला। एह तरह से कहानी में कबो ललित निबन्ध का विधा के संक्रमण हो जाला त कबो रिपोर्ताज आ संस्मरण के। अइसन भइलो पर संवेदनात्मक स्पर्श से आ वैयक्तिक सटाव से ओके जवन चिपकनशीलता मिलेले उहे कहानी के तत्त्व हो जाले। अइसना निबन्धात्मक कहानिन के रूप 'पगला तिवारी' आ 'भोर ना भइल' में देखल जा सकेला। विविधता में नयी कहानी का बाद के कुछ विकसित कथा रूपो के खोज हो सकेले। 'तरक्की' कहानी में अकहानी, 'टूटल आदमी' में समकालीन कहानी, 'एगो अउर अभिमन्यु' में जनवादी कहानी, 'पहिला पाठ' में समान्तर कहानी के रूप देखल जा सकेला। 'कोढ़' में वर्ग वैषम्य उभरि के सामने आइल बा। 'मरजादा' में ऐतिहासिक कहानी के रूप बा त 'बरमाला' में पौराणिक कहानी। 'देवाल' प्रतीकात्मक कहानी बा। 'मूड़ी गड़ाइले रहीं' 'सपना टुटी गइल' आ' के भेजल' में गाँव आ नगर के अन्तराल उभरल बा। ईहो एगो अचरजे के बाति बा कि भोजपुरी कहानिन में गाँव के पृष्ठभूमि छवले बा। हर क्षेत्र में भोजपुरी कहानी हिन्दी कहानी से कन्धा से कन्धा मिला के चलत लउकति बा बाकी एह क्षेत्र में ई ओकर साथ नइखे देति। हिन्दी कहानी में सन् ६० का बाद गाँव जीवन लगभग उखड़ि गइल आ सर्वत्र आधुनिक नगर बोध के चकाचौंध छा गइल बाकी भोजपुरी कहानिन में ओकर प्रतिष्ठा जइसे के तइसे बनलि बा। एकर अर्थ ई ना हो सकेला कि गँवार का भाषा में गाँवे लिखा सकेला। 'सपना टूटि गइल' कहानी में खूब जमि के आधुनिक नगर बोध उतरल बा। भोजपुरी कहानी के अपना बोध के विशाल, वैज्ञानिक, आधुनिक बनाके ओके परम्परा का बाहरो ले आवे के चाहीं।

उपन्यास का क्षेत्र में त अबहीं देरी बा बाकी भोजपुरी का कहानियन का क्षेत्र में अब ई स्थिति बा कि उपलब्धियन के चर्चा कइल जाव। 'मछरी', 'सुखिया', 'दरबा', 'बड़प्पन', 'सतवन्ती', 'राजपाट', 'भैरवी क साज', 'बाजलि बैरिन र बाँसुरिया', 'एगो अउर अभिमन्यु', आ' भुतहा पीपर' आदि जइसन कहानिन के उपलब्धि का रूप में सामने रखला का बाद चार कहानिन के और चर्चा कइल चाहत बानी। सुधारवाला स्वर जब कलात्मक रूप लेला त ऊ कइसन होला आ सिद्धांत वाला स्वर जब कलात्मक हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाला त ओह में कइसन आकर्षण आ जाला, ऐह दू तथ्य के भोजपुरी कहानी का विकास क्रम में संक्षेप में रेखांकित करे के बा। 'अब ना' (अनिल कुमार आंजनेय) आ 'लीला : एक खण्ड' (जीतराम पाठक) में सुधार-स्वर बा। दूनो में शराब का सत्यानाशी रूप के अत्यन्त रोमांचक रूप में प्रस्तुत कइल गइल बा आ अइसन नुकीला प्रभाव बनावल गइल बा कि शराब से घनघोर घृणा हो जाई। बाकी एह स्थिति के उत्कृष्ट कलात्मक रूप दे के प्रस्तुत कइल गइल बा। एक तरह से दूनो कहानी सोद्देश्य कलात्मक रूप में आकर्षित करति बाड़ी स। 'अब ना' में परमेसर शराब का नशा में मारपीट कइके आ घायल होके अस्पताल में जात बा। फ्लैश बैक का जरिये पिछला कुल्हि तमाशा उद्घाटित होत बा कि कइसे पूरा परिवार नष्ट हो गइल। एकरा बाद कनफेशन के स्थिति आवत बा कि क्लाइमेक्स पर नायक लाल दवा के शराब समुझि के जे भागत बा त देवालि से टकरा के मरि जात बा। एह तरह से ई लम्बी कलात्मक कहानी झटका पर झटका खाति आगा बढ़ति जाति बा, सस्पेंस भरल मोड़ पर मोड़ आवत जात बाड़न स। विरोधी स्थितियन के मार्मिक बनावट से दहशत, हैरत आ छटपटाहट पैदा होति चलति बा। चित्र, बिम्ब, मुहावरा आ अलंकार के संगे पूरा जटिल आ संश्लिष्ट रूपवादी बनावट सुधार-स्वर के कलात्मक बनाके अउर अधिक चुटीला बना देति बा। ईहे हालि जितराम पाठक वाला कहानी के बा। एह कहानी में एगो बाबूजी बाड़न, शराबी आ व्यभिचारी। माई बेचारी बहुत नीक बा। परदा का पाछा से एह कहानी के नैरेटर (कथक: श्रावयिता) खराब पिता आ अच्छी माँ के झेलि रहल बा। शराब के घृणित उपद्रव चरम सीमा पर बा आ ओकरा संदर्भ में उपजल एगो भ्रष्टाचार के अध्याय खतम होत बा त सवाल खड़ा होत बा कि त का दूसरका ना खड़ा हो जाई ?

एह सुधार वाला स्वर का बाद सिद्धांत वाला स्वर के देखल जाव। भोजपुरी कहानिन में सिद्धांतवादिता अबहीं गहराइलि नइखे आ बहुत सीधा सरल जीवन स्थितियन के संदर्भ सीधा सरल ढंग से उठत चलत बा। बाकी एही बीचे कतहीं-कतहीं कुछ बहुत सूक्ष्म कलात्मक संकेत मिलि जात बाड़न स त ओकरा पर ध्यान आकृष्ट हो जात बा। कुछ तरह का सिद्धांतवादिता के संकेत कहानिन का विविध रूप का विश्लेषण का संगे संक्षेप में हो चुकल बा। शेष रहि गइल बा एगो जरूरी प्रवृत्ति जवन सन् '६० का एने ओने सिद्धांत आ फार्मूला का रूप में प्रयोग होति लउकति बा। अइसन जनात बा कि सन् १९५० आ ६० का बीचे जवन बहुत उत्साह से महतारी-बाप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोगन के चित्रण हिन्दी कहानी में भइल ओह में कुल्हि के कुल्हि वढ़िया महतारी-बाप रहलन स। वाकी सन् ६० का बाद उलटा हो गइल। महतारी-बाप लोगन के दुर्गति होखे लागलि। अत्यन्त कठोरता से नयी पीढ़ी ओह लोगन के ढाहे लागलि आ भयंकर रूप में प्रतिमा-भंजन शुरू भइल। कहल गइल कि ई पिता नाँव के संस्था एक ओर त पुरान परम्परा के प्रतीक वा आ दूसरी ओर व्यवस्था के प्रतीक वा। एह कारन से एकरा पर निठोठ प्रहार जरूरी बा। एह तरह से सन् ६० से पहिले नयी कहानी में पूज्य पीढ़ी का प्रति श्रद्धा लउकति वा आ ओकरा वाद अकहानी में घृणा लउकति वा। हिन्दी में ज्ञानरंजन, दूधनाथ सिंह, गंगा प्रसाद विमला आदि के कहानिन के ढेर-ढेर उदाहरण बाड़न स। ओने मन्नू भंडारी, कमलेश्वर, मार्कण्डेय आ शिव प्रसाद सिंह वगैरह के कहानी बाड़ी स। भोजपुरी अबही परम्परा आ व्यवस्था पर धीरे-धीरे प्रहार करे का मुद्रा में आवति बा एह वजह से महतारी लोगन के त छोड़ि देति बा वाकी वाप लोगन के प्रतिमा भंजन के काम शुरू वा। गंगा प्रसाद विमल का कहानी 'शीर्षक हीन' में शरावी पिता वा आ ज्ञानरंजन का कहानी 'कलह' में व्यभिचारी। ठीक अइसने पिता लोगन के प्रतिमा 'अब ना' आ 'लीला : एक खण्ड' में बा। एकरा अलावे सुधा वर्मा के कहानी 'देवाल' में और मार्मिकता से ई संदर्भ उठल बा। बूढ़ जर्जर पिता पुरान परम्परा के प्रतीक वा। परपंरा का संगे संगे ऊ पीढ़ी के प्रतिनिधित्व करत बा। नयी पीढ़ी डाक्टर होके ठाट-बाट के जिनिगी वितावति बा आ पुरान पीढ़ी रोगी देवाल नियर ढहि जाति बा। बहुत दर्द बा एह कहानी में। बाकी एह दर्द के भोक्ता के बा? का कवनो माँ, बेटा, भाई जइसन सम्बन्ध भोक्ता बा? ना, एह कहानी में पीड़ा के भोक्ता एगो नौकर वा। जइसे वाप नियर बूढ़ एह देश के अस्मिता देवाल नियर ढहि रहलि बा आ छटपटात तिलमिलात मध्यम वर्ग ओकर नाकाम साक्षी बनल बा। एह प्रकार के सूक्ष्म आ युगीन लहर जाने में, अनजान में, कथाकार चेतना के मथति रहेले आ ओकर समय पर अभिव्यक्ति हो जाले। भोजपुरी का नयी कहानिन में नाना कोण से तरह-तरह का रूप-रंग में बाम के बोध लिखाइल बा। अइसन जनात बा कि हवा के रुख ओनिये बा। बाकी भोजपुरी के जरि परपंरा का अइसन गहिराई में बा कि जल्दी हिले के लच्छनि नइखे। हँ, एगो बात साफ बा, ऊ गाँधीवाद के त अब पूरी तरह विसर्जित कइ देबे का स्थिति में लउकति बा।

एह भाषण का समापन भाग में ई आवश्यक लागत बा कि भोजपुरी कहानी लेखकन का कुछ मौलिक संग्रहन के व्यवस्थित रूप में चर्चा होखो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अइसे त फुटकर रूप में प्रसंगवश सगरी के कुछ ना कुछ चर्चा पीछे हो चुकल बा बाकी विकास के शृंखला साफ-साफ झलकावे खातिर ओकरा बीच का कड़िन के जाँच-परताल, जरूरी जनात बा। एह रूप में सबसे पहिले हमारा 'जेहल क सनदि (१९४८) के उठावे के बा काहे कि इहे भोजपुरी कहानी के श्रीगणेश हवे। एही भोजपुरी कहानिन का नींव पर ओकर विशाल महल ठाढ़ होखे जात बा। हमके ई देखि के आश्चर्य होत बा कि एह नींव नियर पहिला संग्रह में तीनि गो नीचे वाली मुख्य लाइन बा आ तीनि में से एकहू बाद वाला भोजपुरी कहानी साहित्य में पूरा-पूरा रूप में प्रतिष्ठित ना हो पावलि—

(१) एको कहानी में आदर्शवाद नइखे आ पूरा संग्रह यथार्थवाद का तीखा तेवर में पनपनात उतरल बा।

(२) सगरी कहानिन में भोजपुर अंचल के कृषि आ कृषक संस्कृति—खान-पान, विवाह-बरात. देवी-देवता, रोजी-रोजगार, गाँव, घर, नदी, टोला, ढोर, तीर्थ, पहाड़, भोजभात आदि बहुत धीरता का साथ उतरलि बा आ आंचलिकता के आरंभिक रस गंध भरल बा। ओकर विश्वासो बा आ अन्धविश्वासो बा।

(३) सगरी कहानिन में प्रचार-रहित साम्यवादी (आज का भाषा में जनवादी) रंग बा, शोषण का खिलाफ शोषित वर्ग के पक्षधरता बा। पूँजीवाद आ एकरा पायक साधू-संत, महन्थ, जमींदार कांग्रेसी नेता आ व्यापारिन—लोगन पर जमि के प्रहार भइल बा आ 'कमाये वाला खायेगा' का रंग के नीति के प्रतिष्ठित कइल गइलि बा। बिहार का ऐतिहासिक किसान आन्दोलन के भरपूर छाप कहानिन पर बा।

अब अपना निष्कर्ष के अउर साफ करे खातिर संक्षेप में कहानिन पर नजर दउरावल जाव। ओह पहिली 'मलिकार' शीर्षक कहानी का सामाजिक यथार्थ के चर्चा पहिले हो चुकल बा। जवना में आदर्श, सत्य, न्याय, पंचायत, मानवता आ ग्रामात्मा के खात्मा हो चुकल बा। कहानी घोर निराशा का अन्धकार में बूड़ि गइलि बा। अइसने घोर भग्नाशा दूसरकी 'आत्मघात' कहानी में बा। गरीब बलराम सब तरह से थाकि के, गरीबी से लडत-लड़त उबिया के गाँव से शहर में भागत बा आ उहँवा शहर ओके लीलि घालत बा। सवाल पूरा व्यवस्था के उभरत बा जवना में गरीब पिस रहल बा। चाहे गाँव होखो चाहे शहर। बलराम के अन्त गरीब के अन्त हो गइल बा, बहुत करुण अन्त। एह अन्त से विद्रोह के आगि धीमे-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धीमे-धीमे निकलति वा। साच पूछल जाव त 'जेहल क सनदि' के कथाकार सुमनजी अर्थात् दण्डि स्वामी विमलानन्द सरस्वती में मूल स्वर विद्रोहे वा। तीसरी कहानी 'मवनी बाबा' में साधुता का आड़ में भ्रष्टाचार फइलावे वाला बाबा लोगन के पर्दाफास भइल वा आ अइसना भ्रष्टाचार का शिकंजा में कसि के नष्ट होत गाँव का शील सदाचार के पीड़ा के उभारल गइल बा। अइसही चउथी कहानी 'कतवारू दादा' में सामाजिक भ्रष्टाचार का खिलाफ त पाँचवीं कहानी 'किसान भगवान' में राजनीतिक भ्रष्टाचार का खिलाफ आवाज बुलन्द कइल गइल वा।

विमलानन्द सरस्वती के कतवारू दादा अपना लमहर जमीदारी आ धन-दौलत का बल पर बुढ़ौती में एगो किशोरी कन्या से शादी रचावत बाड़न। कहानी सपाट ढंग से चलति बा। पढ़वैया बुढ़वा का सनक पर तिलमिलात बा। समाज का सड़न पर क्षोभ होत वा आ अत्याचार का खिलाफ मन में क्रोध होत वा, बाकि अत्याचारी के के सजाइ देई? ओकरा पीठि पर पूँजी-वादी व्यवस्था बा। तव सजाइ देवे खातिर एगो तेजस्वी कहानी लेखक आगे बढ़त बा आ सपाट कहानी अन्त में जाके झटकि जाति वा। अइसने झटका 'किसान भगवान' का अन्त में वा। बाकि ई कहानी त एगो खुलल विद्रोह वा। शब्द से ना कहानी आगि से लिखाइलि बा। सामन्त नियर अगड़धत्त जमीदार के जुल्म कथा के विस्तार दिहला का बाद ओही का भीतर से विद्रोह के आगि निकलति चित्रांकित भइलि बा। बिहार का किसान आन्दोलन के मार्मिक पृष्ठभूमि उभरि जाति वा आ स्वामी सहजानन्द के भूमिका का साथे जनक्रांति के आह्वान सामने आ जात बा। परम्परित धर्म के खब खिचाई भइलि वा। धरम आ परलोक के अफीम कहल बा। पंडा-पुजारिन के पूँजीपतियन के एजेन्ट बनावल बा। अंग्रेजी राज आ जमींदारन के सम्बन्ध साफ-साफ सामने देखल गइल वा आ कुल्हि मिला के बहुत कलात्मक ढंग से एह कहानी में सफाई का साथ राजनीतिक यथार्थ के प्रतिष्ठित कइल गइल बा। सभसे चिहुँकावे वाला कहानी 'चउर के पूजा' वा जवना में एक समय भ्रष्ट पापी समझल जाये वाला प्रेमी-प्रेमिका बाद में अकलू बाबा आ देवकालो सती के नाँव से पुजाये लागल बाड़न। कहानी पढ़ि के यशपाल के कहानी 'शिव पार्वती' यादि परि जाई जवनामें साम्यवादी दृष्टि से निष्कर्ष निकलत बा कि मंदिर में मूर्तिन का बहाने आदमी अपना वासना के पूजा करेला। सातवीं कहानी 'गुलाब' में वैयक्तिक यथार्थ वा त आठवीं कहानी 'दफा ३०२' पूँजीवादी सभ्यता पर करारा तमाचा हो गइलि बा। कीड़ा नियर जिन्दगी बितावे वाला रामनाथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नोनिया गरीबि से ऊबि के अपना पतोहि आ नाती के अपने हाथे हत्या कइ देत बा ! 'कफन' से अधिका कड़ुवाहट भरल एह कहानी का बीच से गुजरत प्रतिक्षण पाठक के हृदय धड़कत रहत बा आ भीतर से हिला देवे वाली ई विद्रोह धर्मी कहानी एगो कठिन चुनौती हो जाति बा। नवीं कहानी, जवना का नाँव पर एह संग्रह के नाँव उजागर भइल बा, 'जेहल क सनिद' में लेखक फेरू एगो नया कोण से राजनीतिक यथार्थ के उठवले बा। पहली बार ऊ कथा साहित्य में घोषित कइ रहल बा कि कांग्रेस सठिया गइलि। पूरी कहानी में किसान-सभा आ कांग्रेस के टकराहट रोमांचक ढंग से उभरल बा। आ साथे-साथे कांग्रेसी भ्रष्टाचार के जमि के भंडाफोड़ भइल बा। जिला बोर्ड का मेम्बरी का चुनाव में जब किसान सभा के उम्मीदवार हारि गइल त ओकरा पर कथाकार अन्त में कहानी का चरम विन्दु का रूप में व्यंग्य उछालत बा, 'ओकर जेहल के सनदि बेकार हो गइलि। अब जनता सजग हो गइलि बा।' अंतिम कहानी वैयक्तिक शोषण-पीड़न के मशाल नियर जरत दस्तावेज हो गइलि बा। 'कवि कयलास' शीर्षक कहानी एगो सतेज पत्रकार आ कर्मठ कार्यकर्त्ता का मौत के कहानी हो गइलि बा। ऊ कविता आ मार्क्स-लेनिन का साथे अपना समाचार-पत्र 'किसान' खातिर समर्पित बुद्धिजीवी जवान भूख से तड़प-तड़प के मरत चित्रांकित भइल बा। ओकर मौत आधुनिक बुद्धिजीवी का तेजस्विता के मौत हो गइलि बा। एह तरह से १० गो रोमांचक आ साफ-सुथरा रोचक शिल्प में लिखल ई भोजपुरी कहानी के संग्रह कइसन आग आ आँच ले ले आजुओ बेजोड़ बा। आश्चर्य कि अबहीं ले एह संग्रह का बारे में भोजपुरी संसार के सिर्फ एतने पता बा कि ई पहिला संग्रह ह आ एही से शायद ऊ अनुमान लगा लेत बा कि वहुत मामूली घटनात्मक आ आदर्शवादी जइसन कुछ होई। गंभीरता से एह संग्रह का ओर अब तक ध्यान नइखे गइल। जवना भाषा का कथा-साहित्य का नींव में अइसन युगीन गहराई बा आ ऊ पूर्ण कलात्मक निखार का संगे जीवन से जुड़लि बा ऊ निश्चित रूप से वहुत महान बा। एह ग्रसंह में 'दूइ शबद' लिखत में डॉ० उदय नारायण तिवारी ठीके लिखलन कि आजु के कहानी पढे वाला लोग धरती का वस्तु के देखल चाहत बा आ अइसने चीज सुमनजी पेश कइले बाड़न। लेखको 'तनिक अरज' जइसन भूमिका में जनता का युग के दोहाई देत उतरत बा। किसान सभा आ विहार का किसान आन्दोलन से सीधे जुड़ल रहला का वजह से ओकरा क्रांतिकारी शब्दन में सचाई बा, सैनिक मान-सिकता के तेजी-तुर्शी बा। एह संग्रह के नया संस्करण होखे भोजपुरी-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साहित्य का स्रष्टा आ प्रेमिन दूनो का हाथ में फेरु आवे के चाहीं। ई संकलन मजबूत, मानक आ सार्थक प्रकाश स्तंभ नियर दूर-दूर तक ले भोजपुरी कहानी ससार के आजुओ राह देखावे में समर्थ बा। पता चलल ह कि लेखक के उपन्यास 'जिनिगी के टेढ़ राह' जवन सन् १९७३ में 'भोजपुरी कहानियाँ' में धारावाहिक रूप से छपल ऊ अव किताब रूप में प्रकाशित होखे जा रहल बा। एह उपन्यास में, इतिहास, राजनीति, यात्रा, किसान आन्दोलन, गांधीवाद, पुरातत्त्व, अंग्रेजी राज, जेल यात्रा, फरारी, जमीदार युग, संधिकाल के मानसिकता, स्वतंत्रता संग्राम' आजाद हिन्द सेना आ सुभाषचन्द्र बोस के संघर्ष आदि सब कुछ ओही धीर-ललित आकर्षक जनवादी शिल्प में चित्रांकित बा जवना के परिचय 'जेहल क सनदि' में मिलल बा।

'जेहल क सनदि' के लेखक विमलानन्द सरस्वती का सरल, टकसाली, मुहावरादार, गति आ शक्ति वाली भोजपुरी भाषा में प्रस्तुत कइल गइल धीर ललित जनवादी शिल्प के परम्परा आगे ना बढ़लि। एक दर्जन से ऊपर कहानी-संग्रहन का बाद जवन एगो वहुत मानक ढंग के सग्रह 'गहरेबाजी' (ईश्वर चन्द्र सिन्हा) सन 1971 में छपल ओकरा अध्ययन से ई पता चलल कि कवनों एगो दिशा के ना बलुक दिशा-दिशा के प्रभाव समेटि के आगे वढ़े वाली प्रवृत्ति भोजपुरी कहानिन में विकसित भइलि बा। ओकरा में समन्वय के वृत्ति बा। 'गहरेबाजी' में इहे तथ्य विशेष रुप से उजागर भइल मिलत बा। सिन्हा जी अपना चौदह गो कहानिन भ आश्चर्य जनक रीति से लोककथा आ पौराणिक बोध—कथा से लेके नयी कहानी आ अकहानी तक के प्रयत्यात्मक कथा—यात्रा कइ घलले वाड़न। अइसन त सोचले ना जा सकेला कि ई काम सोचि—समुझि के भइल बा। वास्तव में ई एकदम हवा का अज्ञात प्रभाव में काम हो गइल बा। सिन्हा जी के पहिली कहानी 'गहरेवाजी' ह जवन 'भोजपुरी कहानियाँ' में सन् १९६४ में छपलि। एकरा बाद पाठकन का मांग पर अपना व्यस्त पत्रकारिता वाला सेवा में से समय निकालि के लिखत गइलन आ अनायासे कहानिन के विविध रूप एक का बाद एक कइके उभरत गइल। लेखक का पुस्तक का कथा-यात्रा में हम जवन कहानिन के वर्गीकरण कइले बानी ओह के आप सब का सामने रखत बानी—

(क) कहानी के आदि रुप

१. लोक कथा	'वनिया क बटा'
२. पौराणिक बोधकथा	'वासना'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ख) प्रेमचन्द पूर्व

३ सामाजिक नीति कथा	'गाँव के पैंड़ा में'
४. जासूसी कहानी	'छात्र नेता क हत्या'

(ग) प्रेमचन्द युग

५. आदर्शवादी कहानी	'बहिन क हक'
६. आदर्शोन्मुख यथार्थ वादी	'कहाउत पुरान हो गइलि'
७. रोमैन्टिक	'भैरवी क साज'
८. ऐतिहासिक	'अब्दुल हमीद'
९. हास्य-व्यंग्य	'चेयरमैनी क चुनाव'

(घ) प्रेमचन्दोत्तरी कहानी

१०. यथार्थवादी	'बासमती चाउर'
११. आंचलिक	'गहिरेबाजी'
१२. रेखाचित्रात्मक	'पुरुषारथ'

(ङ) आधुनिक कहानी

१३. नयी कहानी	'राधा गावत हीं'
१४. अकहानी	'दसखत'

रामवृक्षराय 'विधुर', कामता प्रसाद ओझा 'दिव्य', तैयब हुसेन पीड़ित, कृष्णानन्द कृष्ण आ कन्हैया सिंह सदय का कहानिन के लगभग इहे स्थिति बा। पुराण कथा आ बोधकथा के प्रवृत्ति जरूर अब लगभग समाप्त हो गइलि बा काहे से कि गहिरा असर आधुनिक कथारस के बा। दूसरी ओर प्रेमचन्द का साथे इर्द-गिर्द वाला युगन के प्रभाव बा कि छाप पूरी तरह नइखे छोड़त। सन् १९७० आ १९८० ई० का बीचे भोजपुरी कहानी आपन परिनिष्ठित रास्ता बनावे खातिर छटपटाति लउकति बा। सन् १९७२ में बीरेन्द्र नारायण पाण्डेय के कहानी संग्रह उनका प्रसिद्ध कहानी 'दरवा' का नावें छपल। अइसन जनाइल कि एह संग्रह का कुल्हिये कहानी पर आधुनिकता के छाप बा। लेखक जीवन का गहिराई में ढुके के प्रयास करत बा। सामाजिक यथार्थ के धरातल जवन उभरल बा, बहुत कठोर बा। बाकि भोजपुरी भाषा जवन 'दरवा' जइसन सिद्ध कथाकारन में प्रयोग भइलि बा, अइसन लागति बा कि अबहीं आधुनिक सम्वेदना के पकड़े खातिर पूरी तरह टूटि नइखे गइलि। सन् १९७६ में छपल रामनाथ पाण्डेय का संग्रह 'सतवन्ती' के इहे हालि बा। एह संग्रह का आधा दर्जन कहानिन के मुख्य विषय बा आधुनिक मध्यवर्गीय जीवन आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओकर पीड़ा, वबसी। जाहिर बा कि अइसना विषय के उठा के ठीक-ठीक ढंग से, सही कोण से प्रस्तुत करे खातिर भाषा में आधुनिक तेवर उभरि जाये के चाहीं। कथा भाषा का एह तेवर के दुश्मन बा इतिवृत्तात्मकता, जवन भोजपुरी भाषा के प्रकृति बनलि वइठलि वा। रामनाथ पाण्डेय का शिल्प में अपेक्षित चुस्ती के कमी नइखे आ व्यंग्य के नुकीला वनाके चोट करे वाला कला भी उनका पास वा। बाकि भावात्मकता का प्रवाह में लेखक का तटस्थ ना रहला पर रचनन में जवन कमजोरी आवेले ऊ कतहीं कतहीं वनलि रहि जाति वा। सन् १९७७ भोजपुरी कहानिन खातिर सुनहरा वर्ष बा। एह वर्ष संख्या आ स्तर दूनों दृष्टि से उत्तम प्रकाशन के स्वागत भइल। 'हम कुन्ती ना हँईं'; 'माया मिललि न राम', 'अमरावती', 'जै जजमान' आ 'ढ़िबरी' आदि मौलिक कहानी संग्रहन के देखिके भोजपुरी कथा साहित्य के शक्ति के आभास हो सकेला। 'हम कुन्ती ना हँईं', में पाण्डेय चन्द्र विनोद के सम्पूर्ण कला चेतना झलकि बा। एह संग्रह का सातो कहानिन में वहुत प्रौढ़ता वा आ ई प्रौढ़ता एगो शिल्पकार के प्रौढ़ता वा। कवनो अनगढ़ पत्थर के सुगढ़ आ जीवन्त मूर्ति के रूप देवे में मूर्त्तिकार का भीतर जवना प्रकार के तल्लीनता होले ओइसने तल्लीनता कहानिन का निर्माण में पाण्डेय चन्द्रविनोद का भीतर लउकति वा। एह तल्लीनता के असर उनका भाषा पर साफ-साफ उभरल बा आ ओह में सहज शक्ति आ गइलि बा। पुस्तक का शीर्षक वाली मशहूर रचना का अलावे एह संग्रह के 'पारस पत्थर; आ 'चवन्नी' शीर्षक रचना ध्यान आकर्षित करति बाड़ी सा। सहज आ औसत शिल्प का प्रयोग से कहानिन के आस्वाद वाला धरातल बहुत सुलभ हो गइल बा। कहानिन में कला-धर्मिता मूल तत्व का रुप में संचित भइला से अउरो मूल्य वढ़ि जात बा।

जइसे पाण्डेय चन्द्र विनोद के संग्रह में शिल्पगत कला-धर्मिता केन्द्र में बा ओइसहीं प्राध्यापक अचल का कहानी संग्रह 'माया मिललि न राम' (७७) में वस्तुगत समाज धर्मिता के प्रमुखता मिलति बा। जवना के अनुभव के गहराई और व्यक्तित्व के परिपक्वता कहल जाला ऊ मजीतेरे छनि के अचल जी के कहानिन में घुलिल-मिललि बा आ पढ़े वाला लोगन के छनोभर खातिर उचटे नइखे देति। यद्यपि अचल जी अइसना ग्रामीण समाज के पृष्ठ भूमि बनवले बाड़न जवन रातदिन के परिचित बा बाकि उनका अनुरंजनकारी शिल्प में उभरि के ऊ साहित्यिक स्वाद के माध्यम वनि जात बा। खास कर के समाज का अन्तर विरोध आ विसंगतिअनं के अचल जी खूब कोड़िया-कोड़िया के निखारत बाड़न। समाज के अगुआ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोगन के कथाकार विशेष रूप से कहानिन में खबरि लेले बा। ओह लोगन का चेहरा का पाछा जवन असली चरित्र बा ओकर खूब धुनाई भइलि बा। समकालीन सामाजिक जीवन का मुहावरन से अचल जी खूब परिचित बाड़न। एह कारण से उनका कृत्ति में समकालीनता बहुत चटक रूप में उभरलि बा। तनिक और अन्तरर्वर्ती गहराई के अभाव अचल जी में खटकि सकेला जवन कृतिके अनुरंजन का क्षेत्र से उठा के संघर्ष का क्षेत्र में डालि देला। पाण्डेय चन्द्र विनोद का अन्तरंग कलात्मकता, प्राध्यापक अचल का बहिरंग समकालीनता का बाद अब नया पीढ़ी का एगो अइसन कथाकार के चर्चा कइल चाहत बानी जवना में दूनो के संतुलन बा आ ई संतुलन ओह कथाकार का भाषा प्रयोग में उभरल बा। घनश्याम मिश्र के संग्रह 'अमरावती' एही वर्ष के उछाल ह। भाषा का बनावट, कसावट आ अभिव्यक्ति भंगिमा का दृष्टि से एह संग्रह के अधिकांश कहानी अइसन बाड़ी स जवना के पूरा-पूरा सफल कहल जा सकेला। भोजपुरी का सेवा में जुटलि पति-पत्नी का जोड़ी का अलावे पिता-पुत्र के पीढ़ी के चर्चा पहिले हो गइलि बा। अब ओह में एगो नयी कड़ी ई जुड़ि रहलि बा कि कथाकार घनश्याम जी मिश्र कवि आ ललित निबन्धकार डॉ० कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' के सुपुत्र हईं। वयोवृद्ध सर्जक विप्र जी का गद्य में जवन कसाव, निखार आ प्रौढ़ता बा ऊ घनश्याम जी का कथा भाषा में ढलि के संक्रान्त हो गइलि बा। भोजपुरी का मौलिक कथा भाषा का पहिचान खातिर 'अमरावती' के देखे के चाहीं। आश्चर्य के बात ई बा कि एक दर्जन कहानिन में से कवनो कहानी हलुक भा चलता किसिम के नइखे। भोजपुरी के कहानी लेखक बहुतर हिन्दी कहानी का आधुनिक तेवर का नकल में भटकि जालन। भाषा के नकली तेवर अइबो करेला त चित्रित वस्तु में आधुनिकता ना भइला से पूरा के पूरा कहानी अप्रामाणिक नियर लागेले। शैली आ वस्तु दूनों एकही स्रोत से उपटेला आ ऊ स्रोत होला लेखक के अनुभूति। ओह अनुभूति में सहजता ना होई त कहानी के बनावटीपन कइसे तोपाई? प्रसन्नता के बाति बा कि भोजपुरी कहानीकारन के नवकी पीढ़ी काफी जागरूक आ सशक्त बाटे।

सन १९७७ में साधारण कथा शिल्प से हटि के कुछ असाधारण शिल्पो के दमदार उद्घाटन लउकत बा। हिन्दी के प्रसिद्ध हास्य रस के कवि 'विजय बलियाटिक' (डॉ० विजय नारायण सिंह) का हास्य रस का भोजपुरी कहानिन के संग्रह 'जै जजमान' आ शुकदेव सिंह स्नेही का पनरह हास्य कथन के संकलन 'ढिबरी' प्रकाश मे अइलन स। दूनो कथाकार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'पढ़वैयन के खुलि के हँसावे में समर्थ बाड़न आ एह संग्रहन के देखत अब केहू ई आक्षेप ना लगा सकी कि भोजपुरी वाला लोग मनहूस हउएँ आ ऊ लोग हँसे-हँसावे ना जानेला। 'ढ़िबरी' में शुकदेव सिंह जहाँ हास्य रस का पुरान आ प्रसिद्ध आलंबनन के प्रयोग कइले बाड़न उहाँ, विजय बलियाटिक' का कृति में एक ओर पुरनका आलम्बनन के परिष्कार भइल वा आ दूसरी ओर नया-नया युगीन आलम्बनन के आविष्कार भइल वा। एह वजह से एह कृति में आधुनिक मुद्रा के स्पष्ट उभार लउकत बा। दूनों कृतियन में एगो आउर अन्तर बा। 'ढिबरी' अधिकांश रूप में हास्य का सीमा का भीतरे रहति बा। बाकि 'जै जजमान' हास्य का संगे-संगे व्यंग्यो का शिखर के छू लेति बा। विजय बलियाटिक का व्यंग्य में चोट करे वाली भितरिया ताकत बा। स्वयं का प्रकृति से कवि भइला का वजह से उनका हास्य व्यंग्य के धारि जवन शब्दन में से निकलति बा काफी तेज बा। किताबि में लेखक दावा कइले बा कि कृति निश्चित रूप से पढ़े वाला लोगन का मन में गुदगुदी उठाई। बाकी खाली गुदगुदिये काहें? हास्य जब व्यंग्य बनि जाई त ओकर गुदगुदी चोट में बदलि जाई आ साच पूछीं त ईहो ओकर उपयोगिता बा। भोजपुरी भाषा में समाज का जिन्दा आ जीअत-जागत पात्रन का माध्यम से दूनो लेखक जवन अनुरंजनकारी कहानी रचना कइले बाड़न ओह से भोजपुरी कथा साहित्य का विकास में महत्त्वपूर्ण कड़ी जुटि गइलि बा।

विकास क्रम में सन् १९७८ के एह कारण से महत्त्वपूर्ण मानल जाई कि भोजपुरी कहानी—संसार में पहिले-पहिले भोजपुरी का सिद्ध गद्यकार चतुरी चाचा (डॉ० मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध); के कहानी—संग्रह 'भँइसि के दूध' उतरल। एह समय का लगभग ढाई-तीन दशक पहिले से भोजपुरी गद्य के चतुरी चाचा एकनिष्ठ समर्पित भाव से सँवारत आइल रहलन। उनकर मुख्य क्षेत्र कहानी से तनिकी फरका हटि के भोजपुरी गद्य में निवन्ध, ललित निवन्ध, रिपोर्ताज, डायरी, संस्मरण, फीचर रेखाचित्र आ हास्य रचना रहे। एक युगतक 'आज' (वाराणसी) में 'चतुरी चाचा की चटपटी चिट्ठी' शीर्षक स्थायी आ नियमित साप्ताहिक स्तंभ में भरपूर शक्ति से ऊ भोजपुरी गद्य के झंडा फहरावत अइलन। एह कारण से भोजपुरी गद्य का मौलिक निखार उनका भाषा में आ गइल। निबन्धात्मक लीक से हटि के कहानी का शैली में जवन रचना एह स्तंभ में छपली स ओही ढेर ढेर रचनन में से चुनि के ई संग्रह छपल। चूँकि चतुरी चाचा के क्षेत्र निबन्ध रहे एह वजह से उनकरा कहानियनो पर ओकर छाप घूमि फिरि के कई स्थूल-सूक्ष्म रूप में प्रगट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हो जाला। सभसे पहिले ई प्रभाव एह रूप में लउकेला कि चतुरी चाचा शिल्प का वक्रभंगिमा के उपेक्षा करेलन। नतीजा ई होला कि वस्तु आ शिल्प दूनों में सपाट वर्णनात्मकता उभरि आवेले। एह वर्णनात्मकता के रक्षक होले मुहावरेदार जिन्दा भाषा आ हास्य-व्यंग्य के भंगिमा। अपना निबन्धन में लोक जीवन से अधिका जुड़ल रहला का वजह से उनकरा कहानिन में लोक कथा तत्त्व भी बहुतर उभरि आवेला। कवे-कवे उनकर कहानिये लोक-कथा का समानान्तर स्वाद में बूड़लि होली स आ कवे-कवे ऊ प्रतीक रुप में आवेली स। एह तरह से भोजपुरी के पहिला कहानीकार चतुरी चाचा बाड़न जेकरा कहानी में हलका-हलका दोहरा कथानक के प्रयोग मिलेला। निबन्ध नियंत्रित कथाकार मानसिकता के एगो अउरी परिणाम होला जवन प्राय: विपक्ष में जाला। चतुरी चाचा बहुत छटपटाहट का साथे कवनो-कवनो रचना में कुछ संदेश, कुछ विचार आ समस्यन के कुछ हल पेश करे के प्रयत्न करे लन। बाकि ऊ अतना सूक्ष्म आ सांकेतिक होला कि कथारस में कवनो विघ्न ना पड़ेला। बहुत व्यापक अनुभव लेके व्यक्ति, समाज, शासन आ युगीन विसंगतियन के कलम का नोक से उधेड़त चले वाला चतुरी चाचा का कहानियन का बीच से गुजरल एगो अत्यन्त अनुरंजन-कारी अन्तर यात्रा हो जाले। साधारन पाठकन के जहाँ लेखक के कहानी खींचे ले उहाँ भोजपुरी भाषा का रचनाकारन के चतुरी चाचा के शिल्प वैभव आ भाषा प्रयोग आकर्षित करेला। भोजपुरी कथा साहित्य में एगो झंगाड़ बर का फेड़ नियर लेखक ठाढ़ बा जवना का छाँह में ढेर दिन ले चिट्ठी, डायरी, निबन्ध रेखाचित्र, फीचर आ संस्मरण आदि के बेरोहि धइ धइ के झूलत भोजपुरी संसार साहित्य-मंगल मनावत रही।

'मँइसि के दूध' का प्रकाशने वर्ष में जवान भोजपुरिया लेखक ब्रज किशोर दूबे के एगो कहानी संग्रह छपल 'सकदम' नाँव से आ एह संग्रह के चर्चा एगो खास मसलहत से कइल बहुत जरूरी बा। अइसन त ना कहल जा सकेला कि भोजपुरी में मनोवैज्ञानिक कहानी हइये नइखी स बाकी साच बाति ई बा कि केहू अइसन लेखक जेकरा संग्रह के सगरे कहानी मनोवैज्ञानिक भा मनोविश्लेषणात्मक चित्रण से भरलि बाड़ी स, हम के अबहीं ले ना लउकल ह। ई पहिला संग्रह बा जेवना में मनोविज्ञान के भरपूर प्रतिष्ठा मिललि बा। एकरा शीर्षको में मनोवैज्ञानिक छुअन बा। आज के आदमी प्रतिक्षण सकदम का अनुभव से गुजर रहल बा। साँस लिहल दुलम -भइल बा। अइसने वैयक्तिक यथार्थ के ब्रज किशोर दूबे अपना कहानी में उतारत बाड़न। हिन्दी कहानी में मनोविश्लेषण का संगे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुछ विदेशी फार्मूला आ गइलन स आ ओकरा वजह से कहानी मशीनी एकरसता से भरे लागलि। भोजपुरी कहानिन में ओह फार्मूलन के अभाव बा। एह वजह से ई अपना भारतीय जमीन के छुअत अनुकूल प्रभाव डालति बाड़ी स। 'सकदम' का वैयक्तिक यथार्थ में ई एगो जबरदस्त कमी लउकति बा कि कथाकार कहानिन के घिसल पिटल आदर्शवादी मोड़ देवे खातिर कबो-कबो मनोवैज्ञानिक तथ्य का संगे जोर जबरदस्ती करे लागत बा। अइसन मोका पर पात्र लेखक का हाथ के कठपुतली हो जात बाड़न स।

वास्तव में व्यक्ति आ समाज का जीवन का साक्षात्कार का संगे कहानी में आत्म-साक्षात्कार के पवित्र घड़ी तबे आवेले जब व्यक्ति आ समाज का जीवन का प्रवाह के कथा लेखक जबरदस्ती छेड़ि-छेड़ि के रचना में छिगरावे के कोशिश ना करेला आ ओकरा स्वाभाविकता -सहजता के बनल रहे देला। तराश, बनावट आ झूठ वस्तु में ना, सिर्फ कला में, मात्र रूपवादी योजना में क्षम्य होले। एह वजह से चाहे ऊ वैज्ञानिक यथार्थ होखे चाहे ऊ सामाजिक यथार्थ, हर जगह वस्तु में प्रामाणिकता होखल जरूरी होला। एही दृष्टि से अगला साल छपल प्रो० व्रज किशोर के कहानी संग्रह 'धुआँ' ध्यानाकर्षक बा। कहानी लेखक प्रामाणिकता का चक्कर में अतना पड़ल बा कि कहानी का शिल्प में सिधाई आ सरलता बढ़ि गइलि बा। सामाजिक यथार्थ का दस्तावेज नियर एह संग्रह के कुल्हि कहानी बीसवीं शताब्दी का आदमी का संकट के आपन मुख्य विषय बनावति बाड़ी स। लेखक सोच में परल बा कि 'गरीबी, घुटन आ तनाव से आदमी के मन धुआँ रहल बा।' एह बाहर भीतर का दमघोंट आ धुआँठल जिनिगी के चोट व्रज किशोर जी का कहानी-कला के चुनौती बनि गइलि बा। लेखक बिना जनवादी भइले रचना में जनवाद के उतारि रहल बा। अर्थात् ओकरा में न त कतहीं प्रतिबद्धता बा आ न पूर्वग्रह बा। अइसन लागत बा कि ई दूनों चीज राजनीति का पेट से पैदा होली स। आजकल राजनीति का चश्मा से गरीबी आ बेहाली-विसंगति के देखे के फैशन हो गइल बा। का बढ़िया होइत कि लोग खुललि आँखि से ओकरा के देखित ! व्रजकिशोर जी अपना मुक्त आ जटिलता रहित दृष्टि से देश का भद्गी के देखि के सरल ढंग से जवन अपना कहानी में उतरले बाड़न ऊ बहुत दूर तक आ बहुत देर तक प्रभावित करत बा। देश का विफल लोकतंत्र का सगरे राजनीतिक मुहावरन के अराजनीतिक मुद्रा में उधिया दीहल कठिन काम बा, बाकी अपना कहानिन में व्रज किशोर जी एही पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाथ लगवले बाड़न। तनिक शिल्प में अउर बाँकपन आ जाइत त कहानिन के चेहरा चोख हो जाइत।

अब आ जाईं सन् १९८० का विन्दु पर। हम सिर्फ एगो कहानी संग्रह के शिल्प-चर्चा करबि। सन् १९८० के माने भइल भोजपुरी कहानी के उमिरि तीस बरिस, पूरा-पूरा प्रौढ़! भोजपुरी कहानी अपना पूरा प्रौढ़ता पर चोंहपि के भारतीय कथा-साहित्य का क्षितिज के छू रहलि वा। ओह में आधुनिकता के चेहरा उभरि आइल बा। पत्र-पत्रिकन में छपे वाली कहानिन का बीच से गुजरत प्रतिक्षण भोजपुरी कहानी लिखवइयन का जागरूकता के अहसास होत रहेला। अइसना धारदार समय का प्रवाह में केहू लेखक पाछा लौटि के अतीत के दोहरावे लागी त ओकर निन्दा होई। बाकि साहित्य में एगो स्थिति ऊहो होले कि अतीत जीविता प्रशंसनीय हो जाले। साहित्य का बारे में कहल जाला कि ओकर कवनो धारा मरेले ना। ऊ परपंरा का रूप में चलत रहेले।। भोजपुरी कहानी क्षेत्र में अइसने एगो स्थिति ध्यान आकर्षित करति बा। कथाकार अक्षयवर दीक्षित के एगो संग्रह 'सतहवा' सन् १९८० में प्रकाशित भइल। एह संग्रह का सातो कहानिन पर गाँधीवाद छपले वा। स्पष्ट बा कि दीक्षित जी कहानी क्षेत्र में प्रेमचन्द के आपन आदर्श मानि के कलम उठवले बाड़न आ परंपरागत पारिवारिक समरसता का आदर्श के भरपूर निष्ठा का संगे उतारि रहल बाड़न। सामाजिक आ पारिवारिक जीवन मूल्यन का सम्बन्ध में उनकर आस्थावादी आग्रह बा। एह तरह से आधुनिकता का लहरात साहित्य-सागर में 'सतहवा' एगो गाँधीवादी द्वीप नियर उतरात लउकत बा!

भोजपुरी कथा-साहित्य का विकास (उपन्यास आ कहानी) क एह विवेचन से अब एकरा प्रवृत्तियन के एगो साफ रूप रेखा बनि सकेले। हमार मनसा इहे रहलि ह। हम भोजपुरी कथा-साहित्य के इतिहास नइखीं सामने रखले। इतिहास बड़ वस्तु होले। ओह में चप्पा छानल जाला। अतना छोट भाषण में उ कुल्हि कइसे सरित? ई काम कहानिन का संदर्भ में कृष्णानन्द जी सफलता का साथे कइले बाड़न। हम त बस प्रवृत्तियन का खोज में कुछ गिनल चुनल रचनन के सहारा लेत इहाँ तक चोंहपल बानी। एह विकास का मंजिल का खोज में बहुत गलती हो सकेली स। बाकि भोजपुरी साहित्य के प्रेमी व रचनाकार दूनों तरह का लोगन का सुधार-वादी रुख के देखत ढीठ बनि के गलती के फिकिर नइखीं करत। आप सभलोग त सुधारिये लेइबि। 'जेहल क सनदि' में यथार्थ के अतना पोखता जनवादी नींव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिआइलि बाकी बाद में ओके सुधारि लीहल गइल कि आदर्शवाद के एतना जल्दी धकिया दीहल ठीक नइखे। संगे-संगे ओहू के ले-ले चलला के काम बा बाप-दादा के बनावल डहरि छूटही के बा त तनी धीरे-धीरे छूटो। एक-ब-एक ढेर तना गइला पर जल्दी टूटि जाये के परी। टूटही के बा त तनी धीरे-धीरे टूटो। भोजपुरी स्वभाव कतहीं कवनों अति पर ना रहे। ओकर ई स्वभाव साहित्य बनि के केतना मीठ हो जाला। ई मिठास बहुत गृहासक्ति के रूप धारन कइ ले ले। एकर फल का होला ? आपलोग देखत बानी कि पंजरे हिन्दी कथा-साहित्य में जहाँ नगर बोध के दुंदुभी बाजि रहलि बा उहाँ भोजपुरी कथा-साहित्य कुल्हि मिला के अबहीं गाँव छोड़ि के टकसत नइखे। का टकसो ? नगर बोध में कुंठा, संत्रास आ तनाव-वगैरह का कड़ुवाहट वा, बहुत कड़ुवाहट। मीठ भाषा भोजपुरी के घरे के मिठास शायद बिसरति नइखे। घरघुसरो भइलि बा। हिम्मती भोजपुरिया लोग त ओने मारिशस, फीजी, गायना, सूरीनाम आदि विदेश में झंडा गाड़ि दीहल। रंगून, बैंकाक, सिंगापुर आदि में आपन पहिचान सुरक्षित राखल बाकि भोजपुरी कथाकार लोग अबहीं सीवान, छपरा, भोजपुर आ बलिया—बनारस का ग्रामांचल से बहरा ना भइलन। महानगर त लम्मा बा, नगरो के कथाभूमि बनावे में अबहीं कथाकार लोग हिचकत बा। बस सिर्फ एगो भोजपुरी कथा-साहित्य के सिकुड़ल रहे वाला ई प्रवृत्ति बा, जवन अति पर वा आ निन्दनीय बा। एही का जरि से सिधाई-सरलता आ सपाटपन के शिलपवृत्ति वा। अब समय आ गइल बा कि भोजपुरी कथा-साहित्य अपना पृष्ठभूमि के विस्तार करो, फइलाओ आ पूरा अखिल भारतीय परिवेश के अपना भीतर समेटि लेउ।

परिवेश आ स्थिति का इकाइयन के बरनने साहित्य ना होला। भोजपुरी कहानी का प्रभावशाली साहित्य बने खातिर सम्पूर्ण स्थिति के पचावे के परी। सम्पूर्ण स्थिति में गाँव, अंचल आ नगर-महानगर कुल्हिये आ जाई। घर, परिवार आ गाँव के जिअल जिनिगी दोहरावत एह भाषा का कथा साहित्य के एगो लाभ भइल बा। एकरा में चालू आ विदेशी फार्मूला नइखन स आइल। एकर परिणाम ई भइल बा कि एकरा में अजनबीपन आ व्यर्थता बोध नियर कामू-सार्त्र के अस्तित्ववाद नइखे ढुकल आ न मजिगर आधुनिकता बोध के हँड़होर भइल बा। इहाँ अबही आदमी भीड़ में अकेला नइखे भइल। अबहीं आदमी-आदमी के चीन्हत बा आ परवाह करत बा। जमाना का हवा के घेरा तूरि के केनियो से ना केनियो से आदर्श वाद चोंहपि जात बा। ई कबो-कबो भाग्यवाद के सकल ले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेत बा। नइखे कवनो वश चलत त पछतात बा, कपार धुनत बा आ पीड़ित लेत हो बा। पीड़ा शायद भोजपुरी कथा का सउरी में डालि दीहलि गइलि का? पूरा भोजपुरी साहित्य जइसे पीड़ा से अँइठि रहल बा। गरीब के पीड़ा, सामाजिक परम्परा के पीड़ा, शोषण के पीड़ा, लोगन का चिरकुटाही के पीड़ा आ भ्रष्टाचार के पीड़ा। बाकि ई कुल्हि पीड़ा के जइसे सहि लीहल जाये, अँगेज लीहल जाये के लच्छनि लउकति बाड़ी स। पीड़ा का कोखी से जनमल विद्रोह अबहीं, सुतले बा। एक ओर सुराज भइल आ दूसरा पीरि ओकरिये ओठि पर भोजपुरी कथा-साहित्य में जहल क सनदि लिहले विद्रोह जनमला काफी दिन हो गइल। अब तनी उठि के देहिं झारो। हिन्दी कहानी में ई सामाजिक आ राजनैतिक विद्रोह व्यक्तिवादी विद्रोह का ओर मुड़ि गइल आ देहवादी फूहड़ विद्रोह का रूप में लंगटे सड़कि पर आ गइल। देश दुनिया का भूगोल के पीड़ा ऊ नारी शरीर का भूगोल में ढकढोरे लागल। अइसन विद्रोह अच्छा बा भोजपुरी में ना आइल। नयी कहानिन में त कतहीं-कतहीं ओकर चिनगारी फूटत लउकत बाड़ी स बाकि उपन्यास में मर्यादा आ आदर्श के लछुमन रेखा लंघाति नइखे लउकति। असल में जनात बा कि सहमि-सहमि के काल बढ़ि रहल बा। चालि में गर्मी नइखे। गर्मी होखबो करो त कहाँ से? भोजपुरी कथा-साहित्य राजनीति से अबहीं अपना के कुछ फरके रखले बा। जवन कुछ राजनीति आवति बा ऊ छिटपुट घरेलू प्रभावन से टकरा के छितिरा जात बा। खेतिहर मानसिकता के मध्यमवर्गीय मानसिकता जवले दबा न देई तबले भोजपुरी में क्रांतिकारी चेतना के पूरा-पूरा विकास ना होई। सीधा, सरल, सपाट, भोला-भाला, बेगाँठि के आ बिना दावपेच के भइल कवनो चीज के गुन हो सकेला बाकि साहित्य में एह गुन के अधिकाई ओके आकर्षण हीन कइ देले। साहित्यक आस्वाद के घीव बिना कला का टेढ़ अँगुरी के कइसे निकली? कुल्हि मिला के कहलन तुलसी न कि 'कतहुँ सुधाइहु ते बड़ दोषू'? तवन ऊहे हालि भोजपुरी कथा साहित्य के बा। ओकरा मूल—भूते प्रवृत्तियन में तनि अउर जटिलता आ तनी अउर संश्लिष्टता उभरो आ तनी अउर कलात्मक भंगिमा के निखार आओ कि ऊ तनि मजिगर दमदार हो जाउ।

भोपुरी कथा-साहित्य का प्रवृत्तियन के अबहीं जवन आलोचना भइलि ह ओहमें एगो निराशावादी जइसन तसवीर उभरति बा। आलोचना बहुत खरी हो गइलि बा आ स्वर निन्दा के हो गइल बा। शायद ई जरूरी रहल ह। नीति कहति बा, 'निन्दक नियरे राखिये।' त हमारा ले बढ़ि के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी का नियरा के निन्दक अउर दूसर के होई ? हिन्दी में साहित्य रचना कइल हमार मजबूरी बा त भोजपुरी में लिखल हमरा कर्त्तव्य नियर लागेला। अपना हिन्दी निबन्धन में हमके खुद पूरा-पूरा सन्तोष ओही जगह होला जहाँ जमि कि भोजपुरी शब्द उछालीं ला। कबो-कबो त ई विश्वास होला कि प्रयत्न अकारथ होई बाकि हिन्दी जगत का शब्दानुशासन का जाल के जब ऊ भेदि देला त भोजपुरी भाषा का गोल पर हमहूँ थपरी बजाईं ला। ई प्रेम का विज्ञापन करे लायक बा ! फेरू हमहीं काहें ? हिन्दी के ढेर ढेर साहित्यकार लोग बा जे भोजपुरी कथा-साहित्य का सेवा में जुटल बा। ई भोजपुरी के शक्ति बा कि ओह लोगन के खींचि लेले। भविष्य में ई शक्ति बढ़ते जाये के लच्छनि बा। भोजपुरी कथा-साहित्य का विस्तृत विवेचन में स्पष्ट रूप से ई तथ्य सामने आइल ह कि पुरुष कथाकारन का संगे महिला कथाकार लोगन क महत्त्वपूर्ण कतारि उभरलि बा। कई माने में महिला कथाकारन के रचना बहुत मार्मिक आ ध्यानाकर्षक बाड़ी सा। धीरे-धीरे एह भाषा के सर्जनात्मक कथा भाषा रूप निखरि रहल बा। ई निखरल भाषा कहानिन में अधिका लउकति बा। जब व्यापक रूप से उपन्यासन में एकर प्रयोग शुरू होई त एगो प्रभावशाली वातावरण बनी आ विकास के एगो चरण पूरा होई। अबहीं कहानिन का मुकाबला में उपन्यास—साहित्य में कमी बा। अइसन नइखे कि भोजपुरी उपन्यासन के माँग नइखे। माँग बहुत बा, मार्केट नइखे। भोजपुरी फिल्म बनावे लोग बम्बई जइसन नगरी में भोजपुरी का अच्छा उपन्यासन खातिर छिछियात बाड़न। उनकरा के पता तक नइखे चलि पावत कि भोजपुरी में का कुछ बाटे ? एह मौका पर प्रचार का साधनन के कमी खटकति बा। भोजपुरी के एगो अच्छी भली पहिलौंठी कहानी-पत्रिका रहे 'भोजपुरी कहानियाँ' त ऊ मरि गइलि। कथा-साहित्य खातिर जवन कुछ बाकी तनिक 'अँजोर' रहल ऊहो अन्हार हो गइल त अब कथा-साहित्य का पहिलको विकास चरण के पूरा करे खातिर तनिक जोर लगावे के परी आ तनिक ना भरपूर जोर लगावे के परी बाधा-बिघ्न का दुष्ट बरसात के रोके खातिर गोबर्धन उठावे के परी। एकरी खातिर ब्रजभाषा नियर भोजपुरी-भाषा का समवेत शक्ति का रूप में कवनो कृष्ण के जगावे के परी। एह भोजपुरी भाषा-साहित्य आ विशेष करि के कथा-साहित्य का पुनर्जागरण आ गोबर्धन धारण पर्व पर अकादमीका ओर से हमार ई भाषण के एगो छोट-मोट ठेंगुरी लागलि बा। बस अधिका का कहीं ? जय भोजपुरी !

विवेकी राय ८- -८२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon